श्री तीर्थ माला संग्रह

卐

संपादक
पं. कल्याणविजय गणि

प्रकाशक :
श्री पार्श्ववाड़ी
पोस्ट आहोर (राज.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री तीर्थ माला संग्रह

संपादक

पं. कल्याणविजय गणि

श्री आहोर नगरीय श्री चतुर्थ स्तुतिक संप्रदाय की आर्थिक
सहायता से छपवाकर प्रसिद्ध किया

प्रथमावृति	वीर संवत्	विक्रम संवत्	इसवी सन्
१०००	२४९९	२०३०	१९७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक
श्री पार्श्ववाड़ी
पोस्ट आहोर
(राजस्थान)

प्रथम संस्करण : १९७३

मूल्य सदुपयोग

मुद्रक
प्रतापसिंह लूणिया
जोब प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्मपुरी
अजमेर–९–७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्ताविक दो शब्द

इस पुस्तक में ग्रहण किये हुए प्राचीन तीर्थमालाएें और चैत्य परिपाटियां अपने हाथ से शिलाओं ऊपर से लिखी हैं। अगर कोई शिला खोदने में भूल हुई होगी तो भी लिखने के समय उस भूल को भी ठीक कर दिया गया है। खास विचारणीय बात इतनी है कि इन तीर्थमालाओं के मुद्रण होने के समय में इनके प्रूफ हम नहीं देख सके इसके कारण से गलती रह गई हो तो पाठकगण पढ़ते समय भूल को सुधार कर पढ़ें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयानुक्रम

		पृ०
१.	प्राचीन जैन तीर्थ-उपक्रम	१
२.	श्री शत्रुंजय तीर्थ मार्ग चैत्य परिपाटी	३४
३.	जालोर नगर चैत्य परिपाटी	३७
४.	पाटण चैत्य परिपाटी	४१
५.	श्री राजनगर तीर्थमाला	४६
६.	तीर्थाधिराजे श्री शत्रुंजय गिरी तीर्थमाला	५७
७.	श्री शत्रुंजय तीर्थ चैत्य परिपाटी	६३
८.	श्री तपगच्छ एवं खरतरगच्छक शत्रुंजय	७८
९.	श्री गिरनार तीर्थमाला	८१
१०.	श्री नाडोल पंचतीर्थी की तीर्थमाला	८६
११.	श्री समेत शिखर चैत्य परिपाटी	९९
१२.	श्री समेत शिखर तीर्थमाला	१०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

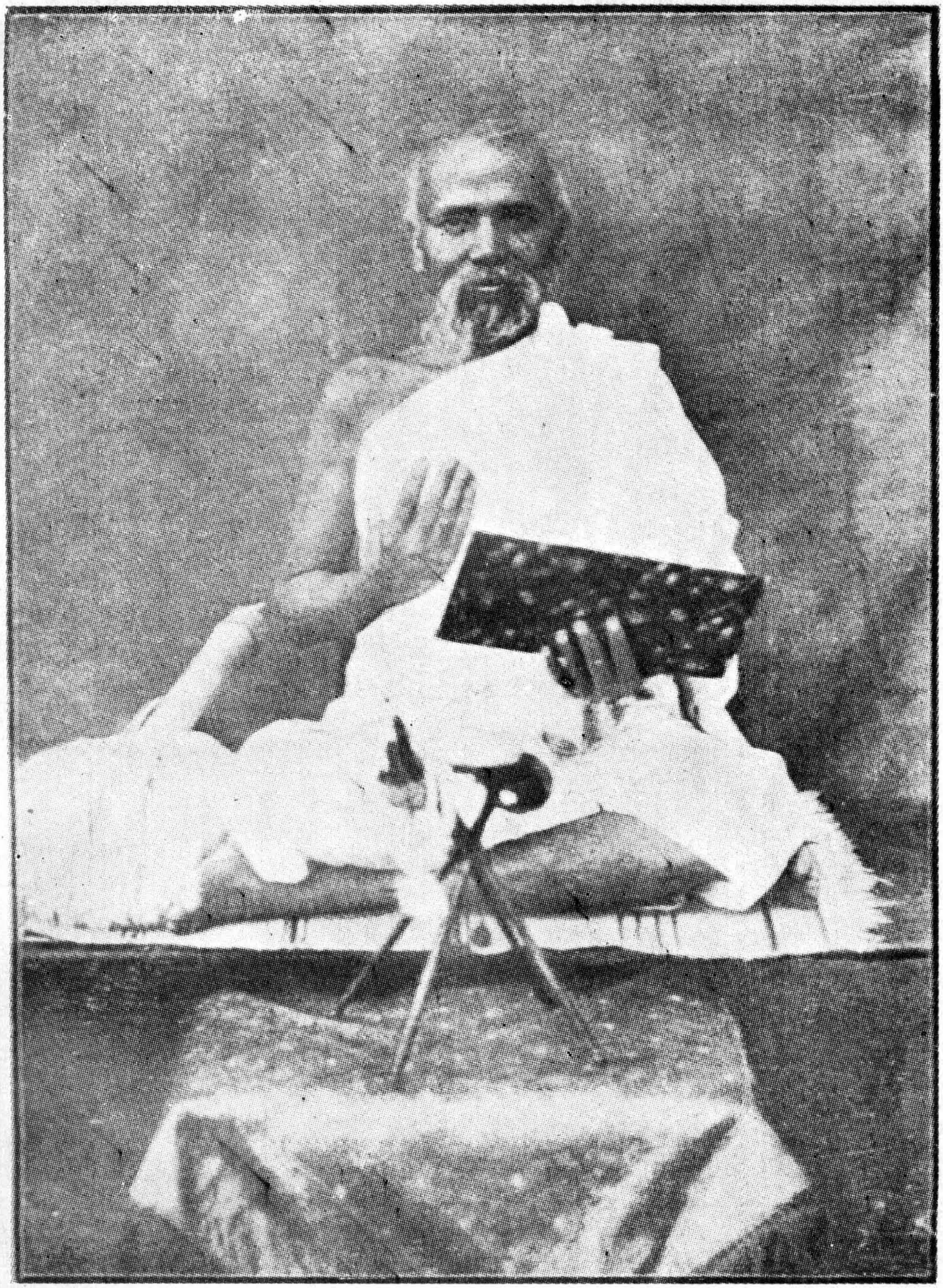

प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता पं० श्री कल्याणविजय जी महाराज ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्रीः ॥

प्राचीन जैन तीर्थ

लेखक—पं. कल्याणविजय गणि

उपक्रम—

पूर्व काल में 'तीर्थ' शब्द मौलिक रूप से जैन प्रवचन अथवा चातुर्वर्ण्य संघ के अर्थ में प्रयुक्त होता था, ऐसा जैन आगमों से ज्ञात होता है। जैन प्रवचन-कारक और जैन-संघ के स्थापक होने से ही जिन-देव तीर्थंकर कहलाते हैं।

तीर्थ का शब्दार्थ यहां नदी समुद्र में उतरने अथवा उनसे बाहर निकलने का सुरक्षित मार्ग होता है आज की भाषा में इसे घाट और बन्दर कह सकते हैं।

संसार समुद्र को पार कराने वाले जिनागम को और "जैन-श्रमण-संघ" को भाव तीर्थ बताया गया है और इसकी व्युत्पत्ति 'तीर्यते संसार सागरो येन तत्-तीर्थम्" इस प्रकार की गई है तब नदी समुद्रों को पार कराने वाले तीर्थों को द्रव्य तीर्थ माना है।

उपर्युक्त तीर्थों के अतिरिक्त जैन-आगमों में कुछ और भी तीर्थ माने गए हैं जिन्हें पिछले ग्रन्थकारों ने स्थावर-तीर्थों के नाम से निर्दिष्ट किया है, और वे दर्शन की शुद्धि करने वाले माने गये हैं। इन स्थावर तीर्थों का निर्देश आचाराङ्ग आवश्यक आदि सूत्रों की निर्युक्तियां में मिलता है, जो मौर्य राज्य कालीन ग्रन्थ हैं।

(क) जैन स्थावर तीर्थों में अष्टापद—(१) उज्जयन्त (२) गजाग्रपद (३) धर्मचक्र (४) अहिच्छत्रा पार्श्वनाथ (५) रथा-वर्त-पर्वत (६) चमरोत्पात (७) शत्रुञ्जय (८) सम्मेत शिखर (९) और मथुरा का देव-निर्मित-स्तूप (१०) इत्यादि तीर्थोंका संक्षिप्त अथवा विस्तृत वर्णन जैन-सूत्रों तथा सूत्रों की निर्युक्तियों भाष्यों में मिलता है।

(ख) हस्तिनापुर (१) शौरीपुर (२) मथुरा (३) अयोध्या (४) काम्पिलपुर (५) बनारस (काशी) (६) श्रावस्ति (७) क्षत्रिय-कुण्ड (८) मिथिला (९) राजगृह (१०) अपापा (पावापुरी)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(११) भद्दिलपुर (१२) चम्पापुरी (१३) कौशाम्बी (१४) रत्नपुर (१५) चन्द्रपुरी (१६) आदि तीर्थंकरों की जन्म, दीक्षा, ज्ञान, निर्वाण, की भूमियों होने के कारण ये स्थान भी जैनों के प्राचीन तीर्थ थे, परन्तु वर्तमान समय में इनमें से अधिकांश विलुप्त हो चुके हैं, कुछ कल्याणक भूमियों में आज भी छोटे-बड़े जिन मंदिर बने हुए हैं, और यात्रिक लोक दर्शनार्थ जाते भी हैं। परन्तु इसका पुरातन महत्व आज नहीं रहा इन तीर्थों को हम "कल्याणक भूमि" कहते हैं।

(ग) उक्त तीर्थों के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी स्थान जैन-तीर्थों के रूप में प्रसिद्धी पाये थे जो कुछ तो आज नाम शेष हो चुके हैं और कुछ विद्यमान भी हैं इनकी संक्षिप्त नाम सूची यह है—

प्रभास-पाटन-चन्द्रप्रभ (१) स्तम्भ तीर्थ-स्तम्भनक पार्श्वनाथ (२) भृगु कच्छ अश्वाव बोध शकुनिका-विहार मुनिसुव्रत(३) सूपारक (नाला सोपारा) (४) शंखपुर-शंखेश्वर पार्श्वनाथ (५) चारूप पार्श्वनाथ (६) तारङ्गाहिल-अजितनाथ (७) अर्बुद गिरि (आबू माउन्ट) (८) सत्यपुरीय महावीर (९) स्वर्णगिरि महावीर (१०) करहेटक-पार्श्वनाथ (११) विदिशा (भिलसा) (१२) नासिक्य-चन्द्रप्रभ (१३) अन्तरिक्ष-पार्श्वनाथ (१४) कुल्पाक आदिनाथ (१५) खन्डगिरि (भुवनेश्वर) (१६) श्रमण बेलगोल (१७) इत्यादि अनेक जैन प्राचीन तीर्थ प्रसिद्ध हैं इनमें जो विद्यमान है उनमें कुछ तो मौलिक हैं तब कतिपय प्राचीन तीर्थों के स्थानापन्न नव निर्मित जिन चैत्यों के रूप में अवस्थित हैं। तीसरी श्रेणी के जैन तीर्थों को हम पौराणिक तीर्थ कहते हैं, इनका प्राचीन जैन साहित्य में वर्णन न होने पर भी कल्पों जैन चरित्र ग्रन्थों तथा प्राचीन स्तुति स्तोत्रों में इनकी महिमा गाई गई है।

उक्त तीन वर्गों में से इस लेख में हम प्रथम वर्ग के सूत्रोक्त तीर्थों का ही संक्षेप में निरूपण करेंगे।

सूत्रोक्त तीर्थ—

आचाराङ्ग निर्युक्ति की निम्न लिखित गाथाओं में प्राचीन जैन तीर्थों का नाम निर्देश मिलता है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"दंसरण नाण चरित्ते तव वेरग्गेय होइउ पसत्था ।
जाय तहा ताय तहा लक्खणं वुच्छं सलक्खण ओ ॥३२९॥
तित्थगराण भगव ओ पवयण पावयणि अइसइड्ढीणं ।
अभिगमण नमण दरिसण कित्तण संपूअणा थुणणा ॥३३०॥
जम्मा भिसेय निक्खमण चरण नाणु प्पयाय निव्वाणे ।
दिय लोअ भवण मंदर नंदीसर भोम नगरे सुं ॥३३१॥
अठ्ठावय मुज्जिते गयग्ग पयए य धम्म चक्के यं ।
पास रहा बत्तनगं चमरुप्पायंच वंदामि ॥३३२॥"

अर्थात्—दर्शन, सम्यक्त्व ज्ञान, चारित्र, तप, वैराग्य, विनय विषयक भावनाएं जिन कारणों से शुद्ध बनती हैं, उनको स्वलक्षणों के साथ कहूँगा ॥३२९॥

तीर्थंकर भगवन्तों के उनके प्रवचन के प्रवचन-प्रचारक, प्रभावक आचार्यों के केवल मनपर्यव अवधि-ज्ञान वैक्रयादि अतिशायी लब्धिधारी, मुनिओं के सन्मुख जाने, नमस्कार करने, उनका दर्शन करने, उनके गुणों का कीर्तन करने उनकी अन्न वस्त्रादि से पूजा करने से दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप, वैराग्य, सम्बन्धी गुणों की शुद्धि होती है ॥३३०॥

जन्म कल्याण स्थान जन्माभिषेक स्थान दीक्षा स्थान श्रमणावस्था की विहार भूमि केवल ज्ञानोत्पत्ति का स्थान और निर्वाण कल्याणक भूमिको तथा देव लोग असुरादि के भवन मेरू पर्वत नन्दीश्वर के चैत्यों और व्यन्तर देवों के भूमिस्थ नगरों में रही हुई जिन प्रतिमाओं को तथा अष्टापद (१) उज्जयन्त (२) गजाग्रपद (३) धर्मचक्र (४) अहिच्छत्रास्थित-पार्श्वनाथ (५) रथावर्तपदतीर्थ (६) चमरोत्पात (७) इन नामों से प्रसिद्ध जैन तीर्थों में स्थित जिन प्रतिमाओं को मैं वन्दन करता हूँ। (३३१।३३२।)

निर्युक्तिकार भगवान भद्रबाहु स्वामी ने तीर्थङ्कर भगवन्तों के जन्म, दीक्षा, विहार ज्ञानोत्पत्ति निर्वाण आदि के स्थानों को तीर्थ स्वरूप मानकर वहां रहे हुए जिन चैत्यों को वन्दन किया है, यही नहीं परन्तु राज प्रश्नीय जीवाभिगम, स्थानांग, भगवती आदि सूत्रों में वर्णित देव लोक स्थित असुर भवन स्थित मेरू पर्वत स्थित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नन्दीश्वर द्वीप स्थित और व्यंतरदेवों के भूमिगर्भ स्थित नगरों में रहे हुए चैत्यों की शाश्वत जिन प्रतिमाओं को भी वन्दन किया है।

निर्युक्ति की गाथा तीन सो बत्तीसवीं में निर्युक्तिकार ने तत्कालीन भारतवर्ष में प्रसिद्धि पाये हुए सात अशाश्वत जैन तीर्थों को वंदन किया है, जिनमें एक छोड़कर शेष सभी प्राचीन तीर्थ विच्छिन्न हो चुके हैं। फिर भी शास्त्रों तथा भ्रमण वृतान्तों से इनका जो वर्णन मिलता है उनके आधार पर इनका यहाँ संक्षेप में निरूपण किया जायगा।

(१) अष्टापद—

अष्टापद पर्वत ऋषभ देव कालीन अयोध्या से उत्तर की दिशा में अवस्थित था, भगवान ऋषभदेव जब कभी अयोध्या की तरफ पधारते तब "अष्टापद" पर्वत पर ठहरते थे और अयोध्यावासी राजा प्रजा उनकी धर्मसभा में दर्शन, वन्दनार्थ तथा धर्म श्रवणार्थ जाते थे परन्तु वर्तमान कालीन अयोध्या के उत्तर दिशा भाग में ऐसा कोई पर्वत दृष्टिगोचर नहीं होता जिसे अष्टापद माना जा सके। इसके कारण अनेक ज्ञात होते हैं, पहला तो यह है कि उत्तर दिग् विभाग में भारत के रही हुई पर्वत श्रेणियां उस समय में इतनी ठंडी और हिमाच्छादित नहीं थी, जितनी आज हैं। दूसरा कारण यह है कि अष्टापद पर्वत के शिखर पर भगवान् ऋषभ देव उनके गणधर तथा अन्य शिष्यों का निर्वाण होने के बाद देवताओं ने तीन स्तूप और भरत चक्रवर्ती ने "सिंह निषद्या" नामक जिन चैत्य बनवाकर उसमें चौबीस तीर्थङ्करों की वर्ण मानोपेत प्रतिमाएं प्रतिष्ठित करवाके चैत्य के द्वारों पर लोहमय यान्त्रिक द्वारपाल स्थापित किये थे। इतना ही नहीं परन्तु पर्वत को चारों ओर से छिलवा कर सामान्य भूमि गोचर मनुष्यों के लिए शिखर पर पहुँचना अशक्य बनवा दिया था। उसकी ऊँचाई के आठ भाग कर क्रमशः आठ मेखलाएँ बनवाई थी, इसी कारण से इस पर्वत का 'अष्टापद' यह नाम प्रचलित हुआ था, भगवान् ऋषभदेव के इस निर्वाण-स्थान के दुर्गम बन जाने के बाद देव, विद्याधर, विद्या-चारण, लब्धिधारी मुनि और जंघा चारण मुनियों के सिवाय अन्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोई भी दर्शनार्थी अष्टापद पर नहीं जा सकता था। और इसी कारण से भगवान महावीर स्वामी ने अपनी धर्म सभा में यह सूचित किया था कि जो मनुष्य अपनी आत्मशक्ति से अष्टापद पर्वत पर पहुँचता है वह इसी भवमें संसार से मुक्त होता है।

अष्टापद के अप्राप्य होने का तीसरा कारण यह भी है, कि सगर चक्रवर्ती के पुत्रों ने अष्टापद पर्वत स्थित जिन चैत्य स्तूप आदि को अपने पूर्वज वंश्य भरत चक्रवर्ती के स्मारक के चारों तरफ गहरी खाई खुदवा कर उसे गंगा के जल प्रवाह से भरवा दिया था, ऐसा प्राचीन जैन कथा साहित्य में किया गया वर्णन आज भी उपलब्ध होता है।

उपर्युक्त अनेक कारणों से हमारा अष्टापद तीर्थ कि जिसका निर्देश श्रुत केवली भगवान् भद्रबाहु स्वामी ने अपनी आचाराङ्ग निर्युक्ति में सर्व प्रथम किया है, हमारे लिये आज अदर्शनीय और अलभ्य बन चुका है।

आचाराङ्ग निर्युक्ति के अतिरिक्त आवश्यक निर्युक्ति की निम्नलिखित गाथाओं से भी 'अष्टापद तीर्थ' का विशेष परिचय मिलता है—

अह भगवं भव महणो पुव्वाण मणूणगं सय सहस्सं।
अणु पुव्वि विहरिऊणं पत्तो अठ्ठा वयं सेलम् ॥४३३॥
अठ्ठा वयंमि सेले चउदस भत्तेण सो महरि सीणं।
दसहि सहस्से हि समं निव्वाण मणुत्तरं पत्तो ॥४३४॥
निव्वाणं १ चिइ गागिई जिणस्स इक्खाग सेसयाणं च २।
सकहा ३ घूभ जिणहरे ४ जायग ५ तेणाहि अग्गिति ॥४३५॥

सब संसार दुःख का अन्त करने वाले भगवान् ऋषभदेव सम्पूर्ण एक लाख पूर्व वर्षों तक पृथ्वी पर विहार करके अनुक्रम से 'अष्टापद' पर पहुँचे और छः उपवास के तप के अन्त में दस हजार मुनिगणों के साथ सर्वोच्च निर्वाण को प्राप्त हुए।४३३।४३४।

भगवान् और उनके शिष्यों के निर्वाणानन्तर चतुर्निकायों के देवों ने आकर उनके शवों के अग्नि संस्कारार्थ तीन चिताऐं बनवाई पूर्व में गोलाकार चिता तीर्थंकर शरीर के दाहार्थ, दक्षिण में त्रिकोणाकार चिता इक्ष्वाकु वंश्य के गणधरों के तथा महा-मुनिओं के शव दाहार्थ बनवाई और पश्चिम दिशा की तरफ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौकोण चिता-शेष श्रमण गण के शरीर संस्कारार्थं बनवाई। और तीर्थंकर आदि के शरीर यथा स्थान चिताओं पर रखवा कर अग्नि कुमार देवों ने उन्हें अग्नि द्वारा सुलगाया, वायु कुमार देवों ने वायु द्वारा अग्नि को जोश दिया और चर्म मांस के जल जाने पर, मेघ कुमारों ने जल वृष्टि द्वारा चिताओं को ठण्डा किया। तब भगवान् के उपरि बायें जबड़े की शक्रेन्द्र ने, दाहिनी तरफ की ईशानेन्द्र ने तथा निचले जबड़े की बांई तरफ की चमरेन्द्र ने और दाहिनी तरफ की दाढायें बलीन्द्र ने ग्रहण की। इन्द्रों के अतिरिक्त शेष देवों ने भगवान् के शरोर की अन्य अस्थिएं ग्रहण करलीं, तब वहां उपस्थित राजादि मनुष्य गणने तीर्थंकर तथा मुनियों के शरीर दहन स्थानों की भस्मी को भी पवित्र जान कर ग्रहण कर लिया। चिताओं के स्थान पर देवों ने तीन स्तूप बनवाये और भरत चक्रवर्ती ने चौबीस तीर्थङ्करों की वर्ण मानोपेत सपरिकर मूर्ति स्थापित करने योग्य जिन गृह बनवाये उस समय जिन मनुष्यों को चिताओं से अस्थि, भस्मादि नहीं मिला था उन्होंने उसकी प्राप्ति के लिए देवों से बड़ी नम्रता के साथ याचना की जिससे इस अवसर्पिणी काल में याचक शब्द प्रचलित हुआ। चिता कुण्डों में अग्नि चयन करने के कारण तीन कुण्डों में अग्नि स्थापन करने का प्रचार चला, और वैसा करने वाले 'आहिताग्नि' कहलाये।

उपर्युक्त सूत्रोक्त वर्णन के अतिरिक्त भी अष्टापद तीर्थ से सम्बन्ध रखने वाले अनेक वृत्तान्त सूत्रों चरित्रों तथा (पौराणिक प्रकीर्णक) जैन ग्रन्थों में मिलते हैं, परन्तु उन सबके वर्णनों द्वारा विषय को बढ़ाना नहीं चाहते।

(२) उज्जयन्त

उज्जयन्त यह गिरनार पर्वतका प्राचीन नाम है, इसका दूसरा प्राचीन नाम रैवतक पर्वत भी कहते हैं "गिरनार" यह इसका तीसरा पौराणिक नाम है जो कल्पों, कथाओं आदि में मिलता है।

उज्जयन्त तीर्थ का नाम निर्देश आचाराङ्ग निर्युक्ति में किया गया है, जो ऊपर बता आये हैं, इसके अतिरिक्त कल्पसूत्र (दशाश्रुत स्कन्ध अष्टमाध्ययन) आवश्यक सूत्र आदि में भी इसके उल्लेख मिलते हैं। कल्पसूत्र में इस पर भगवान 'नेमिनाथ' के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीक्षा, केवलज्ञान तथा निर्वाण नामक तीन कल्याणक होने का प्रतिपादन किया गया है, आवश्यक सूत्रान्तर्गत सिद्धस्तव की निम्नोद्धृत गाथा में भी भगवान् नेमिनाथ के दीक्षा, ज्ञान और निर्वाण कल्याणक होने का सूचन मिलता है, जैसे—

उज्जिंत सेल सिहरे दिक्खा नाणं निसीहि आ जस्स ।
तंधम्म चक्क वहिं अरिट्ठ नेंमिं नमंसामि ।।४।।

अर्थात्—उज्जयंत पर्वत के शिखर पर जिसको दीक्षा, केवल ज्ञान और निर्वाण हुआ उस धर्म चक्रवर्ती भगवान् नेमिनाथ को मैं नमस्कार करता हूं ।[1]

---

१. सिद्धस्तव की यह तथा इसके बाद की "चत्तारि अट्ठ" यह दोनों गाथाऐं प्रक्षिप्त मालूम होती है, परन्तु ये कब और किसने प्रक्षिप्त कीं यह कहना कठिन है, प्रभावक चरित्रान्तर्गत आचार्य बप्प भट्टि के प्रबन्ध में एक उपाख्यान है, जिसका सारांश यह है कि—एक समय शत्रुंजय-उज्जयन्त तीर्थ की यात्रा के लिए राजा "आम" संघ लेकर उज्जयन्त की तलहटी में पहुँचा, वहाँ दिगम्बर जैन-संघ भी आया हुआ था, उन्होंने आम को ऊपर जाने से रोका, तब आम सैनिक बल का प्रयोग करने को उद्यत हुआ तो बप्प भट्ट सूरि ने उसको रोक कर कहा धार्मिक कार्यों के निमित्त प्राणी संहार करना अनुचित है इस झगड़े का निपटारा दूसरे प्रकार से होना चाहिए, इन्होंने कहा दो कुमारी कन्याओं को बुलाना चाहिए । श्वेताम्बरों की कन्या दिगम्बर संघ के पास और दिगम्बर संघ की कन्या श्वेताम्बर संघ के पास रखी जाय फिर दोनों संघ के अग्रेसर धर्माचार्य कन्याओं को तीर्थ का निर्णय करने के प्रमाण पूछें, आचार्य बप्प भट्टि सूरि ने श्वेताम्बर संघ की तरफ खड़ी दिगम्बर संघ की कन्या के मुख से श्री अम्बिका देवी द्वारा (उज्जि०) यह गाथा कहलाई, और तीर्थ श्वेताम्वर संप्रदाय को स्थापित किया । परन्तु यह उपाख्यान ऐतिहासिक दृष्टि से मूल्यवान नहीं है, क्योंकि आचार्य बप्प भट्टि विक्रम संवत् ८०० में जन्मे थे और नवमी शताब्दी में उनका जीवन व्यतीत हुआ था तब आचार्य हरिभद्र सूरिजी जो इनके सौ वर्ष से अधिक पूर्ववर्ती थे । सिद्धस्तव की टीका में लिखते हैं कि सिद्धस्तव की आदि की तीन गाथाएं नियम पूर्वक बोली जाती हैं, अन्तिम दो गाथाओं के बोलने का नियम नहीं है, इससे यह सिद्ध होता है कि ये गाथाएं हैं तो हरिभद्र सूरि जी के पूर्व काल की परन्तु है प्रक्षिप्त इसलिए आचार्य ने इनका बोलना अनियत बताया है, हरिभद्र सूरिजी के परवर्ती आचार्य हेमचन्द्र सूरिजी आदि ने भी अपने ग्रन्थों में यही आशय व्यक्त किया है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्जयन्त तीर्थ के सम्बन्ध में अन्य भी अनेक सूत्रों तथा उनकी टीकाओं में उल्लेख मिलते हैं, परन्तु इन सबका यहां वर्णन करके लेख को बढ़ाना उचित न होगा। आचार्य जिन प्रभसूरि कृत 'उज्जयन्त महा तीर्थ कल्प' तथा अन्य विद्वानों के रचे हुए प्रस्तुत तीर्थ के 'स्तव' आदि के कतिपय उपयोगी उद्धरण देकर इस विषय का निरूपण करना ही पर्याप्त समझा जाता है।

उज्जयन्त पर्वत के अद्भुत खनिज पदार्थों से समृद्धिशाली होने के सम्बन्ध में आचार्य जिन प्रभ ने अपने कल्प में बहुत सी बातें कही हैं, जिनमें से कुछेक मनोरंजक नमूने पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे दिये जाते हैं—

'अवलोअण सिहर सिला अवरेणं तत्थगर रसोसवइ।
सु अपक्ख सरिस वण्णो करेइ सुव्वं वरं हेमम् ॥२७॥
गिरि पजुन्न बयारे अंबिअ आसम पयं च नामेण।
तत्थ विपीआ पुहवी हिमवाए धमियाए वा होइवर हेमं ॥२८॥
(वि. ती. क. पृ. ८)

उज्जित पढम सिहरे आरूहिउं दाहिणेन अवपरिउं।
तिण्णि धणूसय मित्ते पूइकरं जं बिलं नाम ॥३०॥
उग्घाडिडं बिलं दिक्खिऊण निउणेन तत्थ गंतव्वं।
दण्डं तराणि बारस दिव्व रसो जंबु फल सरिसो ॥३१॥
(वि. ती. क. पृ. ८)

उज्जिते नाण सिला विक्खाया तत्थ अत्थि पाहाणं।
ताणं उत्तर पासे दाहिणाय अह मुहो विवरो ॥३६॥
तस्स य दाहिण भाए दस धणु भूमीइ हिंगुल य वण्णो।
अत्थि रसो सयवेही विंधइ सुव्वं न संदे हो ॥३७॥
(त्रि. ती. क. पृ ९)

इय उज्जयन्त कप्पं अवि अप्पं जो करेइ जिण भत्तो।
कोहंडिकय पणामो सो पावइ इच्छि अं सुक्खं ॥४१॥
(वि. ती. क. पृ. ९)

अर्थात्—अवलोकन शिखर की शिला के पश्चिम दिग विभाग में शुक की पांखकासा हरे रंग का वेधक रस झरता है जो ताम्र को श्रेष्ठ सुवर्ण बनाता है ॥२७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्जयन्त पर्वत के प्रद्युम्नावतार तीर्थ स्थान में अम्बिका ाश्रम पद नामक वन है, जहां पर पति वर्ण की मिट्टी पाई जाती जिसे तेज आग की आँच देने से बढ़िया सोना बनता है।२८।

उज्जयन्त पर्वत के प्रथम शिखर पर चढ़कर दक्षिण दिशा में ान सो धनुष अर्थात् बारहसो हाथ नीचे उतरना वहाँ पूति करज्ज ामक एक बिल अर्थात् भू विवर मिलेगा, उसको खोलकर सावधानी साथ उसमें प्रवेश करना और अड़तालीस हाथ तक भीतर जाने र लोहे को सोना बनाने वाला दिव्य रस मिलेगा जो जंबुफल दृश रंग का होगा ॥३०।३१॥

उज्जयन्त पर्वत पर 'ज्ञानशिला' नामसे प्रख्यात एक बड़ी शिला जिस पर एक गण्ड शैलों का जत्था रहा हुआ है उससे उत्तर ःशा में जाने पर दक्षिण की तरफ जाने वाला एक अधोमुख विवर ालेगा, उसमें चालीस हाथ नीचे उतरने पर दक्षिण भाग में हिंगुल ा सा रक्त वर्ण शतवैधोरस मिलेगा जो तांबे को वेधकर सोना नाता है इसमें कोई संशय नहीं है।३६।३७।

इस प्रकार जो जिन भक्त कुष्माण्डी (अंबा) देवी को प्रणाम रके मनमें शंका लाये बिना उज्जयन्त पर्वत पर रसायन कल्प ाधना करेगा वह मनोभिलषित सुख को प्राप्त होगा।४१।

जिन प्रभ सूरि कृत उज्जयन्त महाकल्प के अतिरिक्त अन्य ो अनेक कल्प और स्तव उपलब्ध होते हैं, जो पौराणिक होते ए भी ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्व के हैं। हम इन सब द्धरण देकर लेख को नहीं बढ़ायेंगे, केवल उपयोगी संक्षिप्त सारांश कर लेख को पूरा करेंगे।

'रैवतक गिरी' कल्प संक्षेप में इस तीर्थ के विषय में कहा गया । भगवान नेमि नाथ ने छत्रशिला के समीप शिलासन पर दीक्षा हण की सहस्राम्र वनमें केवल ज्ञान प्राप्त किया लक्षाराम में में देशना की और अवलोकन नामक ऊँचे शिखर पर निर्वाण ाप्त किया।

रैवत की मेखला में कृष्ण वासुदेव ने निष्क्रमणादि तीन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्याणकों का उत्सव करके रत्न प्रतिमाओं से शोभित तीन जिन चैत्य तथा एक अम्बा देवी का मंदिर बनवाया। (जि.क.ती.पृ. ६)

"रैवतक गिरि" कल्प में कहा है—पश्चिम दिशा में सौराष्ट्र देश स्थित रैवत पर्वतराज के शिखर पर श्री नेमिनाथ का बहुत ऊँचे शिखर वाला भवन था जिसमें पहले भगवान् नेमिनाथ की लेपमयी प्रतिमा प्रतिष्ठित थी एक समय उत्तरापथ के विभूषण समान काश्मीर देश से अजित तथा रतना नामक दो भाई संघपति बनकर गिरनार तीर्थ की यात्रा करने आये। और भक्तिवश केशर चंदनादि के घोलसे कलशे भरकर उस प्रतिमा को अभिषिक्त किया, परिणाम स्वरूप वह लेपमयी प्रतिमा लेप के गल जाने से बहुत ही बिगड़ गई, इस घटना से संघ पति युगल बहुत ही दुःखी हुआ और आहार का त्याग कर दिया इक्कीस दिन के उपवास के अन्त में भगवती श्री अम्बिका देवी वहां प्रत्यक्ष हुई और संघपति को उठाया, उसने देवी को देखकर जय जय शब्द किया, देवी ने संघपति को रत्नमय प्रतिमा देते हुए कहा लो! यह प्रतिमा ले जाकर बैठा दो पर प्रतिमा को स्थान पर बिठाने के पहले पीछे नहीं देखना, संघपति अजीत सूत के कच्चे धागे के सहारे प्रतिमा को अन्दर लेजा रहा था वह प्रतिमा के साथ नेमि-भवन के सुवर्ण बलानक में पहुँचा और बिंब के द्वार की देहली के ऊपर पहुँचते संघपति का हृदय हर्ष से उमड़ पड़ा और देवी की शिक्षा को भूलकर सहसा उसका मुँह पिछली तरफ मुड़ गया और प्रतिमा वहां ही निश्चल हो गई, देवी ने जय जय शब्द के साथ पुष्प वृष्टि की यह प्रतिमा संघपति द्वारा नव निर्मित जिन प्रासाद में वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को प्रतिष्ठित हुई। स्नपनादि महोत्सव करके संघपति अजीत अपने भाई के साथ स्वदेश पहुँचा। कलिकाल में मनुष्यों के चित्त की कलुषता जानकर अम्बिका देवी ने उस रत्नमयी प्रतिमा की झलहलती कांति को ढांप दिया। (वि. ती. क. पृ. ९)

इसी कल्प में इस तीर्थ सम्बन्धी अन्य भी ऐतिहासिक उल्लेख मिलते हैं जो नीचे दिये जाते हैं—

'पुव्वि गुज्जर धराए जयसिंह देवेणं खंगार रायं हणित्ता

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सज्जणो दंडा हिवो ठाविश्रो। तेण श्र श्रहिणवं नेमि जिणंद भवणं एगारस सय पंचासीए (११८५) विक्कम राय बच्छरे काराविश्रं। मालव देस मुह मंडणेणं साहु भावडेणं सोवण्णं श्रामल सारं कारिश्रं। चोलुक्क चक्कि सिरि कुमार पाल नरिन्द संठविश्र सोरट्ठ दंडा हिवेण सिरि सिरिमाल कुलुब्भवेण बारस सय वीसे (१२२०) विक्कम संवच्छरे पज्जा काराविश्रा। पज्जाए चडंतेहिं जणेहिं दाहिण दिसाए लक्खारामो दीसई।"

(वि. ती. क. पृ. ९)

अर्थात्—'पूर्वकाल में गुर्जर भूमिपति चौलुक्य राजा जयसिंह देवने जूनागढ के राजा राव खेङ्गार को मारकर दण्डाधिपति सज्जन को वहां का शासक नियुक्त किया सज्जन ने विक्रम संवत् ११८५ में भगवान् नेमिनाथ का शासक नियुक्त किया। सज्जन ने विक्रम संवत् ११८५ में भगवान् नेमिनाथ का नया भवन बनवाया, बाद में मालव भूमि-भूषण साधु भावड ने उसपर सुवर्णमय श्रामल सारक बनवाया।'

'चौलुक्य चक्रवर्ती श्री कुमार पाल देव नियुक्त श्री श्रीमाल कुलोत्पन्न सौराष्ट्र दण्डाधिपति ने विक्रम संवत् १२२० में उज्जयन्त पर्वत पर चढ़ने के लिए सोपानमय-मार्ग करवाया श्रौर उसके पुत्र धवलने सोपान मार्ग में प्याऊ बनवाई, इस पद्या मार्ग से ऊपर-चढ़ने वाले यांत्रिक जनों को दक्षिण दिशा में लक्षाराम नामक उद्यान दीखता है।

इन कल्पोंकों के श्रतिरिक्त उज्जयन्त तीर्थ के साथ सम्बन्ध रखने वाले श्रनेक स्तुति-स्तोत्र भी भिन्न-भिन्न कवियों के बनाये हुये जैन ज्ञान भाण्डागारों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें से थोड़े से श्लोक नीचे उद्धृत करके इस तीर्थ का वर्णन समाप्त करेंगे।

"योजन द्वय तुंगेऽस्य श्रृंगे जिन गृहावलिः।
पुण्य राशि रिवा भाति शरच्चद्रांशु निर्मला ॥४॥
सौवर्ण दण्ड कलशामल सारक शोभितम्।
चारु चैत्यं चकारास्योपरि श्रीनेमिनः प्रभुः ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री शिवा सूनु देवस्य पादुकात्र निरीक्षता ।
स्पृष्टाऽर्च्चिता च शिष्टानां पाप व्यूहं व्यापोहति ।।६।।

प्राप्यं राज्यं परित्यज्य जर त्तृण मिव प्रभुः ।
बन्धून् विधूय च स्निग् धान् प्रपेदेऽत्र महाव्रतम् ।।७।।

अत्रैव केवलं देवः स एव प्रति लब्धवान् ।
जगज्जनहितैषी स पर्यणैवीच्च निर्वृतिम् ।।८।।"

अर्थात्—इस उज्जयन्त गिरि के दो योजन ऊँचे शिखर पर बनवाने वालों की निर्मल पुण्य राशि किसी चन्द्र किरण जैसी उज्जवल जिन मन्दिरों की पंक्ति सुशोभित हैं। इसी शिखर पर सुवर्ण मय दण्ड कलश तथा आमल सारक से सुशोभित भगवान नेमिनाथ का सुन्दर चैत्य दृष्टि गोचर हो रहा है। यहीं पर प्रतिष्ठित शैवेय-जिनकी चरण पादुका दर्शन, स्पर्शन, और पूजन से भाविक यात्रिगण के पाप को दूर करती है। और यहीं पर जीर्ण तिनखे को तरह समृद्ध राज्य, तथा विशाल कुटुम्बका त्याग कर भगवान नेमिनाथ ने महाव्रत धारण किये थे। और यहीं पर भगवान केवलज्ञानी हुए तथा जगत् हितचिन्तक भगवान् नेमिनाथ यहीं से निर्वाण पद पाये।

"अत एवात्र कल्याण त्रय मन्दिर मादधे ।
श्री वस्तु पालो मंत्रीश अत्कारित भव्य हृत् ।।९।।

जिनेन्द्र बिम्ब पूर्णेन्द्र मण्डपस्था जना इह ।
श्री नेमेर्मज्जनं कर्तु मिन्द्रा इव चकासती ।।१०।।

गजेन्द्र पद नामास्य कुण्डं मण्डयते शिरः ।
सुधा विधैर्जलैः पूर्णं स्नानार्हं त्स्नपन क्षपैः ।।११।।

शत्रुञ्जया वतारेऽत्र वस्तु पालेन कारिते ।
ऋषभः पुण्डरी कोऽष्टा पदो नन्दी श्वरस्तथा ।।१२।।

सिंह याना हेमवर्णा सिद्ध बहु सुतान्विता ।
कम्राम्र लुम्बिभृत् पाणि रत्राम्बा संघ विघ्नहृत् ।।१३।।

(वि. ती. क. पृ. ७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यहां पर भगवान के तीन कल्याणक होने के कारण से ही मन्त्रीश्वर वस्तुपाल ने सज्जनों के हृदय को चमत्कृत करने वाला तीन कल्याणक मंदिर बनवाया। जिन प्रतिमाओं से भरे इस इन्द्र मण्डप में रहे हुए भगवान नेमिनाथ स्नपन कराने वाले पुरुष इन्द्र की शोभा पाते हैं। इस पर्वत की चोटी को गजेन्द्र-पद-नामक कुण्ड, जो अमृत के से जलसे भरा और स्नपनीय जिन प्रतिमाओं का स्नपन कराने में समर्थ हैं—भूषित कर रहा है। यहाँ वस्तुपाल, द्वारा कारित शत्रुञ्जयावतार विहार में भगवान ऋषभ देव गणधर पुण्डरीक स्वामी अष्टापद-चैत्य, तथा नन्दीश्वर चैत्य यात्रियों के लिए दर्शनीय चीज हैं। इस पर्वत पर सुवर्ण की सी कान्तिवाली, सिंह वाहनपर आरूढ़ सिद्ध-बुद्ध नामक अपने पूर्व भविक दो पुत्रों को साथ लिए कमनीय आमकी लुम्ब जिसके हाथ में है, ऐसी अम्बा देवी यहाँ रही हुई संघ के विघ्नों का विनाश करती है।

उज्जयन्त तीर्थ सम्बन्धी उक्त प्रकार के पौराणिक तथा ऐतिहासिक वृत्तान्त बहुतेरे मिलते हैं, परन्तु उनके विवेचन का यह योग्य स्थल नहीं, हम इसका विवेचन यहीं समाप्त करते हैं।

(३) गजाग्रपद तीर्थ

गजाग्रपद भी आचारांग निर्युक्ति निर्दिष्ट तीर्थों में से एक है, परन्तु वर्तमान काल में व्यवच्छिन्न हो चुका है, इसकी अवस्थिति सूत्रों में दशार्णपुर नगर के समीप वर्ती दशार्ण-कूट पर बताई गई है। आवश्यक चूर्णि में भी इस तीर्थ को दशार्ण देश के दशार्णपुर के समीपवर्ती पहाड़ी तीर्थ लिखा है। और इसकी उत्पत्ती का वर्णन भी दिया है, जिसका संक्षेप सार नीचे दिया जाता है।

एक समय श्रमण भगवान महावीर विचरते हुए अपने श्रमण संघ के साथ दशार्णपुर के समीपवर्ती एक उपवन में पधारे। राजा दशार्णभद्र को उद्यान पालक ने भगवान के पधारने की बधाई दी।

श्री भगवान का आगमन सुनकर राजा बहुत ही हर्षित हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसने सोचा कल ऐसी तैयारी के साथ भगवन्त को वन्दन करने जाऊँगा, और ऐसे ठाट से वन्दन करूँगा जैसे ठाट से न पहले किसी ने किया होगा न भविष्य में करेगा। उसने सारे नगर में सूचित करवा दिया कि कल अमुक समय में राजा अपने सर्व परिवार के साथ भगवान महावीर को वन्दन करने जावेंगे, और नागरिकगणों को भी उसका अनुगमन करना होगा।

राजकीय कर्मचारीगण उसी समय से नगर की सजावट चतुरंगिनी सेना के सज्ज करने तथा अन्यान्य समयोचित तय्यारियां करने के कामों में जुट गए। नागरिक जन भी अपने-अपने घर हाट सणगारने, रथ, यान तथा पालकियों को सज्ज करने लगे।

दूसरे दिन प्रयाण का समय आने के पहले ही सारा नगर ध्वजाओं, तोरणों, पुष्प मालाओं से सुशोभित था, मुख्य मार्गों में जल छिड़काकर फूल बिखेरे गए थे। राजा दशार्णभद्र उसका सम्पूर्ण अन्तःपुर और दास-दासीगण अपने योग्य यानों, वाहनों से भगवान् के वन्दनार्थ रवाना हुए, उनके पीछे नागरिक भी रथों, पालकियों आदि में बैठकर राज कुटुम्ब के पीछे उमड़ पड़े।

महावीर की धर्म सभा की तरफ जाते हुए राजा के मन में सगर्व हर्ष था। वह अपने को भगवान महावीर का सर्वोच्च शक्तिशाली भक्त मानता था, ठीक उसी समय स्वर्ग के इन्द्र ने भगवान महावीर के विहार-क्षेत्र को लक्ष्य करके अवधि-ज्ञान का उपयोग किया और देखा कि भगवान् दशार्ण कूट पहाड़ी के निकटस्थ उद्यान में विराजमान हैं, और राजा दशार्ण भद्र अद्वितीय सज-धज के साथ उन्हें वन्दन करने जा रहा है। इन्द्र ने भी इस प्रसंग से लाभ उठाना चाहा, वह अपने ऐरावत हाथी पर आरूढ होकर दिव्य परिवार के साथ क्षण भर में भगवान के पास आ पहुँचा, उसने तीन प्रदक्षिणा देकर दशार्ण कूट पर्वत की एक लंबी-चौड़ी चट्टान पर अपना वाहन ऐरावत हाथी उतारा। दिव्य शक्ति से इन्द्र ने हाथी के अनेक दांतों पर, अनेक-अनेक बावडियां, बावडियां में अनेक-अनेक कमल और कमलों की कर्णिकाओं पर देव प्रसाद, और उनमें होने वाले बत्तीस पात्र-बद्ध नाटकों के अद्भुत दृश्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिखला कर राजा की शक्ति और सजावट को निस्तेज बना कर उसके अभिमान को नष्ट कर दिया राजा ने देखा इन्द्र की शक्ति के सामने मेरी शक्ति नगण्य है, भला सूर्य के प्रकाश के सामने छोटा सा सितारा कैसे चमक सकता है । उसने अपने पूर्व भव के धर्म कृत्यों की न्यूनता जानी और भगवान महावीर का वैराग्यमय उपदेशामृत पाकर संसार का मोह छोड़ कर श्रमण धर्म में दीक्षित हो गया ।

दशार्ण कूटकी जिस विशाल शिला पर इन्द्र का एरावत खड़ा था उस शिला में उसके अगले पैरों के चिन्ह सदा के लिए बन गए, बाद में भक्त जनों ने उन चिन्हों पर एक बड़ा जिन चैत्य बनवाकर उसमें भगवान महावीर की मूर्ति प्रतिष्ठित करवाई, तब से इस स्थान का 'गजाग्रह पद' तीर्थ सदा के लिये अमर हो गया ।

आज यह गजाग्रह पद तीर्थ भूला जा चुका है, यह स्थान भारत भूमि के किस प्रदेश में था यह भी निश्चित रूप से कहना कठिन है, फिर भी हमारे अनुमान के अनुसार मालवा के पूर्व में और आधुनिक बुन्देलखण्ड के प्रदेश में कहीं होना संभवित है ।

(४) धर्म चक्र-तीर्थ

आचारांग निर्युक्ति सूचित यह चौथा धर्मचक्र तीर्थ है, धर्मचक्र तीर्थ की उत्पत्ती का विवरण आवश्यक निर्युक्ति तथा उसकी प्राचीन प्राकृत टोका में नीचे लिखे अनुसार मिलता है—

'कल्लंस विड्ढीए पूए महऽदड्ठु धम्म चक्कं तु ।
विहरइ सहस्स मेगं छउमत्थो भारहे वासे ।।३३५।।'

अर्थात् (भगवान ऋषभदेव हस्तिनापुर से विहार करते हुए पश्चिम में बहली प्रदेश की राजधानी तक्षशिला[1] के उद्यान में पधारे, वन पालकने राजा बाहुबलि को भगवान के आगमन की बधाइ दी, राजा ने सोचा ! कल सर्वऋद्धि विस्तार के साथ भग-

१. आधुनिक पश्चिम पंजाब के रावलपिंडि जिले में 'शाह की ढेरी' नाम से जो स्थल प्रसिद्ध है वहीं पर प्राचीन तक्षशिला थी ऐसा शोधकों ने निर्णय किया है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वान की पूजा करूँगा। राजा बाहुबलि दूसरे दिन बडे ठाठ बाट से भगवान की तरफ गया। परन्तु उसके जाने के पूर्व ही भगवान वहाँ से विहार कर चुके थे। अपने पूज्यपिता ऋषभ को निवेदित स्थान तथा उसके आस-पास न देख कर बाहुबली बहुत ही खिन्न हुआ और वापस लौट कर भगवान रात भर जहाँ ठहरे थे उस स्थान पर एक बड़ा गोल चक्राकार स्तूप बनवाया और उसका नाम 'धर्मचक्र' दिया। भगवान ऋषभदेव छद्मावस्था में एक हजार वर्ष तक विचरे।

आवश्यक निर्युक्ति की उपर्युक्त गाथा के विवरण में चूर्णि-कार ने धर्मचक्र के सम्बन्ध में जो विशेषता बताई है वह निम्न लिखित है।

'जहाँ भगवान ठहरे थे उस स्थान पर सर्व रत्नमय एक योजन परीधि वाला, जिसपर पांच योजन ऊँचा ध्वज दण्ड खड़ा है, धर्मचक्र का चिन्ह बनवाया।'

बहली अडंबइल्ला जोणग विसओ सुवण्ण भूमि अ।
आहिंडिआ भगव आ उसभेण तवं चंरतेणं ॥३३६॥
बहलीअ जोणग पल्ह गाय जे भगवया समणु सिट्ठा।
अन्ते य मिच्छ जाईते तइआ भद्दया जाया ॥३३७॥
तित्थयराणं पढमो उसभरिसि विहरि ओ निरूव सग्गो।
अट्ठाव ओण गवरो अग्ग (य) भूमि जिण वरस्स ॥३३८॥
छ उमत्थ र्घरि आओ वास सहस्सं तओ पुरिम ताले।
णग्गो हस्स य हेट्ठा उपण्णं केवणं नाणं ॥३३९॥
फग्गुण बहुले एक्कार सीइ अह अट्ठमेण भत्तेणं।
उप्पण्णं मि भणंते महव्वया पंच पण्णवए ॥३४०॥

अर्थात्—बहली (बल्ख-बाख्तरिया) अडंब इल्ला (अटक-प्रदेश) यवन (यूनान) देश और सुवर्ण भूमि (ब्रह्म प्रदेश) इन देशों में भगवान ऋषभ ने तपस्वी जीवन में भ्रमण किया। बल्ख, यवन, पल्हग देश वासी भगवान के अनुशासन से क्रौर्य का त्याग कर भद्र परिणामी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बने। तीर्थंकरों में आदि तीर्थंकर ऋषभ मुनि सर्वत्र निरूप सगंता से विचरे आदि जिनकी अग्र विहार भूमि अष्टापद पर्वत बना रहा अर्थात् पूर्व पश्चिम भारत के देशों में घूमकर मध्य भारत में आते तब बहुधा अष्टापद पर्वत पर ही ठहरते। भगवान ऋषभ जिनका छद्मस्थ-पर्याय (तपस्वी-जीवन) हजार वर्ष तक बना रहा, बाद में आपको पुरिमताल नगर के वटवृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए केवल-ज्ञान प्रकट हुआ, उस समय आपने निर्जल तीन उपवास किये थे, फाल्गुन वदि एकादशी का दिन था। इन संजोगों में अनन्त केवलज्ञान प्रकट हुआ और आपने श्रमण धर्म के पंच महाव्रतों का उपदेश किया।

धर्मचक्र को बाहुबलि ने ऋषभदेव के स्मारक के रूप में बनवाया था, परन्तु कालान्तर में उस स्थान पर जिन चैत्य बनकर जिन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हुई, और इस स्मारक ने एक महातीर्थ का रूप धारण किया, प्रतिष्ठित जिन चैत्यों में "चन्द्रप्रभ नामक आठवें तीर्थंकर" का चैत्य प्रधान था, इस कारण से इस तीर्थ ने चन्द्रप्रभ के साथ अपना नाम जोड़ दिया और लम्बे काल तक वह इसी नाम से प्रसिद्ध रहा। महानिशीथ नामक जैन सूत्र में इसका वृत्तान्त मिलता है जिसमें से थोड़ा सा अवतरण यहां देना योग्य समझते हैं।

"अहन्नया गोयमा ते साहुणो तं आयरियं भणंति जहाणं जइ भयवं तुमं आणवेहि ताणं अम्हेहिं तित्थयतं करि (र) या चंदप्पह सामियं वं दिया धम्म चक्कं गंतूण मागच्छामो ताहे गोयमा अहीण मनसा अणु त्तालं गंभीर महुराए भारतीए भणियं तेणा यरियेणं जहा इच्छा यारेणं न कप्पई तित्थयंतं गंतुं सुविहियाणां ता जावणं बोलेइ जत्तं तावणं अहं तुम्हे चंदप्पहं वंदा वेहामि। अन्नं च जत्ताए गएहिं असंजमें पडिज्जइ एएणं कारणेणं तित्थं यत्ता पडिसेहिज्जइ।"

अर्थात्—(भगवान महावीर कहते हैं) हे गोतम ? अन्य समय वे साधु उस आचार्य को कहते हैं–हे भगवन् ? यदि आप आज्ञा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करें तो हम तीर्थयात्रा[1] करने तथा चन्द्रप्रभ स्वामी को वन्दन करने धर्म चक्र जाकर आ जाएं। तब हे गोतम! उस आचार्य ने दृढ़ मन से सोचकर गम्भीर वाणी से कहा जैसे इच्छा कार से सुविहित साधुओं को तीर्थयात्रा को जाना नहीं कल्पता इस वास्ते जब यात्रा बीत जायगी तब मैं तुम्हें चन्द्रप्रभ का वन्दन करा दूँगा। दूसरा कारण यह भी है तीर्थ-यात्राओं के प्रसंगों पर साधुओं को तीर्थ पर जाने से असंयम-मार्ग में पड़ना पड़ता है। इसी कारण से साधुओं के लिए यात्रा निषिद्ध की जाती है।

तक्षशिला का धर्मचक्र बहुत काल पहले से हो जैनों के हाथ से चला गया था इसके कारण दो हैं, विक्रम को दूसरी तथा तीसरी शताब्दी में बौद्ध धर्म का पर्याप्त प्रचार हो चुका था, यही नहीं तक्षशिला विश्वविद्यालय में हजारों बौद्ध भिक्षुक तथा उनके अनुयायी छात्र गण विद्याध्ययन करते थे। इस कारण से तक्षशिला के तथा पुरुषपुर (पेशावर) के प्रदेशों में हजारों की संख्या में बौद्ध उपदेशक घूम रहे थे। इसके अतिरिक्त शशेनियन लोगों के भारत

---

१. यहाँ 'यात्रा' शब्द तीर्थ पर होने वाले मेले के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, महानिशी थमे ही नहीं, अन्य सूत्रों में भी जैन श्रमणों को तीर्थ यात्रा के लिए भ्रमण करना वर्जित किया है। निशीघ सूत्र की चूर्णि में लिखा है–

'उत्तरावहे धम्म-चक्कं मधुराए देव णिम्भि ओ थूभो। कोसलाए वाजियंत पडिमा तित्थ कराणवा जम्म भूमिओ एवमादि कारणेहिं गच्छन्तो णिक्खाणि तो' (२४३-२)

अर्थात्—उत्तरा पथ में धर्मचक्र मथुरा में देव निर्मित स्तूप अयोध्या में जीवंत स्वामी प्रतिमा, अथवा तीर्थंकरों की जन्म भूमियों इत्यादि कारणों से देश भ्रमण करने वाला साधु निष्कारिण कहलाता है। उक्त महानिशीथ के प्रमाण से मेले के प्रसंग पर तीर्थ पर जाना साधु के लिए वर्जित किया है, परन्तु निशीथ आदि आगमों के प्रमाणों से केवल तीर्थ दर्शनार्थ भ्रमण करना भी जैन श्रमण के लिए निषिद्ध बताया है। जैन श्रमण के लिए सकारण देश भ्रमण करना विहीत है और उस भ्रमण में आने वाली तीर्थ भूमियों का दर्शन वन्दन करना आगम विहीत है। तीर्थ वन्दन के नाम से भड़कने वाले तथा केवल तीर्थ वन्दन के लिए भटकने वाले हमारे वर्तमान कालीन जैन श्रमणों को इस शास्त्रीय वर्णनों से बोध लेना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर होने वाले आक्रमण की जैन संघ को पहले ही सूचना मिल गई थी कि आज से तीसरे वर्ष में तक्षशिला का भंग होने वाला है इससे जैन संघ धीरे-धीरे तक्षशिला से पंजाब की तरफ आ गया था, कुछ लोग दक्षिण की तरफ पहुँच कर जलमार्ग से कच्छ तथा सौराष्ट्र तक चले गये। जाने वाले लोगों ने अपनी धन सम्पत्ति को ही नहीं, अपनी पूज्य देव मूर्तियों तक को वहाँ से हटा ले गये थे, इस दशा में अरक्षित जैन स्मारकों तथा मंन्दिरों पर बौद्ध धर्मियों ने अपना अधिकार करलिया। तक्ष शिला का धर्मचक्र जो चन्द्रप्रभ का तीर्थ माना जाता था उसको भी बौद्धों ने अपना लिया, था और उसे "बोद्धिसत्वों चन्द्र प्रभ" का प्राचीन स्मारक होना उद्घोषित किया। बौद्ध चीनी यात्री ह्वेनत्सांग जो कि विक्रम की षष्ठी शताब्दी में भारत में आया था, अपने भारत यात्रा विवरण में लिखता है—

"यहां पर पूर्व काल में "बौद्धिसत्व चन्द्र प्रभ" ने अपना मांस प्रदान किया था, जिसके उपलक्ष्य में मौर्य सम्राट अशोक ने उसका यह स्मारक बनवाया है।"

उक्त चीनी यात्री के उल्लेख से यह तो निश्चित हो जाता है, कि धर्मचक्र विक्रमीय छटी शताब्दी के पहले ही जैनों के हाथ से चला गया था, निश्चित रूप से तो नहीं कह सकते फिर भी यह कहना अनुचित न होगा, कि शशेनियन लोग जो ईसा की तीसरी शताब्दी में आक्रामक बनकर तक्षशिला के मार्ग से भारत में आए, उसके लगभग काल में ही धर्मचक्र बौद्धों का स्मारक बन चुका होगा।

(५) अहिच्छत्रा पार्श्वनाथ—

आचाराङ्ग निर्युक्ति सूचित पार्श्वनाथ अहिच्छत्रा नगरी स्थित पार्श्वनाथ है, भगवान् पार्श्वनाथ प्रव्रजित होकर तपस्या करते हुए एक समय कुरुजांगल देश में पधारे। वहां शंखावली नगरी के समीप वर्ती एक निर्जन स्थान में आप ध्यान निमग्न खड़े थे तब उनके पूर्व भव के विरोधी कमठ नामक असुर ने आकाश से घनघोर जल बरसाना प्रारम्भ किया, बड़े जोरों की वृष्टि हो रही थी, कमठ की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इच्छा यह थी कि पार्श्वनाथ को जलमग्न करके इनका ध्यान भंग किया जाय, ठीक उसी समय धरणेन्द्र नागराज भगवान को वन्दन करने आया और भगवान पर मूसलधार वृष्टि होती देखी। धरणेन्द्र ने भगवान के ऊपर फरण छत्र किया और इस अकाल वृष्टि करने वाले कमठ का पता लगाया, यही नहीं उसे ऐसे जोरों से धमकाया, कि तुरन्त उसने अपने दुष्कृत्य को बंद किया और भगवान पार्श्वनाथ के चरणों में शिर नमाकर उसने धरणेन्द्र से माफी मांगी जलोपद्रव के शान्त हो जाने पर नागराज धरणेन्द्र ने अपनी दिव्य शक्ति के प्रदर्शन द्वारा भगवान का बहुत महिमा किया। उस स्थान पर कालान्तर में भक्त लोगों ने एक बड़ा जिन प्रासाद बनवाकर उसमें पार्श्वनाथ की नाग फरण छत्रालंकृत प्रतिमा प्रतिष्ठित की। जिस नगरी के समीप उपर्युक्त घटना घटी थी, वह नगरी भी 'अहिच्छत्रानगरी' इस नाम से प्रसिद्ध हो गई।

अहिच्छत्रा विषयक विशेष वर्णन सूत्रों में उपलब्ध नहीं होता, परन्तु जिनप्रभ सूरि ने "अहिच्छत्रा नगरी कल्प" में इस तीर्थ के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें कही हैं; जिनमें से कुच्छेक नीचे दी जाती हैं—

'(अहिच्छत्रा) पार्श्व जिन चैत्य के पूर्व दिशा भाग में सात मधु जल से भरे कुण्ड अब भी विद्यमान हैं, इन कुण्डों के जल में स्नान करने वाली मृत वत्सा स्त्रियों की प्रजा स्थिर (जीवित) रहती हैं, उन कुण्डों की मिट्टी से धातुवादी लोग सुवर्ण सिद्धि होना बताते हैं।

'पार्श्वनाथ की यात्रा करने आए हुए यात्रिक गण अब भी जब भगवान् का स्नपन महोत्सव करते हैं उस समय कमठ दैत्य यहां पर प्रचण्ड पवन वृष्टि बादलों द्वारा दुर्दिन कर देता है।'

'मूल चैत्य से थोड़ी दूरी पर सिद्ध क्षेत्र में धरणेन्द्र पद्मावती सेवित पार्श्वनाथ का मन्दिर बना हुआ है।'

'नगर के दुर्ग के समीप नेमिनाथ की मूर्ति से सुशोभित सिद्धबु नामक दो बालक रूपकों से समन्वित हाथ में आम्र फलों की डाली लिए सिंह पर आरूढ़ अम्बिका देवी की मूर्ति प्रतिष्ठित है।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'यहां उत्तरा नामक एक निर्मल जल से भरी बावड़ी है जिसके जल में नहाने तथा उसकी मिट्टी का लेप करने से कोढ़ियों का कोढ़ रोग शांत हो जाता है।'

'यहां रहे हुए धन्वन्तरी नामक कुए की पीली मिट्टी से आम्नाय वेदियों के उपदेशानुसार प्रयोग करने से सोना बनता है।'

'यहाँ ब्रह्म कुण्ड के किनारे मण्डुकपर्णी ब्राह्मी के पत्तों का चूर्ण एक वर्णी गाय के दूध के साथ सेवन करने से मनुष्य की बुद्धि और निरोगता बढ़ती है, और उनका स्वर गन्धर्व कासा मधुर बन जाता है।'

'बहुधा अहिच्छत्रा के उपवनों में सभी वृक्षों पर बन्दाक उगे हुए मिलते हैं, जो अमुक-अमुक कार्य साधक होते हैं। यही नहीं वहाँ के उपवनों में जयन्ती, नागदमनी, सहदेवी, अपराजिता, लक्ष्मणा, त्रिपर्णी, नकुली, सकुली, सर्पाक्षी, सुवर्ण शिला, मोहिनी, श्यामा, रवि भक्ता (सूर्यमुखी) निर्विषी, मयूरशिखा, शल्या, विशल्यादि, अनेक महौषधियां यहाँ मिला करती हैं।'

'अहिच्छत्रा में विष्णु, शिव, ब्रह्मा, चण्डिकादि के मंदिर तथा ब्रह्मकुण्ड आदि अनेक लौकिक तीर्थ स्थान भी बने हुए हैं, यह नगरी सुगृहीत नाम धेय 'कण्व ऋषि' की जन्म भूमि मानी जाती है।'

उपर्युक्त अहिच्छत्रा तीर्थ स्थान वर्तमान में कुरु देश के किसी भूमि भाग में खण्डहरों के रूप में भी विद्यमान है, या नहीं इसका विद्वानों को पता लगाना चाहिये।

(६) रथावर्त (पर्वत) तीर्थ—

प्राचीन जैन तीर्थों में रथावर्त पर्वत को निर्युक्ति कार ने षष्ट नम्बर में रक्खा है। यह पर्वत आचाराङ्ग टीका कार शिलाङ्क सूरि के कथनानुसार अन्तिम दश पूर्वधर आर्य वज्र स्वामी के स्वर्गवास का स्थान था। पिछले कतिपय लेखकों का मंतव्य है कि वज्र स्वामी के अनशन काल में इन्द्र ने आकर इस पर्वत की रथ में बैठकर प्रदक्षिणा की थी, जिससे इसका नाम 'रथावर्त' पड़ा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

था। परन्तु यह मन्तव्य हमारी राय में प्रामाणिक नहीं है, क्योंकि आर्य वज्र स्वामी के अनशन का समय विक्रमीय प्रथम शताब्दी का अन्तिम भाग है, जब कि आचारङ्ग निर्युक्तिकार श्रुतधर भद्रबाहु स्वामी आर्य वज्र स्वामी से सैकड़ों वर्ष पहले हो गए हैं, इससे पर्वत का रथावर्त यह नाम भद्रबाहु स्वामी के पूर्वकाल का है, इसमें शंका को स्थान नहीं।

रथावर्त पर्वत किस भू प्रदेश में था इस बात का विचार करते समय हमें आर्य वज्र स्वामी के अन्तिम समय के बिहार क्षेत्र पर विचार करना होगा, आर्य वज्र स्वामी अपनी स्थविर अवस्था में सपरिवार मालव देश में विचरते थे, ऐसा जैन ग्रन्थों के उल्लेखों से जाना जाता है, उस समय भारत में बड़ा भारी द्वादश वार्षिक दुर्भिक्ष प्रारंम्भ हो चुका था, साधुओं को भिक्षा मिलना तक कठिन हो गया था। एक दिन तो स्थविर वज्र स्वामी ने अपने विद्या बल से आहार मंगवा कर साधुओं को दिया, और कहा बारह वर्ष तक इसी प्रकार विद्या पिण्ड से शरीर निर्वाह करना होगा, इस प्रकार जीवन निर्वाह करने में लाभ मानते हों तो वैसा करें, अन्यथा अनशन द्वारा जीवन का अन्त कर दें। श्रमणों ने एक मत से अपनी राय दी कि इस प्रकार दूषित आहार द्वारा जीवन निर्वाह करने से तो अनशन से देह त्याग करना ही अच्छा है। इस पर विचार करके आर्य वज्र स्वामी ने अपने एक शिष्य वज्रसेन मुनि को थोड़े से साधुओं के साथ कोंकण प्रदेश में विहार करने की आज्ञा दी और कहा जिस दिन तुम को एक लक्ष सुवर्ण से निष्पन्न भोजन मिले तब जानना कि दुर्भिक्ष का अन्तिम दिन है। उसके दूसरे ही दिन से अन्न संकट हलका होने लगेगा। अपने गुरुदेव की आज्ञा शिर चढा कर वज्रसेन मुनि ने कोंकण देश की तरफ विहार किया और वज्रस्वामी ने पांच सो मुनियों के साथ रथावर्त पर्वत पर जाकर अनशन धारण किया।

वज्र स्वामी के उपर्युक्त वर्णन से जाना जा सकता है कि वज्रसेन के विहार करने पर, तुरन्त आप वहां से अनशन के लिए रवाना हो गए हैं, और निकट प्रदेश में ही रहे हुए रथा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्त पर्वत पर अनशन किया है। प्राचीन विदिशा नगरी (आज का मिलसा) के समीप पूर्वकाल में "कुंजरावर्त" तथा "रथावर्त" नामक दो पहाड़ियां थीं। वज्रस्वामी ने इसी रथावर्त नामक पर्वत पर अनशन किया होगा, और वही "रथावर्त" पर्वत जैनों का प्राचीन तीर्थ होगा, ऐसा हमारा मानना है।

(७) चमरोत्पात

भगवान महावीर छद्मस्थावस्था के बारहवें वर्ष में वैशालो को तरफ से विहार करते हुए सूंसुमार पुर नामक स्थान के निकट वर्ती उपवन में अशोक वृक्ष के नीचे ध्यानारूढ़ थे, तब चमरेन्द्र नामक असुरेन्द्र वहाँ आया और महावीर की शरण लेकर स्वर्ग के इन्द्र शक्र पर चढ़ाई कर गया और सुधर्मा सभा के द्वार तक पहुँच कर शक्र को डराने धमकाने लगा। शकेन्द्र ने भी चमरेन्द्र को मार हटाने के लिए अपना वज्रायुध उसकी तरफ फेंका, आग की चिनगारियाँ उगलते हुए वज्र को देख कर, चमर आया उसी रास्ते भागा। शक्र ने सोचा चमरेन्द्र यहां तक किसी भी महर्षि तपस्वी को शरण लिये बिना नहीं आ सकता, देखें यह किसकी शरण ले आया है। इन्द्र ने अवधि ज्ञान से जाना कि चमर महावीर का शरणागत बनकर आया है और वहीं जा रहा है, वह तुरन्त वज्र को पकड़ने दौड़ा, चमरेन्द्र अपना शरीर सूक्ष्म बनाकर भगवान महावीर के चरणों के बोच घुसा, वज्र प्रहार होने के पहले ही इन्द्र ने वज्र को पकड़ लिया। इस घटना से सूंसुमार पुर और उसके आस-पास के गांवों में सनसनो फैल गई, लोगों के झुण्ड के झुण्ड घटना स्थल पर आये और घटना की वस्तु स्थिति को जानकर भगवान महावीर के चरणों में झुक पड़े। भगवान महावीर तो वहां से विहार कर गए, परन्तु लोगों के हृदय में उनके शरणागत रक्षकत्व की छाप सदा के लिए रह गई, और घटना स्थल पर एक स्मारक बनवाकर शरणागत वत्सल भगवान महावीर की मूर्ति प्रतिष्ठित की। उस प्रदेश के श्रद्धालु लोग उसे बड़ी श्रद्धा से पूजते तथा कार्यार्थी यात्रिकगण सार्थवाह आदि अपनी यात्रा की निर्विघ्नता के लिए भगवान का शरण लेकर आगे बढ़ते थे यह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ही भगवान महावीर का स्मारक मंदिर आगे जाकर जैनों का "चमरोत्पात"[१] नामक तीर्थ बन गया, जिसका श्रुतकेवली भद्र बाहु स्वामी ने आचारांग निर्युक्ति में स्मरण-वन्दन किया है।

चमरोत्पात तीर्थ, आज हमारे विच्छिन्न (भूले हुए) तीर्थों में से एक है, यह स्थान आधुनिक मिर्जापुर जिले के एक पहाड़ी प्रदेश में था, ऐसा हमारा अनुमान है।

(८) शत्रुञ्जय तीर्थ—

शत्रुञ्जय आज हमारा सर्वोत्तम तीर्थ माना जाता है। इसका माहात्म्य गाने में शत्रुञ्जय माहात्म्यकार ने कोई उठा नहीं रक्खा, यह पर्वत भगवान ऋषभदेव का मुख्य विहार क्षेत्र और भरत चक्रवर्ती का सुवर्णमय चैत्य निर्माण का स्थान माना गया है। परन्तु हमारे प्राचीन साहित्य सूत्रादि में इसका विशेष विवरण नहीं मिलता, ज्ञाता धर्मकथाङ्ग के सोलहवें अध्ययन में पाँच पांडवों के शत्रुञ्जय पर्वत पर अनशन कर निर्वाण प्राप्त करने का उल्लेख मिलता है, इसके अतिरिक्त अन्तकृद् दशांग सूत्र में भगवान नेमिनाथजी के अनेकों साधुओं के शत्रुञ्जय पर्वत पर तपस्या द्वारा मुक्ति पाने का वर्णन मिलता है, इससे इतना तो सिद्ध है कि शत्रुञ्जय पर्वत हजारों वर्षो से जैनों का सिद्ध क्षेत्र बना हुआ है और यह स्थान भगवान ऋषभदेव का विहार स्थल न मानकर नेमिनाथ का तथा उनके श्रमणों का विहार क्षेत्र मानना विशेष उपयुक्त होगा।

आवश्यक निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, आदि से यह प्रमाणित होता है कि भगवान् ऋषभदेव उत्तर-पूर्व, पश्चिम भारत के देशों में ही विचरे थे, दक्षिण भारत में अथवा सौराष्ट्र भूमि में वे कभी नहीं पधारे, जैन शास्त्रोक्त भारतवर्ष के नक्शे के अनुसार आज का

---

१. चमरेन्द्र ने शक्रेन्द्र पर चढ़ाई करने के विषय पर भगवती सूत्र में विस्तृत वर्णन मिलता है, परन्तु उसमें चमरोत्पात के स्थल पर स्मारक बनने और तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध होने की सूचना नहीं है, मालूम होता है भगवान महावीर के प्रवचन का निर्माण होने के समय तक वह स्थल जैन तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध नहीं हुआ था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सौराष्ट्र ऋषभदेव के समय में जलमग्न होगा अथवा तो एक अन्त-रीय होगा, इसके विपरीत नेमिनाथ के समय में यह सौराष्ट्र भूमि समुद्र के बीच होते हुए भी मनुष्यों के बसने योग्य हो चुकी थी, इसी कारण से जरासंघ के आतंक से बचने के लिए यादवों ने इस प्रदेश का आश्रय लिया था, तथा इन्द्र के आदेश से उनके लिये कुबेर ने वहाँ द्वारिका नगरी का निवेश किया था। भगवान् नेमिनाथ ने उसी द्वारिका के बाहर रैवतक पर्वत के समीप प्रव्रज्या ली थी और बहुधा इसी प्रदेश में विचरे थे, इस वास्तविक स्थिति को दृष्टि में रखते हुए सौराष्ट्र प्रदेश तथा उज्जयन्त (गिरनार) और शत्रुञ्जय पर्वत भगवान नेमिनाथ के विहार क्षेत्र मानेंगे तो हम वास्तविकता के अधिक समीप रहेंगे।

(६) मथुरा का देव निर्मित स्तूप—

मथुरा के देव निर्मित स्तूप का यद्यपि मूल आगमों में उल्लेख नहीं मिलता, तथापि छेद-सूत्रों तथा अन्य सूत्रों के भाष्य, चूर्णि आदि में इसके उल्लेख मिलते हैं, इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा गया है कि 'मथुरा नगरी के बाहर वन में एक क्षपक (तपस्वी जैन साधु) तपस्या कर रहा था, उसकी तपस्या और संतोषवृत्ति से वहाँ की वन देवता तपस्वी-साधु की तरफ भक्ति विनम्र हो गई थी। प्रतिदिन वह साधु को वन्दना करती और कहती मेरे योग्य कार्य-सेवा फरमाना, क्षपक कहता मुझे तुम जैसी अविरत देवी से कुछ कार्य नहीं। देवी जब भी क्षपक को कार्य सेवा के लिये वही वाक्य दोहराती तो क्षपक भी अपनी तरफ से वही उत्तर दिया करता था। एक समय देवी के मन में आया, तपस्वी बार-बार मुझे कोई कार्य न होने का कहा करते हैं, तो अब ऐसा कोई उपाय करूँ ताकि ये मेरी सहायता पाने के इच्छुक बनें। उसने मथुरा के निकट एक बड़े विशाल चौक में रात भर में एक बड़ा स्तूप खड़ा कर दिया, दूसरे दिन उस स्तूप को जैन तथा बौद्ध धर्म के अनुयायी अपना-अपना मानकर उसका कब्जा करने के लिये तत्पर हुए। जैन, स्तूप को अपना बताते थे तब बौद्ध अपना। स्तूप में लेख अथवा किसी सम्प्रदाय की देव मूर्ति न होने के कारण, उसने जैन बौद्धों के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीच झगड़ा खड़ा कर दिया। परिणाम स्वरूप दोनों सम्प्रदायों के नेता न्याय के लिये राजा के पास पहुँचे और स्तूप का कब्जा दिलाने की प्रार्थनाएं कीं। राजा तथा उसका न्याय विभाग, स्तूप जैनों का है अथवा बौद्धों का इसका निर्णय नहीं दे सके।

जैन संघ ने अपने स्थान में मिलकर विचार किया कि यह स्तूप दिव्य शक्ति से बना है और देव साहय्य से हो किसी सम्प्रदाय का कायम हो सकेगा। संघ में देव सहायता किस प्रकार प्राप्त की जाय, इस बात पर विचार करते समय जानने वालों ने कहा, वन में अमुक क्षपक के पास वन देवता आया करतो है, अतः क्षपक द्वारा उस देवता से स्तूप प्राप्ति का उपाय पूछना चाहिये। संघ में सर्वसम्मति से यह निर्णय हुआ कि दो साधु क्षपक मुनि के पास भेजकर उनके वन देवता की इस विषय में सहायता मांगी जाय।

प्रस्ताव के अनुसार श्रमण युगल क्षपक मुनि के पास गया और क्षपकजी को संघ के प्रस्ताव से वाकिफ किया। क्षपक ने भी यथा शक्ति संघ का कार्य सम्पन्न करने का आश्वासन देकर आए हुए मुनियों को विदा किया।

नित्य नियमानुसार बन देवता क्षपक के पास आई और वन्दन पूर्वक कार्य सेवा सम्बन्धी नित्य की प्रार्थना दोहराई। क्षपक ने पूछा एक कार्य के लिये तुम्हारी सलाह आवश्यक है, देवता ने कहा— वह कार्य क्या है ? क्षपक बोले— महीनों से मथुरा के देव निर्मित स्तूप के सम्बन्ध में जैन बौद्धों के बीच झगड़ा चल रहा है, राजा का न्यायाधिकरण भो परेशान हो रहा है, पर इसका निर्णय नहीं होता, मैं चाहता हूँ तुम कोई ऐसा उपाय बताओ और सहाय्य करो कि यह स्तूप सम्बन्धी-झगड़ा तुरन्त मिटे और स्तूप जैन सम्प्रदाय का प्रमाणित हो।

वन देवता ने कहा—तपस्वीजी महाराज, आज मेरी सेवा की आवश्यकता हुई न ! तपस्वी बोले—अवश्य, यह कार्य तो तुम्हारी सहानुभूति से ही सिद्ध हो सकेगा।

देवी ने कहा—आप अपने संघ को सूचित करें कि वह आयन्दा राजसभा में यह प्रस्ताव उपस्थित करें "यदि स्तूप पर स्वयम् श्वेत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ध्वज फरकने लगे तो स्तूप जैनों का समझा जाय और लाल ध्वज फरकने पर बौद्धों का।''

क्षपक मुनि ने मथुरा जैन संघ के नेताओं को अपने पास बुलाया और वन देवतोक्त प्रस्ताव की सूचना की। संघनायकों ने न्यायाधिकरण के सामने वैसा ही प्रस्ताव उपस्थित किया। राजा तथा न्यायाधिकारियों को प्रस्ताव पसन्द आया और बौद्ध नेताओं से इस विषय में पूछा, बौद्धों ने भी प्रस्ताव को मञ्जूर किया।

राजा ने स्तूप के चारों ओर रक्षक नियुक्त कर दिये, कोई भी व्यक्ति स्तूप के निकट तक न जाय, इसका पूरा-पूरा बन्दोबस्त किया इस व्यवस्था और प्रस्ताव से नगर भर में एक प्रकार का कौतुक मय अद्भुत रस फैल गया। दोनों सम्प्रदाय के भक्त-जन अपने-अपने इष्ट देवों का स्मरण कर रहे थे, तब निरपेक्ष नगर जन कब रात बीते और स्तूप पर फहराती हुई ध्वजा देखें, इस चिन्ता से भगवान् भास्कर से जल्दी उदित होने की प्रार्थनायें कर रहे थे।

सूर्योदय होने के पूर्व ही मथुरा के नागरिक हजारों की संख्या में स्तूप के इर्द गिर्द स्तूप की ध्वजा देखने के लिये, एकत्रित हो गये, सूर्य के पहले से ही उसके सारथी ने स्तूप के शिखर पर दण्ड तथा ध्वज पर प्रकाश फेंका, जनता को अरुण प्रकाश में सफेद वस्त्र सा दिखाई दिया, जैन जनता के हृदय में आशा की तरंगें बहने लगीं। इसके विपरीत बौद्ध-धर्मियों के दिल निराशा का अनुभव करने लगे, सूर्य देवने उदयाचल के शिखर से अपने किरण फेंककर सबको निश्चय करा दिया कि स्तूप के शिखर पर श्वेत ध्वजा फरक रही है, जैन धर्मियों के मुखों से एक साथ "जैनम् जयति शासनम्" की ध्वनि निकल पड़ी और मथुरा के देव निर्मित स्तूप का स्वामित्व जैन संघ के हाथों में सौंप दिया गया।

मथुरा स्थित देव निर्मित स्तूप को उत्पत्ति का उक्त इतिहास हमने सूत्रों के भाष्यों, चूर्णियां और टीकाओं के भिन्न-भिन्न वर्णनों को व्यवस्थित करके लिखा है, आचार्य–जिनप्रभ सूरि कृत मथुरा कल्प में पौराणिक ढंग से इस स्तूप का विशेष वर्णन दिया है,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिसका संक्षिप्त सार पाठकगण के अवलोकनार्थ नीचे दिया जाता है—

'श्री सुपार्श्वनाथ जिनके तीर्थवर्ती धर्म घोष और धर्मरुचि नामक दो तपस्वी मुनि एक समय विहार करते हुए मथुरा पहुँचे उस समय मथुरा की लम्बाई बारह योजन तथा विस्तार नव योजन परिमित था। उसके चारों तरफ दुर्ग बना हुआ था और पास में दुर्ग को नहलाती हुई यमुना नदी बह रही थी, मथुरा के भीतर तथा बाहर अनेक कूप बावड़ियाँ बनी हुई थीं। नगरी गृह पंक्तियों, हाट बाजारों और देव मन्दिरों से सुशोभित थी, इसकी बाह्य-भाग-भूमि अनेक वनों, उद्यानों से घिरी हुई थी, तपस्वी धर्म घोष, धर्मरुचि मुनि युगल ने मथुरा के 'भूत रमण' नामक उद्यान में चातुर्मासिक तप के साथ वर्षा चातुर्मासिक की स्थिरता की, मुनियों के तप-ध्यान; शांति आदि गुणों से आकर्षित होकर उपवन की अधिष्ठात्री 'कुबेरा' नामक देवी उनके पास रात्रि के समय जाकर कहने लगी मैं आपके गुणों से बहुत ही सन्तुष्ट हूँ, मुझ से वरदान मांगिये, मुनियों ने कहा हम निस्संग श्रमण हैं, हमें किसी भी पदार्थ की इच्छा नहीं, यह कहकर उन्होंने 'कुबेरा' को धर्म का उपदेश देकर जैन धर्म की श्रद्धा कराई।

चातुर्मास्य की समाप्ति के लगभग कार्तिक सुदि अष्टमी को तपस्वियों ने अपने निवास स्थान की स्वामिनी जानकर कुबेरा को कहा—हे श्राविके! चातुर्मास्य पूरा होने आया है हम यहाँ से चातुर्मास्य की समाप्ति होते ही विहार करेंगे, तुम जिनदेव की पूजा भक्ति तथा जैन धर्म की उन्नति में सहयोग देते रहना। देवी ने तपस्वियों को वहीं ठहरने की प्रार्थना की परन्तु साधु का एक स्थान पर ठहरना आचार विरुद्ध बताकर उसकी प्रार्थना को अस्वीकृत कर दिया। कुबेरा ने कहा यदि आपका यही निश्चय है, तो मेरे योग्य धर्म कार्य का आदेश फरमाइये, क्योंकि देव दर्शन अमोघ होता है। साधुओं ने कहा—यदि तेरा आग्रह है, तो हमें संघ के साथ मेरू पर्वत पर ले जाकर जिन चैत्यों का वन्दन करा दे, देवी ने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहा आप दो को मैं वहां ले जा सकती हूँ। मथुरा का संघ साथ में होगा तो मुझे भय है कि मिथ्यादृष्टि देव मेरे गमन में विघ्न करेंगे। साधु बोले—यदि संघ को वहां ले जाने की तेरी शक्ति नहीं है तो हम दो को वहां जाना उचित नहीं है। हम शास्त्र बल से ही मेरु स्थित जिन चैत्यों का दर्शन वन्दन करेंगे। तपस्वियों के इस उक्त कथन को सुनकर लज्जित सी होकर कुबेरा बोली, भगवन् यदि ऐसा है तो मैं स्वयम् जिन प्रतिमाओं से शोभित मेरू पर्वत का आकार यहां बना देती हूँ, वहां पर संघ के साथ आप देव-वन्दन कर लें, साधुओं ने देवी की बात को स्वीकार किया, तब देवी ने सुवर्णमय नाना रत्न शोभित, अनेक देव पारिवारित, तोरण ध्वज मालाओं से अलंकृत, जिसका शिखर छत्र-त्रय से सुशोभित है ऐसा रात भर में स्तूप निर्माण किया जो मेरू पर्वत की तरह तीन मेखलाओं से सुशोभित था, प्रत्येक मेखला में प्रतिदिग् सम्मुख पंच वर्ण रत्नमय प्रतिमाऐं सुशोभित थीं, मूल नायक के स्थान पर भगवान् सुपार्श्वनाथ का बिंब प्रतिष्ठित था।

प्रभात होते ही लोग स्तूप के पास एकत्र हुए और आपस में विवाद करने लगे। कोई कहते थे वासुकि नाग लंछन वाला स्वयंभू देव हैं तब दूसरे कहते थे शेषशायी भगवान् नारायण हैं इसी प्रकार कोई ब्रह्मा, कोई धरणेन्द्र (नागराज), कोई सूर्य, तो कोई चन्द्रमा कहकर अपनी जानकारी बता रहे थे। बौद्ध कहते थे यह स्तूप नहीं किन्तु 'बुद्धाण्डक' है, इस विवाद को सुनकर मध्यस्थ पुरुष कहते थे वह दिव्य शक्ति से बना है, और दिव्य शक्ति से ही इसका निर्णय होगा, तुम आपस में क्यों लड़ते हो। अपने-अपने इष्टदेव को वस्त्र पटपर चित्रित करवा कर निज-निज मंडली के साथ ठहरो, जिसका स्तूप स्थित देव होगा उसीका चित्र पट रहेगा, शेष व्यक्तियों के पट्ट-स्थित देव भाग जायेंगे। जैन संघ ने भी सुपार्श्वनाथ का चित्रपट बनवाया, बाद में अपनी मण्डलियों के साथ चित्रित चित्रपटों की पूजा करके सब धार्मिक संप्रदाय वाले उनकी भक्ति करते। अपने-अपने पट सामने रखकर नवम दिन की रात्रि का समय था, सभी संप्रदायों के भक्तजन अपने-अपने ध्येय देव के गुणगान कर रहे थे। बराबर अर्ध रात्रि व्यतीत हुई तब प्रचण्ड

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवन प्रारम्भ हुआ, पवन से तृण रेती उड़े इसमें तो बड़ी बात नहीं थी, परन्तु उसकी प्रचण्डता यहां तक बढ़ चली कि उसमें पत्थर तक उड़ने लगे, तब लोगों का धैर्य टूटा। वे प्राण बचाने की चिन्ता से वहाँ से भागे, लोगों ने अपने-अपने सामने जो देव-पूजा पट्ट रक्खे थे वे लगभग सबके सब प्रचण्ड पवन में विलीन हो गये, केवल सुपार्श्वनाथ का एक पट वहाँ रह गया, हवा का बवण्डर शांत हुआ लोग फिर एकत्रित हुए और पार्श्वनाथ का पट देखकर बोले ये अरिहंत देव हैं और यह स्तूप भी इसी देव की मूर्तियों से अलंकृत है, लोग उस पट को लेकर सारे मथुरा नगर में घूमे, और तब से 'पट यात्रा' प्रवृत्त हुई।

'इस प्रकार धर्मघोष तथा धर्मरुचि मुनि मेरू पर्वताकार देव निर्मित स्तूप में देव वन्दन कर तथा तीर्थ प्रकाश में लाकर, जैन संघ को आनन्दित कर मथुरा से विहार कर गए और क्रमशः कर्म-क्षय कर संसार से मुक्त हुए। 'कुबेरा देव स्तूप की तब तक रक्षा करती रही, जबकि पार्श्वनाथ का शासन प्रचलित हुआ'।

एक समय भगवान् पार्श्वनाथ विहार क्रमसे मथुरा पधारे, और धर्मोपदेश करते हुए भावि दुष्षमा काल के भावों का निरूपण किया। पार्श्वनाथ के वहां से विहार करने के बाद कुबेरा ने संघ को बुलाकर कहा, भविष्य में समय कनिष्ट आने वाला है, कालानुभाव से राजादि शासक लोग लोभग्रस्त बनेंगे, और इस सुवर्णमय स्तूप को नुकसान पहुँचायेंगे, अतः स्तूप को ईटों के परदे से ढाँक दिया जाय, भीतर की मूर्तियों को पूजा मैं अथवा मेरे बाद जो नयी कुबेरा उत्पन्न होगी वह करेगी। संघ इष्ट का मय स्तूप में भगवान् पार्श्वनाथ की प्रस्तरमय मूर्ति प्रतिष्ठित करके पूजा किया करें। देवी की बात भविष्य में लाभदायक जानकर संघ ने मान्य की और देवी ने विचारित योजनानुसार मूल स्तूप को ईंटों के स्तूप से ढांप दिया।'

इष्ट का मय स्तूप पुराना हो जाने से उसमें से ईंटें निकलने लगीं थीं, इसलिए संघ ने पुराणे स्तूप को हटाकर नया पाषाण मय स्तूप बनवाने का निर्णय किया, परन्तु कुबेरा ने स्वप्न में कहा—

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

इष्टकामय स्तूप को अपने स्थान से न हटाइये इसको मजबूत करना हो तो ऊपर पत्थर का खोल चढवा दो, संघ ने वैसा ही किया आज भी देव निर्मित स्तूप को अदृश्य रूप से देव पूजते हैं, तथा इसकी रक्षा करते हैं, हजारों प्रतिमाओं से युक्त देवलां, रहने के स्थानों, सुन्दर गन्ध कुटी, तथा चेलनिका अंबा अनेक क्षेत्रपाल आदि के नियमां से यह स्तूप सुशोभित है।

'पूर्वोक्त बप्प भट्टि सूरि ने जो कि ग्वालियर के राजा आम के धर्म गुरु थे, मथुरा में वि. सं. ८२६ में भगवान् महावीर का बिंब प्रतिष्ठित किया।'

मथुरा के देव निर्मित स्तूप की उत्पत्ती का निरूपण शास्त्रीय प्रतीकों तथा मथुरा कल्प के आधार से ऊपर दिया गया है, कल्पोक्त वर्णन अतिशयोक्ति पूर्ण हो सकता है, परन्तु एक बात तो निश्चित है कि यह स्तूप अति प्राचीन है, और भारत में विदेशियों के आने के समय यह स्तूप जैनों का एक महिमास्पद तीर्थ बना हुआ था, वर्ष के अमुक समय में यहाँ स्नान महोत्सव होता था। और उस प्रसंग पर भारतवर्ष के कोने-कोने से तीर्थ यात्रिक यहां एकत्र होते थे, ऐसा प्राचीन साहित्य के उल्लेखों से सिद्ध होता है। इस बात के समर्थन में निशीथभाष्य की एक गाथा तथा उसकी चूर्णि का उद्धरण नीचे देते हैं—

'थूभ मह सड्ढि समणी बोहिय हरणंच निवसुयातावे।
मग्गेणय अक्कंदे कयंमि युद्धेण मोएत्ति ॥

अर्थात्—'मथुरा के स्तूप महोत्सव पर जैन श्राविकाएं तथा जैन साध्वियें जा रही थीं। मार्ग में बोधिक लोग उन्हें घेर कर अपने साथ ले चले, आगे जाते मार्ग के निकट आतापना करते हुए, एक राजपुत्र प्रव्रजित जैन मुनि को देखा। उन्हें देखते ही यात्रार्थियों ने आक्रन्दन (शोर) किया, जिसे सुनकर मुनि उनकी तरफ आये, और बोधिकों से युद्ध कर श्राविकाओं को उनके पंजे से छुडाया।'

उक्त गाथा की विशेष चूर्णि नीचे लिखे अनुसार है—

'महुराए नयरीए थूभो देव निम्मिओ तस्स महिमा निमित्तं सड्ढी तो–समणीहिं समं निग्गयातो रायपुत्तो तत्त्व अदूरे आयावंतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिट्ठइ । तासङ्घी समणीतो बोहियेहिं गहियातो तेणं तेणं अगणियातो ता ताहिं तं साहुं दढ्ढूणं अक्कं दो क ओ ततो रायपुत्तेण साहुणा युद्धं दाऊण मोईयातो, बोधिका अनार्यम्लेच्छाः । (नि. वि.चू. २६८-२)'

अर्थात् चूर्णिका भावार्थ गाथा के नीचे दिये हुए अर्थ में आ चुका है, इसलिए चूर्णि का अर्थ न लिखकर चूर्णिकार के अन्तिम शब्द 'बोधिक' शब्द पर ही थोड़ा सा ऊहापोह करेंगे ।

जैन सूत्रों के भाष्यादि में 'बोहिया' यह शब्द बार-बार आया करता है, प्राचीन संस्कृत टीकाकार बोहिय शब्द का संस्कृत 'बोधिक' शब्द बनाकर कहते हैं—बोधिक पश्चिम दिशा के म्लेच्छों को कहते हैं । प्राकृत टीकाकार कहते हैं—मनुष्यों का अपहरण करने वाले म्लेच्छ बोहिय कहलाते हैं, हमारा अनुमान है कि 'बोधिक' अथवा 'बोहिय' कहलाने वाले लोग बोहीमिया के रहने वाले विदेशी थे, वे यूनानियों के भारत पर के आक्रमण के समय भारत की पश्चिम सरहद पर इधर-उधर पहाड़ी प्रदेशों में फैल गये थे, मौर्यचन्द्र गुप्त के शासन काल में भारत के पश्चिम तथा उत्तर प्रदेशों में घुस कर ये मनुष्यों को पकड़-पकड़ कर ले जाते थे, और विदेशों में पहुँच कर गुलाम खरीददारों के हाथ बेच दिया करते थे । उपर्युक्त हमारा अनुमान ठीक हो तो इसका अर्थ यही हो सकता है कि मथुरा का स्तूप मौर्य राज काल का होना चाहिये ।

मथुरा का देव निर्मित स्तूप आज भी मथुरा के कंकाली टीले के रूप में भग्न अवस्था में खड़ा है, इसमें से मिली हुई कुषाण कालीन जैन मूर्तियाँ, आयाग पट पर जैन साधुओं की मूर्तियों आदि एतिहासिक साधन आज भी मथुरा तथा लखनऊ के सरकारी संग्रहालयों में सुरक्षित हैं । इन पर राजा कनिष्क, हुविष्क, वासुदेव के राज्य काल के लेख भी उत्कीर्ण हैं, इससे ज्ञात होता है कि यह तीर्थ विक्रम की दूसरी शताब्दी तक उक्त दशा में था, उत्तर भारत में विदेशियों के आक्रमणों से खास कर श्वेत हूणों के समय में जैन-श्रमण तथा जैन-गृहस्थ सामूहिक रूप से दक्षिण भारत की तरफ राजस्थान, मेवाड़, मालवा आदि में चले गये,और उत्तर भारत के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्य जैन तीर्थ रक्षण के अभाव से बेरान हो गए हैं, जिनमें मथुरा का देव निर्मित स्तूप भी एक है।

(१०) सम्मेतशिखर (तीर्थ)

सूत्रोक्त जैन तीर्थों में सम्मेतशिखर (पारसनाथ हिल) का नाम भी परिगणित है। आवश्यक निर्युक्तिकार कहते हैं कि ऋषभदेव, वासुपूज्य, नेमिनाथ और वर्द्धमान (महावीर) इन चार तीर्थंकरों को छोड़ शेष अवसर्पिणी समा के बीस तीर्थङ्कर सम्मेत शिखर पर निर्वाण हुए थे, इस दशा में सम्मेतशिखर को तीर्थंकरों की निर्वाण-भूमि होने के कारण तीर्थ कहते हैं।

पन्द्रहवीं शताब्दी में निगम गच्छ के प्रादुर्भावक आचार्य इन्द्रनंद्दी के बनाये हुए निगमों में एक निगम सम्मेत शिखर के वर्णन में लिखा है जिसमें इस तीर्थ का बहुत ही अद्‌भुत वर्णन किया है। आज से ४० वर्ष पहले ये निगम पोडाय (कच्छ) के भण्डार में से मंगवाकर हमने पढ़े थे।

ऊपर लिखे सूत्रोक्त दश प्राचीन तीर्थों के अतिरिक्त वैभार-गिरि, विपुला चल, कोशला की जीवित स्वामी प्रतिमा अवन्ति की जीवित स्वामी प्रतिमा आदि अनेक प्राचीन पवित्र तीर्थों के उल्लेख सूत्रों के भाष्य आदि में मिलते हैं, परन्तु उन सबका एक निबन्ध में निरूपण करना अशक्य जानकर उन्हें छोड़ देते हैं।

आचार्य भिक्षु स्मारक ग्रन्थ के सम्पादकों की प्रार्थना को लक्ष्य में लेकर, शारीरिक स्वास्थ्य ठीक न होने की दशा में भी प्राचीन तीर्थों के विषय में कुछ पृष्ठ लिखने का साहस किया है, इस दशा में इस लेख में रही हुई त्रुटियों को पाठक गण क्षन्तव्य गणेंगे। इस आशा के साथ तीर्थ विषयक लेख यहां पूरा किया जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्री ॥

श्रीशत्रुँजय तीर्थमार्ग चैत्यपरिपाटी

मेडता से शत्रुञ्जय तक

दुहाः—

श्री जिन वदनांबुज सुरी, सुणि सरसति रंगरेलि।
मुझ मन मानस झीलती, करि मुख कमले केलि ॥१॥
ब्रह्मसुता मुझ मुख वसी वध्योते वचन विलास।
जिन गुण माला गुंथतां, अधिक थयो उल्लास ॥२॥

ढाल सोरठिः—

मरुधर धरा भाल ललाम, मेदिनीपुर अति अभिराम।
उत्तंग तोरण प्रासाद, मांडे सरग समोवडिवाद ॥३॥
राजा तिहां अरि करि सिंघ, जयवंतो जसवंत सिंघ।
तिहाँ वसे रे वडा व्यवहारी, पुन्यवंता पर उपगारी ॥४॥
तिण मांहि धुरंधर धीर हरषाउत गुण गंभीर।
संघवी नेमीदास सुजाण सामीदास विमलदासजांण ॥५॥
बंधव मिली करे विचार, निसुणी शेत्रुंजय अधिकार।
पूरव पद उज्वल कीजे, लक्षमीरो लाहो लीजे ॥६॥
इम मनह मनोरथ कीधो, संघपतिनो बीडो लीधो।
जिन पूजी करे मंडाण, देशमाहि कराव्यउं जाण ॥७॥
शुभ मुहूर्त शकुन प्रमाण, पहिलुं हिव कीध प्रयाण।
संघ मिलिउ बहुतस मेलो, जालोर थयो सहु भेलो ॥८॥
पूज्या तिहां पंच विहारि जिन फाग रमै नर नारि।
सोवन गिरि वीर जुहार्या, भवपातक दूर निवार्या ॥९॥
संघ केरा वंछित फलिआ, मुनिजन पणि साथे मिलिआ।
साचोर थिराद्रे जइये, प्रभु पूजी निर्मल थइये ॥१०॥
राधनपुर ने वलि समिइ, अरिहंते कचित्ते नमिइं।
हवि पास पूजण जण रसिआ, एक एक थी आगल धसिया ॥११॥

ढाल राग काफीः—

श्री संखेसर पास जी रे लाल, तुं प्रभु त्रिभुवन तात
मन मोह्युं रे।
महिमां महिमा महमहे रे लाल, जगजन आवइ जात मन० ॥१२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आज दिवस धन माहरू रे लाल, देख्यो तुझ दीदार ।। मन०।।
आधि व्याधि अलगी टली रे लाल, भरिओ सुकृत भंडार । आजदि०।

केशर चंदन कुंकुमांरे लाल, अगर अबीर कपूर । मन०
नरनारी पूजा करे रे लाल, भावना भावइं भूरि आज दि० ।।१३।।

हवि विमलाचल वांदवा रे लाल, अलजइउ सहु संघ । मन०
मांडल वीरमगाम मांरे लाल, तीरथ नमिआं तुंग
मन आज दि० ।।१४।।

धंधु का नांदे दुरां धोलका रे लाल भेट्या तिहां भगवंत । मन०
गूजर मरहठ मालवी रे लाल मिलिउ संघ अनंत । आज दि० ।।१५।।

दुहा:—

काठी भय दूरे करे, रखवाला भडभीम ।
हय रथ पायक परिवर्यो, संघ पहुतो गिरि सीम ।।१६।।

ढाल:—

देखी डूंगर दूर थी, पसरे प्रेम पडूर ।।जिनजी ।।
पालीताणे ऊतर्यो, वागां मंगल तूर ।।१७।।

विमलाचल मुज मन वस्यो, ज्यूं मधुकर अरविंद ।।जि०।।
दोइ दुर्गति दूरे करे, अविहडद्य आनंद ।।जि०।।१८।।आंकणी

चैत्र मासरा की तिथै, प्रणम्या ऋशभना पाय ।।
चरचे चंदन फूल स्यूं, अंगे जिन गुण गाय ।। जि०।।१९।।वि०

मरुदेवी सुत मांगिइ, मुक्तिदान तुम्ह पास ।।जिन।।
आश पूरवो दासनी, आपु अविचलवास ।।जि०।।२०।। वि०

पुंडरीक गणधर नम्या, प्रतिमा संखन पार ।।जि०।।
डावे जिमणे देहु रे, सुमिरूं बारम्बार ।२१।।

रायण तल संघ पद लियो, उच्छव करे अनेक ।।जि०।।
सिद्ध क्षेत्र फरस्यो सहू, संघ वलि उसुविवेक ।।जि०।।२२।।

सहस जीभ मुख जो हुवै, कोडि वरस रो आय ।।जि०।।
आप अमर गुरु आइ सइ, गिरिगुण कह्या न जायः
।।जि०।।२३।।वि०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढालः—

संघ भक्ति संघवी करे, लाहण द्ये बहु लोक।
मन मनोरथ सवि फल्याए, याचक जन संतोष ॥आ०॥
देइ रूपे आरोक ॥मनो०॥२४॥
यात्रा करी पाछा वल्याए, आव्या अहिम्मदावाद ॥म०॥
चिंतामणि वीरादि कू ए प्रणमीजे प्रासाद ॥म०॥२५॥
जंगम तीरथ जागतो ए, विजयसिंह सूरिंद ॥म०॥
आचारजपण आविया, वांद्या मन आनंद ॥म०॥२६॥
सिद्धपुरे सरोतरे रोह मुडथला गाम ॥म०॥
कास द्रह ने इनांदिइ ए ल्ये वंदु जिन नाम ॥म०॥२७॥
अर्बुद शिखर अचल गढे, श्री जुगादि करू सेव ॥म०॥
कुमर विहार निहालिइ ए, देलवाडे बहु देव ॥२८॥
विमल वस्तग नां देहुरां ए देखत त्रपति न होय ॥म०॥
मानव गति मानइ नहीं सुरगति साचीए सोय ॥२९॥
अर्बुद यात्र करी वल्यो ए शिवपुर आव्यो संघ ॥मनो०॥
तीर्थ पूज करी तिहांए पुहतो नियपुर रंग ॥३०॥

ढालः—

इणपरि कुसले जिनधर आवइ, मोती थाल वधावइ जी।
सोहव मिलि-मिलि मंगल गावहिं, धन जे यात्र करावइ जी ॥३१॥
नेमीदास सामीदास, सोभागी, विमलदास कुल दीवो जी।
कृष्णदास धर्मदास मनोहर, सपरिवार चिरजीवो जी ॥३२॥
इम तीरथ संखेपइ कहिया विच विचे के पणि रहिया जी।
प्रभु गुण मुक्त हियडइ गह गहिआ, सुरनर किन्नर महिआ जी ॥३३॥
तीरथमाल भणइ जे भावइ, ते सुख संपद पावइ जी।
रोग सोग नेडा तस नावइं शिवसुन्दरि घर ल्यावइ जी ॥३४॥

कलशः—

इय राग नाग रसेंदु १६८६ वरसइ चैत्य परिपाटी करी।
भव भीड भागी, सुमति जागी त्रिजग जय ललना खरी॥
तपगच्छपति विजयदेव मुणिवर विजयसिंह मणोरमो।
जस सोम कोविद सीस पभणइ विमलगिरि अहनिसि नमो ॥३५॥

॥ इति श्री चैत्य परिपाटी स्तवनं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीजालोर नगर चैत्यपरिपाटी

कर्ता-नगागणि–रचनासे १६५१

श्री गुरु चरण नमी करी, सरसति समरों जइ।
कवियण माडी तुं भली, निरमल मति दी जइ॥
हरषधरी हुँ रचस्युं हेव, वरचिय परिवाडी।
मन वंछित सुख वेलितणी, वाधइ वर वाडी॥१॥
सोहइ जंबूदीप भलुं, जिम सोवन थाल।
लांबु जोयण लाख एक, तेतु सुविसाल॥
ते वचि मेरु महीधरु, जोयण लख तुंग।
भरत षेत्र दक्षिण दिसि, तेहथी अतिचंग॥२॥
मध्यम खंडि नयर घणां नवि जाणुं पार।
श्री जालुर नयर भलुं, लखिमी भंडार॥
सोवन गिरि पासइं भलुं, वाडी वन सोहइ।
वनस पती बहु जाती भाति, दीठ्ठइ मन मोहइ॥३॥
मढ मंदिर पायार सार, धनवंत निवेस।
न्याय वंत ठाकुर भलुं जाणइ सविसेस॥
सावय साविय धरम वंत, दातार अपार।
दयावंत दीसइ घणा, करता उपगार॥४॥
चंह्या चउसाल सार, चुकी बहु सोहइ।
पोषध साला च्यारि भली दीठइ मन मोहइ॥
पंचय जिणहर दीपतां, सोहइ सुविसाल।
तलिया तोरण तेज पुंज, करि झाक झमाल॥५॥

ढाल:–

हिव पहिलेरे जिण हरि त्रिसला कूंयरू।
वंदतां रे पूजंतां संकट हरूं॥
पंचाणुरे प्रतिमा सहित जिणे सरू।
वचि बइ हुंरे वीर जिणंद मनोहरू॥६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनोहर तव सार मूरति पेखतां मनउ हुलसइ ।
मुख देखि पूनिम चंद बीहतु गयण मंडलि जइ वसइ ।।७।।
अणी यालीरे ऊंची नासा दीपती, जाणुं छुके
सुय चांचू नइं जीपती ।
बे लोचनरे, अणियालां अति सुन्दरू,
सर वंगि रे वरणन हुँ के कुतु करूं । ८।।
करूं वरणन केम तोरूं, अनंत गुण नुं तू थणी ।
मुखि एक जीहा थंव बुद्धिकेम गुण जाणुं गणी ।।९।।
मन मोहनरे जगबंधव जगनायक ।
जगजीवनरे भवि जनने सुखदायक ।
तुझ दरिसनि रे मनवंछित सुख पामइ,
चिंतामणिरे काम कुंभ नवि कामीइ ।।१०।।
कामीइ जे जे अरथ सघला वीर जिन तुझ नाम थी ।
पामीइ कवियण कहइ भवियण नमइं जे तुझ भाव थी ।।११।।

ढाल:—

हिव बीजइ जिण मंदिरि जास्युं भावथी रे, अति मोटइ मंडाणि ।
थुणस्युं रे नेमि जिणेसर राजिउ रे ।।१२।।
समुद्र विजय भूपति कुल गयण दिणे सरुरे, मात सिवादेवि पूत ।
सोहइ रेर राजीमती वर सुंदरु रे ।।१३।।
मस्तकि मुकट विराजइ हेम रयण तणूं रे, काने कुण्डल सार ।
झलकइं रे झलकइं रे रवि ससि मंडल जीपतां रे ।।१४।।
हियइ हार तिम बाहि अंगद दीपता रे, अवर विभूषण सार ।
पेखीषीरे संघ सहु मनि हरषिउ रे ।।१५।।
जाणे धन धन सार सुधारस नीपनींरे, कय निज जस घनपिंड ।
सोहइरे सोहइरे नेमि जिणेसर मूरतीरे ।।१६।।
चउसय तेडोतर जिन प्रतिमा सोभतूरे नेमि जिणंद दयाल ।
वंदुरे वंदुरे भवियण भाव धरी सदारे ।।१७।।

ढाल:—

गीत गात नाटक करी नेमि भवनथीरे बलियारे ।
त्रीजइ जिण हरि मनिरलि जातां बहु संघ मिलियारे ।।१८।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जय जय संति जिरोसरू, नमतां विघन पुलायारे।
पूजतां संकट टलइं सुभध्यानिं चित लायारे
जय जय संति जिरोसरू (आंचली)।।
हथरणा उर पुर सुंदरू विस्ससेन भूपाला रे।
तस कुल कमल दिवाकरू, सयलजीव रखवाला रे।।१६।। जय जय०
एक पसूनइं कारणि, निज जीवित नवि गणिया रे।
पगि लागि सुर वीन वइ, साचा सुरपति थुणिया रे।।२०।।जय जय०
अचिरा कूखसरोवरिं, राजहंस अवतरिया रे।
तीणि अवसरि रोगादिकु श्रीजिनइं अवहरिया रे।।२१।।जय जय०
भव भय भंजन जिन तूं सुणी लंछणमसि पगि लागूं रे।
मिगपति बीहतु मिग सही। हिव मुझनइं भय भागु रे।।२२।।जय जय
तुझ गुण पार न पामीई, तूं साहिब छै मारो रे।
जे तुम सेव करई सदा, ते सुख लहइं भलेरो रे।।२३।। जय जय०
इकसत पणवीस य भली। संति सहित जिन प्रतिमा रे।
भाव धरी जे वांदसिइं, ते लहसिइ वर पदमा रे।।२४।।जय जय०

ढाल—

चउथइ जिणहरी हेव, भाव धरी घणु जास्युं अतिउलट धरीए।
नमस्युं प्रथम जिणंद, विधिपूख सदा तोन पयाहिण
स्युंकरीरा।।२५।।
नाभिभूप कुलचंद माता मरुदेवा उयरि सरोवरि हंसलु ए।
अवतरिउ जगनाह त्रिहुं नाणे करी पूरउ निरमल
गुणनिलु ए।२६।।
पढम जिणंद दयाल पढम मुणीसर पढम जिणेसर जगधणीए।
पढम भिखाचर जाणि पढम जोगीसर पढमराय
तूं बहु गुणीए।।२७।।
आदि जिरोसर देव मूरति तुमतणी भवि जन नइं सुख कारणीए।
रूपतणुं नहिं पार, तेजि त्रिभुवन-त्रिभुवन मोहीइए।।२८।।
तुं ठाकुर तुं देव तुं जगनायक जयदायक तूं जगगुरुए।
माय ताय तूं मीत परम सहोदर परम पुरुष
तूं हिरत करूए।।२६।।
एकोतरि जिणबिंब तिणि करि सोभती रिषभ देव तुझ मूरतीए।
जे वांदइं नरनारी प्रह उठी सदा, जाणेज्यो सुभमतिए।।३०।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल—

पंचम जिणहरि जायस्युं रे जिहां छे पास जिणंद।
कंकु रोल नमुं सदारे, जिम घरि कुंकम रोल ॥३१॥
जिणेसर तूं बहु महिमावंत, आंचली।
सोवनसम तुझ मूरती रे, सपत फणा मणिसोभ।
जे तुझ नाम जपइं सदारे, ते पामइं नंविखोभ ॥३२॥ जिणेसर०
सायणि डायिणी जोयणीरे, भूतप्रेत न छलंति।
रोग सोग सहु उपसमइं रे जे तुझ पूज करंति ॥३३॥ जिणेसर०
धरणराय पदमावती रे, अहो निसि सारे सेव।
ठामि ठामि तूं दीपतूं रे तुझ समु बलिउ नहिं देव ॥३४॥ जिणेसर
तुझ गुण पार न पामीइरे, तुं छह गुण भंडार।
जे तुम सेव करइं सदारे ते पामइं सुख सार ॥३५॥ जिणेसर०

ढाल—

चिइपरिवाडो जे करइं मालंतडे, प्रह ऊगमतइ सूर सुणि सुंदरि।
बोधि बीज पामइं घणुंए मालंतडे,
तस घरि संपति पूर ॥सुणि०॥३६॥
तस घरि उच्छव नवनवा ए मालंतडे, तस घरि जय जयकार।
तस घरि चिंतामणि फल्युं ए मालंतडे,
ते जाणु सुविचार ॥सुणि०॥३७
ससि रस बाण ससी (१६५१) सुणुए मालंतडे, ते संवच्छर जाणि।
भादव वदि तइया भली ए मालंतडे,
सुर गुरुवार वलाणि ॥सुणि०॥३८॥

कलस—

नयर श्री जालुर माहे चइत परिपाटी करी,
ए तवन भणतां अनइं सुणतां, विघन सब जाइं टरी।
तपगच्छनायक सुमतिदायक श्री हीर विजय सूरीसरो।
कवि कुसल वरधन सीसपभणइ नगा गणि वंछियकरो ॥३९॥
इति श्री जालुर नगर पंच जिनालय चइत्य परिपाटी स्तोत्रं
संपूर्ण ॥शुभंभवतु॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

॥ श्री ॥

श्री पाटण चैत्य परिपाटी

हर्ष विजय कृता–रचना सं. १७२९ विक्रमी

"समरीय सरसतो सामनीए, प्रणमी गुरुपाय।
पाटण चैत्य-प्रवाडि-स्तवन करतां सुख थाय ॥१॥
पाटण पुण्य प्रसिद्ध षेत्र पुण्यनुं ऋहीठाण।
जिन प्रासाद जिहां घणाये, मोटई मंडाण ॥२॥
मुझ मति अति उंमाहुलोए, जिन वंदणकेरो।
पाटण-चैत्य-प्रवाडि स्तवनं करतां हरख्यो मन मेरो ॥३॥
प्रथम पंचासर इ जाईए तिहां प्रासाद च्यार।
पंचासर जिनवर तणोए देख्यो दीदार ॥४॥
चौपन बिंब तिहां अती भलांए–वली होर विहार।
प्रतिमा त्रिण सहगुरु तणीरे मुरति मनोहार ॥५॥
तिहांथी ऋषभ जिणंद नमुंए बिंब पनर गंभारइं।
एक सो बैं बिंब अति भलां ए भमतीइं जुहारइं ॥६॥
वासपूज्य ने देहरइं ए जे जांणु बिंब च्यार।
बिंब त्रिण वखाणुं माहावीर पासइं वली ए ॥७॥
ऊँची सेरीये शांतिनाथ, प्रतिमा पंचास।
एक उपरि नमतां थकां ए पोहोचें मन आस ॥८॥
पिंपले श्रावको पार्श्वनाथ सडसठि प्रतिमा सोहें।
सडतालीस बिंब शांतिनाथ, भविअण मन मोहें ॥९॥
चिंतामणि पाडामांहि ए शांतिनाथ विराजे।
पंचवीस प्रतिमा तिहां भलि ए, देखी दुख भा जइं ॥१०॥
बीजइं देहरइं चन्द्र प्रभु, तिहां प्रतिमा वंदु।
दोसत सडसठि उपरि ए, प्रणमी पाप निकंदुं ॥११॥
सगाल कोटडो प्रासाद एक, थंभणो पार्श्वनाथ।
धर्मनाथनइं शांतिनाथ, सिवपुरी नो साथ ॥१२॥

ढाल—

खरा खोटडी मांहि, प्रासाद मनोहरू रे, के प्रासाद०।
पंच मेरु सम पंच कें भविअण भयहरूरे, के भवि० ॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टापद प्रासाद कइं चंद्रप्रभ लही रे, के चन्द्र ।।
नव सत उपरि आठ कें प्रतिमा तिहां कहीरे ।।प्रति०।।
चन्द्रप्रभु प्रासाद कें तेर जिणे सरूं रें, के तेर० ।।
पास नगीनो षट् जिन साथि दिणेसरूं रे ।।२।।
शांतिजिणंद प्रासाद, देखी मन हरषीइं रे, मन० ।
चोरासी जिनप्रतिमा तिहां किण नीरखीइँ रे, किण० ।।३।।
आदिनाथ जगनाथ नी मूरति अति भली रे अति० ।
पंचाणु तिहां प्रतिमा बंदी, मन रूली रे, बंदी० ।।४।।
त्रांगडी आ वाडा मांहि, ऋषभ सोहामणारे ऋष० ।
बिंब च्यारसे च्यार कइं तिहां जिणवर तणारे तिहां० ।।५।।
देव प्रासाद कंसारवाडे, हवे वंदीइं रे, हवे० ।
शीतल ऋषभ नमी सब, दुख निकंदीइं रे, सब० ।।६।।
प्रतिमा तेर अठासो बेहूं देहरा तणीरे, के बेहूं ।
जिन नमतां घरि लखमी होइं, अति घणी रे के लख० ।।७।।
साहना पाडा मांहि, ऋषभ सोहामणा रे, के ऋष० ।
प्रतिमा दोशत ब्यासी मने संभारिईं रे के ब्यासी० ।।८।।
वाडी पास तणो महिमा छे अति घणो रे, के महि० ।
वडी पोसालना पाडा माहि, में श्रवणे सुण्यो रे के श्रव० ।।९।।
एक सो सडतालीस तिहां, प्रतिमा अछई रे तिहां० ।
चो मुख वंदी जिन राज ऋषभनमी ई पछे रे रिष० ।।१०।।
दोसत ने पणयालीस, जिन प्रतिमा तिहां रे के जिन० ।
पंच बांधव नुं देहरूं, लोक कहें तिहां रे के लो० ।।११।।

ढाल—

देहरा सर तिहां एक देहरा सरसुं विशेष ।
सेठ भुजबलतणुं रे के दोसइ सोहामणुंए ।।१।।
नारिंग पुर वर पास, जागतो महीमा जास ।
दोशत बिंब भलांए, पणयालीस गुणनीलांए ।।२।।
त्रंमेडा वाडा मांहि, शांति नमुं उछांहि ।
पंच शत जिन वरु ए एकोत्तरे ऊपरिए ।।३।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तंबोली वाडा मझारि, सुपास नमुं सुख कारि ।
एकसोत्रीस सदाए प्रणमुं जिन मुदा ए ॥४॥
कुंभारिइं आदिनाथ, प्रतिमा एकासी साथि ।
देहरे कोरणी ए, तिहां प्रतिमा घणीए ॥५॥
सोल प्रतिमा सुख कंद, शांतिनाथ जिणंद ।
मांका महेंता तणेए पाडे सोहामणे ए ॥६॥
मणी याती महावीर, मेरु तणी परिधीर ।
च्यालीस बिंबसुंए, प्रणमुं भावस्युं ए ॥७॥
तीर्थ अनोपम एह, मुझ मन अधिक सनेह ।
दिठे ऊपजे एं, संपदा संप जइं ए ॥८॥

ढाल—

परबातीइंरे सेवो श्री शांतिनाथरे, हुँ वंदुरे प्रतिमा तेत्रीस साथिरे ।
सावाडेंरे सांमल पास सोहामणा बिंब पंचसेरे
पासे श्री जिनवर तणारे ॥१॥

जिनवर तणा ते बिंब जाणुं उपरि सत्तावन्नए, त्रेवीसमो
जिनराज वंदु मोहिउं मुझ मन्नए ।
सातमो जिन प्रासाद बीजे वंदोइं उलट धरी,
च्यालीस उपरि सात अधिक सोहे प्रतिमा तें भलो ॥२॥
सोल समोरे शांति जिणेसर जगि जयो भें सात वाडेरे,
देखी मुझ मन सुखथयो पांसठि जिनवर रे तिम वलो
कलिकुंड पासजी जीराउल रे पूरे वंछित आसजी आस पूरे
गौतम स्वामी लब्धीनो भंडार ए, सगर कुंई पांत्रीस
जिनवर पार्श्वनाथ जुहारए ।
हेबद पुरमां थूभ वांदुं जास महिमा अति घणो,
एक मनो जे सेव सारइं पुरे मनोरथ तेहतणा
वलीयार वाडेंरे प्रतिमा सोहें सातरे, मूलनायक रे शांति
जिणंद विख्यातरे ।
जोगी वाडेंरे जागतो जिन त्रेवोसमो अठावन्नस्युंरे
भविजन भावे नमो ॥४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमो ऋषभजिणंद बीजें देहरें अति सुंदरु छत्रिस प्रतिमा
तिहां वंदो नमें जास पुरंदरु बीसें छासठि ।
मल्लि जिनवर मल्लीनाथ पाडें मुदा बावन्न जिनें नें
बावन्न प्रतिमा वंदी इंते सर्वदा ॥५॥

लखीयार वाडें रे मोहन पास महिमा घणो,
बिंब त्रिणसेरे एकोत्तर तिहां किण गणो ।
श्रीमंधर रे स्वामी प्रासाद बासठि जिना बिंब तेरस्युंरे
संभव सेवो एकमना ॥६॥

एकमनां सेवो सुमति जिनवर साठि प्रतिमा सोहती ।
आठि उपर न्याय सेठ ने पाडे जन मन मोहती ॥७॥
चोखा वटीइं शांति जिनवर छेंतालीस बिंब अलंकरचां ।
दोढ से जिनसुं बलीइं पाडे ऋषभ जिन जगे जय वरचा ॥८॥

ढालः—

अबजी महिताने पाडे शोतलनाथ, प्रतिमा सडतालीस प्रतिमा दोए शांतिनाथ कसुंबोया वाडें शीतल बिंब अढार, श्रीपास जिनेसर बीजें देहरें जुहारुं, जुहारो इं जिन वरनी प्रतिमा छासठि मननें रंगें, सो प्रतिमा वायु देवना पाडामां धर्म जिनेसर संगें, चाचरीया माँ पास जिरणेसर त्रिणसें नव तिहाँ प्रतिमा परिषद पदमापो लें बत्रीस जिन फोफलीयानो महिमा सोनार वाडे सुखदायक श्री माहावीर बेंतालीस प्रतिमा पासे गुण गंभीर खेजडाने पाडे एक सोनें अडत्रीस प्रतिमा वंदुं उल्लासइं-उल्लासइं वली फोफलीया माँ पास जिरणेसर पेखुं, एकवीस प्रतिमा पासे देखुं पातिक सयल उवेखुं शंभवनाथ ने देहरे दोय शत आणुं प्रतिमा सोहँ, शान्ति जिरणेसर देहरे एकसो त्रिपन जिन मन मोहें ।

ढाल—

खजुरीइं मन मोहन पास एकसो सत्तावन श्री जिनपास वांदु मन
उल्लास तो जयो जयो ॥१॥
भाभो भाभा मांहि विराजे च्यार सें एक प्रतिमा तिहाँ छाजे
महिमा जग में गाजतो जयो ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लींमडीइं श्री शाँति जिणंद त्रिण सें सात तिहां श्री जिनचन्द
दीठइं अति आणंदतो जयो० ॥३॥
करणइं शीतल जिन जयकारी सतन वसोतिहां सारी जनमन
मोहनगारी जयो० ॥४॥
बिंब सतर सुं शांति सोहावइं बीजइं देहरइं मुझ मन भावइं
दरीसण थी दुख जायं जयो० ॥५॥
देहरा सर तिहां देहरा सरिखुं पांत्रीस प्रतिमा तिहां किण निरखुं
देखी मुझ मन हरख्युं तो जयो० ॥६॥
संघवी पोलिपास जगदीस प्रतिमा एकसो एक त्रीस पूरइं मनह
जगीस तो जयो० ॥७॥
पीतल मइं दोइं बिंब विशाल प्रतिमा तेहनी अति सुखमाल
दीसइँ झाक झमाल तो जय० ॥८॥

ढालः—

खेललव सहीं दोय प्रासादइं पास जिणेसर भेट्या साँमल पासनी
सुन्दर मूरत देखत सब दुख मेटयारे ॥१॥
भवियां भावे जिन वर वंदो श्री जिनवरने वंदण करतां होवइं
अति आणंदरे भ० ॥२॥
त्रिणसें अठोत्तर प्रतिमा सांमल पासनी पासइं महावीर पासें
ब्यासी जिन वरसुं वंदो मन उल्लासरे भ०॥३॥
देहरासर तिहां दोय अनोपम रूपसो वन मइं कांम सोवन रूप
रयणमें प्रतिमा दीसइं अति अभिरांमरे भ०॥४॥
अजुवसा पाडामां प्रतिमा सत्तोत्तर सुख दाई पीतल मेंय श्री विमल
जिणेसर वंदो मन लय लाईरे भ० ॥५॥
दोसी कुंपाना पाडामांहि ऋषभ जिणेसर सोहे सुखदायक
जिनसोल सगुणतर देखी जन मन मोहे रे भ० ॥६॥
वसावाडें दोयशत अठ्ठावीस शांति जिणेसर स्वामी नेऊं जिनसुं
दोसी वाडइं ऋषभ नमुं सिर नांमीरे भ० ॥७॥
आंबा दोसी ना पाडा मांहि मुनि सुव्रत जिनसोल पांचोटडीइं
एकसोनइं बीस ऋषभ जिणंदरंग रोल रे भ० ॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घीया पाडामां दोय देहरां शांतिनाथ पार्श्वनाथ एक सो त्रेविस
नइं तेर प्रतिमा मुगति पुरी नो साथरे भ० ॥९॥
एकसो छन्नु ऋषभ जिणंदसुं प्रतिमा कटकीयें वंदी धोली परव
मां ऋषभ मुनिसुव्रत छेंतालीस चिर नंदीरे भ० ॥१०॥

ढाल:—

पारिख जगुना पाडा मांहि टांकलो पास विराजेंजी प्रतिमा चौत्रीस
चतुर तुम वंदो दालिइ दुखने भाजेजी महिमा
जगमींहि गाजेंजी ॥१॥
किया बोहराना पाडामां शीतल प्रतिमा तिम पंचवीसरे
खेत्रपाल पाडामांहि शीतलनाथ न मुनि स दिसजी ॥२॥
जिहां जिनवर छे बिंसे एकाणूं तिहांथी कोकें जइयेंजी ।
त्रिण सें नेऊ प्रतिमासुं कोको पारस नाथ आराहूँजी ॥३॥
अभि नंदन देहरें च्यार प्रतिमा दोय प्रासाद जिहां वंघाजी ।
ढँढेर सामल कलि कुंड पासजी नमतां पाप निकंदाजी ॥४॥
एकसो त्र्यासी प्रतिमा रुडी त्र्यासी जिनवर्द्ध मांनजी ।
महितानें पाडें मुनिसुब्रत सित्तर जिनवर थानजी ॥५॥
बिंसे चौराणूं बिंब सहित श्री शांतिनाथ प्रासाद जी ।
वरवार तणा पाडामां वांदुं मुंकी मन विषवाद जी ॥६॥
दौसत नें सित्तर जिन प्रतिमा वांदीये अभिराम जी ।
गोदउ पाडें ऋषभ ने देहरइं छन्नु बिंब इणि ठामजी ॥७॥

ढाल—

सालीबाडे त्रि सेरीया मांहि नेमी, मल्लि ऋषभ नमुं त्यांहि ।
नव पल्लव नमुं उच्छाहि जिणेसर ताहरागुण गाऊँ जिभ
मन वंछित सुख पाऊँ जिन० ॥१॥
साठि उपर शत तिम च्यार बीजइं देहरें श्री शांति जुहार
बिंब ओगण सठि उदार जि० ॥२॥
कलार वाडें देहरां दोय शांति बिंब एकावन दोइ बावन
जिनायलां जोय जि० ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बें पीतल मइं बिंब सोहावइ विमल प्रभु मनभावे सित्तर
जिन गुण गावें जि० ॥४॥

तिणें एकसो चोपन जिनराया ऋषभ देवना प्रणमुं पाया
दणाय वाडें सिव सुखदाया जि० ॥५॥

धंधोलीइं संभव जिन साचो वंदित्रेंयन जिनमन माचो ए
जिनवरमां साचो जि० ॥६॥

दोय शत दस प्रतिमा पासें सोवन जास सरीर सात
प्रतिमा गुण गंभीर जि० ॥७॥

दोय शत दस प्रतिमा पासे श्रीसप्त फणो जिन पासें पुरें
मन केरी आस जि० ॥८॥

खारी वावि श्री जिनवर्द्धमांन तेर प्रतिमा गुणह निधांन
जिन नामइं कोडि कल्याण जि० ॥९॥

तिहांथी पंचा सरोवास वंद्या मन धरीऽधिक उल्लास पोहति
मनकेरी आस जि० ॥१०॥

कीधी चैत्य प्रवाडी सौसार मनवां धरी हरष अपार जिन
नमतां जय-जय कार जि० ॥११॥

ढाल:—

जिनजो धन-धन दिन मुझ आजुनो वंद्याश्री जिन राजहो,
जिनजी काज सरयां सवि माहरां पाम्युं अविचल राजहो
जिनजी धन० ॥१॥

जिनजी पंचाणुं नइं माझने श्री जिनधर प्रसाद हो,
जिनजी भाव धरी भक्ते वंदिइं मुंकीमन विषवाद हो
जिनजी धन-धन दिन० ॥२॥

जिनजी जिननी बिंब संख्या सुणो माझने तेर हजार हो
जिनजी पाँच से अहोत्तर वंदीइं सुख संपति दातार हो
जिनजी धन-धन० ॥३॥

देहरा सर श्रवणे सुण्यां पंच सयां सुख कार हो जिनजी
तिहां प्रतिमा रली आमणी माझने तेर हजार हो
जिनजी धन-धन० ॥४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीनजी संवत सतर ओगणा त्रीसें पाटण कीध चोमास हो
जिनजी वाचक सौभाग्य विजय वरूँ संघनी पोहती आसहो
जिनजी धन-धन० ॥५॥

जिनजी साहा विरुआ सुत सुंदरु सारामजी सुविचार हो।
सुधो समकित जेहनो विनय वंत दातार हो
जिनजी धन-धन० ॥६॥

जिनजी धरम धुरंधर व्रत धारी परगट मल पोरवाड हो
जिनजी तेहणे साह ज्यइं करी, कीधी मइ चैत्य प्रवाड हो
जिनजी धन-धन० ॥७॥

जिनजी तवन तीरथ माला तणुं कीधुं में अति चंग हो
जिनजी साहराम जीने आग्रहें मनि धरी अति उछरंग हो
जिनजी धन-धन० ॥८॥

जिनजी तवन तीरथ मालातणुं भणइ सुणें वली जेह हो
यात्रा तणुं फल ते लहइं वाधइं धरम सनेह हो
जिनजी धन-धन० ॥९॥

जिनजी श्री विजयदेव सूरी सरनों पाट प्रभाकर सुर हो
जिनजी श्री विजय प्रभ सूरी जग जयो दिन-दिन चडतांइं
नूरही जिनजी धन-धन० ॥१०॥

जिनजी श्री विजयदेव सुरी सरना साधु विजय बुध सीस हो
जिनजो सेवक हर्ष विजय तणी पोहती सयल जगीस हो
जिनजी धन-धन० ॥११॥

कलश:—

इम तीरथ माला गुणह विसाला प्रवर पाटण पुर तणो, मइं भगति आणि लाभ जाणी थुणीइं यात्रा फल भणो, तपगच्छ-नायक सौख्य दायक श्री विजयदेव सूरी सरो साधु विजय पंडित चरण सेवक हर्ष विजय मंगल करो ॥१॥

इति पाटण चैत्य प्रवाडि स्तवन संपूर्ण संवत् १७८३ वर्षे ज्येष्ठ वदि ३ दिने लिखितं सकल पंडित शिरोमणि पं. श्री १०८ श्री सुंमति विजय गणि तत् शिष्य पं. श्री १९ श्री अमर विजय गणि तत् शिष्य पं. सुंदर विजय गणि लिखितं पाटण मध्ये शिष्य जय विजय पठनार्थं कल्याणमस्तु ॥श्री॥श्री॥श्री॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्री ॥

श्री राजनगर तीर्थमाला

दोहा—

वचन सुधारस वरसतो, सरसति समरी माय।
गुरु गिरुआ गुण आगला, तेहना प्रणमुं पाय ॥१॥
गुर्जरधरामें गाजतो, राजनगर शुभ थान।
मोटा मंदिर जिनतणा, सुणिये सत अनुमान ॥२॥
किण किण पोले देहरां, तीर्थंकर अभिधान।
रसना शुचि करवा भणी, पभणुं तस अहिठांण ॥३॥

प्रभु पास नो मुखडो जोवा, भव भवनां दुखडां खोवा ॥ए देशी॥

जुहरी वाडे जिनवर धाम, मानुं शिवमारग विशराम।
पहलो धर्म जिणंद जुहारो, मन मोहन संभव सारो ॥१॥
सुपारसनाथ निहाली, आज आणंद अधिक दिवाली।
सोदागर पोल में सार, शांतिजिन जगदाधार ॥२॥
जुहरी पोल ने लेहरिया नाम, बे वीरजिनेसर धाम।
वासुपूज्य दीठां आणंद, बे शांतिनाथ जिणंद ॥३॥
जगवल्लभ जगतनो स्वामी, निसा पोल में अंतरजामी।
सहस्त्र फणा श्रीपारसनाथ, धर्म शांति शिवपुर ने साथ ॥४॥
चिंतामणी पारसदेव, सुर इन्द्र करे सहु सेव।
पाडे शेखनें च्यार विहार, वासुपूज्य शीतल जयकार ॥५॥
शांतिनाथ ने अजित जिणंद, मुख जोतां कर्म निकंद।
देवसा ने पाडे न्यास, चिंतामणी सांवला पास ॥६॥
धर्मनाथ जगतनो सूर, शांतिनाथ दीठां सुखपूर।
तिलकसानी पोल सुथान, शांतिजिन तिलक समान ॥७॥
पोल पांजरें च्यार प्रसाद, भेटी शांति मेटो विखवाद।
वासुपूज्य शीतल जिन सार, प्रभु पूजी करो भव पार ॥८॥
मुंडेवानी खडकी एक, तिहां देहरा दोय विवेक।
मुंडेवा पारस पामी, धर्मनाथ नमुं शिर नांमी ॥९॥
शांतिनाथ हरण भव ताप, महाजने पांजरे आप।
एक चैत्य कालूपुर दीठो, जिनशांति सुधारस मीठो ॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धना सुथारनी पोल प्रकाश, त्रण देहरा दीठा उल्लास ।
श्री आदीश्वर दीनदयाल, दीठां पारस पाप पयाल ॥११॥
कुंथुनाथ वंदो नर नार, कालू संघवीनी पोल मझार ।
बे देहरा अमर-विमान, चिंतामणी अजित निदान ॥१२॥
झोंपडा पोल जुहारण कोड, शांतिनाथ नमुं कर जोड ।
राजा मेतानी पोल उदार, दोय देहरां सुखदातार ॥१३॥
कुंथुनाथ आदीश्वर धार, बीजो तारक नहीं संसार ।
वंगपोलमां नेमि सुरंग, मुख देखण अमनें उमंग ॥१४॥
गोलवाड नी पोल समाज, जिनराज महावीर महाराज ।
पुरसारंग तलीया जाण, प्रभु पारस अभिनव भांण ॥१५॥
कामेस्वर पोल निहाली, जिन संभवनाथ संभाली ।
वागेश्वरी पोल विख्यात, आदीश्वर त्रिभुवन तात ॥१६॥
चामाचिडया नी पोल प्रधान, नाथसंभव चंद्र समान
पोल नामे सांवला पास, वीर शांति नमो उल्लास ॥१७॥
जिनवंदन पुण्य अपार, बोले गणधर सूत्र मझार ।
जिनवंदे थइ उजमाल, भव त्रीजे वरें शिवमाल ॥१८॥

दोहा—

चंद्र किरण सम शोभतो, चंद्रप्रभ जस नाम ।
धन पीपली पोले सहा, अति उत्तम जिन धाम ॥१॥
ढालनी पोले वंदना, मुनि सुव्रत महाराय ।
तुम पद वंदन भवि लहे, तीर्थंकर पद प्राय ॥२॥
जमालपुरना पासजी, कीजो पर उपगार ।
गोडी जोडी तुम तणी, सुणी नहीं संसार ॥३॥

एक दिवसे जो सेठ सुव्रत पोसो करी ॥ए देशी ॥१॥

पोल मांडवीजी, ते मांही पोलो घणी ।
काका वलियानी, सुविधि तणो प्रतिमा सुणी ।
हरिकिसन नीजी, पोल सेठनी अति भली ।
पर उपगारीजी, शांति निरखो रंगरली ॥ ३०॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

रंगरलो जिन पारसनाथ, पेखो सहस्त्र फणावली ।
पोल त्रीजी समेत शिखरे, जोतां जिन कमला मली ।
सूरदास सुसार श्रेष्ठी, पोल तेहना नामनी ।
आदि जिनने निरख सजनी, कांति घन में दामनी ॥१॥
जिन विमल शीतल रे, लाल भाईनी पोल मां ।
नाग भूधर रे, शांति जिन रंगरोल मां ॥
चोकमाण करे, मुहूर्त पोल विशाल छे ।
जिन शीतल रे, त्रिभुवन नाथ दयाल छे ॥त्रु०॥
दयाल दीठो अजित जिनवर, पोल लूहार तणी सुणी ।
रूपा सुरचंद पोल प्रतिमा, वासु पूज्य सुहांमणी ।
तीर्थ स्वामी विमल नामी, दाइनी खडकी सदा ।
पोल घांची नाथ संभव, साथ दायक शिव मुदा ॥२॥
जिन संभव रे, क्षेत्रपाल ना वास मां ।
गति छेदी रे, नाथ मल्या सुखरास मां ।
भेटी सुमति रे, मूको मन नो आवलो ।
च्यार देहरा रे, पोल फतासानी सांभलो ॥त्रु०॥
सांभलो भावें सुजांण चेतन, वासु पूज्य बिराजता ।
श्रेयांस जिनवर जगत ईश्वर, सजल जलधर गाजता ।
वीर मोटो धीर महिमां, चैत्य चौथो मन धरो ।
सुमती रमणी स्वाद लेवा, भविक सेवा नित करो ॥३॥
नेमी जिनवरे रे, ब्रह्मचारि शिर सेहरो ।
पोल टीबले रे, दीठो अभिनव देहरो ।
पोल हाजे रे, छाजे नव शासनपति ।
पोल मांही रे, शांतिनाथ नी शुभ मती ॥त्रु०॥
सुभमती सेवो चंद्र शांति, जे भणी ग्रंथे विधो ।
नांम पोल नु राम मंदिर, महावीर महिमा निधो ।
एह पोलें भविक निरखो, श्री सुपारस दिनमणी ।
पीपरडीनी पोल माहीं, सुमति जिन शोभा घणी ॥४॥
पातसानी रे, पोले ऋषभ दिवाकरू ।
दुजा जिनवर रे, धर्म अनंत गुणाकरू ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुवे खारे रे, पोले संभव जिन तपे ।
लांबेस्वर रे, बे जिन योगीश्वर जपे ॥त्रु०॥
जपें जोगी सहस्र फणना, सांवला सुहामणा ।
नाम समरो भविक भावे, पास प्रभु रलीग्रामणा ।
दोसोवाडे दोय देहरां, नाथ सकल गुणकरा ।
पार्श्व भावा जगत चावा, स्वामि श्री सीमंधरा ॥५॥
वाडे कुसुंबे रे, शांतिजिन प्रतपे अति ।
मारवाडी रे, खडकी मांहि जिन पति ।
देव दूजा रे, नित सुमरे सुर नरपति ।
पोल सारी रे, कोठारीनो शुभ मती ॥त्रु०॥
शुभमती सुणज्यो तेहमांहि पोल वाघण परगडी ।
जगत वल्लभ नाथ समरुं केम विसरुं एक घडी ।
तेह पाडे चैत्य सारा, पट तणी संख्या सुणो ।
आदीश्वर ने अजित स्वामी, दोय शांति जिन भणो ॥६॥
चिंतामणी रे, पारस आशा पूरतो ।
वीर वंदो रे, संकट संघना चूरतो ।
पोल चौमुख रे, कलिकुंड नांमे पास छे ।
वली शांती रे, दिनकर जेम प्रकाश छे ॥त्रु०॥
प्रकाश प्रभु नो पोल नगीना आदि जिनवर नो सुण्यो ।
साहपुर में नाथ संभव, भक्ति भावें संथुण्यो ।
पंच भाइ नी पोल रूडी, चैत्य बे जिनराज ना ।
आदि शांती देव देखी, देव दूजा लाजता ॥७॥

दोहा:—

इशल पार्श्व पारसनाथ ना, गुण गण मणि गंभीर ।
पूजो कीका पोल मां, भवजल तरवा धीर ॥१॥
भावें निरखुं हरख में, संभव प्रभु दीदार ।
लूणसे वाडे नित नमुं, नाथ हियानो हार ॥२॥
दरवाजे दिल्ली तणें, वाडी सेठनइं नाम ।
कीधी तीरथं थापना, शिव मारग विसराम ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिवाकर प्रभु दीपता, धर्मनाथ अभिधान।
ओरन अरज हजूर में, मुजरो लीजो मान ॥४॥

हवे अवसर जांणी करे संलेखणा साग ॥ए ढाल नो देशी॥

सहु चैत्य नमी ने, वंदो गुरु गुणवंत।
सद् बुद्धि साथे, अनुभव सुख विलसंत।
परिसह ने सहवा, दंती जिम रणधीर।
श्रुतरयणे भरिया, दरिया जेम गंभीर॥१॥

दुर्गुण नें टालें, पालें शुद्धाचार।
जल उपशम झीली, विमल करें अवतार।
महाजंगी जीसो, काम सुभट निरधार।
व्याकरण प्रफुल्लित, करता शब्द विचार।
कोश नाटिक वक्ता, साहित्य ने वली छंद।
राय सभा में जइने, करे कुतिर्थी निकंद॥२॥

टीका अवचूरि, निर्युक्तिना जाण।
चूर्णि भाष्याशय, द्योतक अभिनव भाण।
षट्शास्त्र ने जांणे, तांणे नहीं लवलेश।
वीश वरस प्रमाणे, विहरे सघले देश॥३॥

सहु देश ना संघ ने, उपजावे परतीत।
रुचि पद ने धरवा, रहे आप अतीत।
शुद्ध चारित्र धरता, वीता वरस दुवीस।
प्राय तेहने आपें, आचारज गण ईश॥४॥

पडिरूवादिक सहू, उपदेश माला व्यक्त।
षड्त्रिंशत गुण गण, सूरिपदना युक्त।
पद धरवा ए विधि विशेषावश्यक बीज।
यदि शिव सुख अर्थी, गुरू एहवानें धीज॥५॥

साधु ने श्रावक, पंडित जेहना नांम।
वलि गच्छना स्वामी, लीजे तस परिणाम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देश काल संभाली, देता शुद्ध उपदेश।
लौकिक लोकोत्तर, बाधक नहीं लवलेश ॥६॥
तस आंणा धारो, जेम कहे ते ठीक।
उपदेशपदादिक, शोडश समेत हतोक।
गीतारथ आपें, पीज्यो विष ने आप।
अमृत ने आपें, अगीतारथ छाप ॥७॥
तस अमृत छंडो, निर्वित एक असार।
गच्छाचार पयन्ने, जोवो ए अधिकार।
पडिकमरणा अवसर, अथवा बीजी वार।
अढाई ज्जैसु, कीजे सूत्रोच्चार ॥८॥
ए रीते वंदो, चिउ दिशि ना अरणगार।
सद्गुरु ने अभावें, वंदन एह प्रकार।
मूठ-मच्छरधारी, अक्षर नो नवि बोध।
जगें जोधा थइ ने, करे परंपर सोध ॥९॥
कायक्लेश नें करता, धरता मेलो वेश।
मन मान्युं बोले, करवा आगम उद्देश।
जिन शासन डोले, बोले जलधि मझार।
शिकायोगें करज्यो, एहवानों परिहार ॥१०॥
अनुष्ठान करंतां, करवा पर अपमान।
मंजार तणी परइ, क्रियानो तोफांन।
क्रोधी ने कपटी, लंपटी रसना जेह।
छल हेर क होरणा, कुगुरु कहावे तेह ॥११॥
जे साधु थइने, करें कुशीलाचार।
पद तेहने करतां, विधि वंदन व्यवहार।
जिणआंण विराधे, करे अनंत संसार।
महावीर पयंपे, महानिशीथ मझार ॥१२॥
दोष उत्तर देखो, राखो सम परिणाम।
शुद्ध धर्म सुरणावे, एहीज उत्तम काम।
मलमांहो मोती, लेवा नो नवि दोष।
उपदेश सुणीने, धरज्यो मन संतोष ॥१३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुहा—

काम भोग भेला अछे, आरत रौद्रना बीज।
धन जन एहथी ओसरचा, प्रगटचा जस बेधि बीज ॥१॥

रूप विजय विद्या निधि, विमल उद्योत सुसंत।
वीरविजय वचनावली, थया थविर गुणवंत ॥२॥

सेठ हठिसिंह सांभरे, जेहना गुण अभिराम।
वीसरचा नवि वोसरे, सज्जन जन ना नाम ॥३॥

काम-कलण बुडा नहीं, तीन समय अणगार।
श्रावक ने वलि श्राविका, वंदो वार हजार ॥४॥

हवें श्रीपालकुमार ॥ देशी ए ढाल नीं ॥

तपगछ नो सुलतांण, सिंहसूरीश्वर जगजयो जी।
सत्य विजय अभिधांन शिष्य विभूषण तस थयो जी ॥१॥

कीधो धरम उद्धार, संवेगी नभ दिनमणी जी।
कपूर विजय पट्टधार, उज्जवल कमला तस तणी जी ॥२॥

पदकज मधुकर रूप, क्षमा विजय गुण आगला जी।
जिनविजय जिन रूप, पाटें तेहनइं निरमला जी ॥३॥

वृद्धि विजय पन्यास, हंस विजय गुरु गुण निधि जी।
मोहनविजय पास, आराधननी बहु विधि जी ॥४॥

तेहना शिष्य प्रधान, अमृत विजय सुहामणा जी।
शीतल चंद्र समान, अतिशय गुण गण नहीं मणा जी ॥५॥

पालीपुर ने पाश, हाथ प्रतिष्ठा सांभली जी।
जालो प्रभुनो उल्लास, जिन जोतां मतिअति भलिजी ॥६॥

काजल केसर जात, नयणे जइ ने निहालजो जी।
एहवा तस अवदात, गुण गिरुआ संभाल ज्यो जी ॥७॥

बहुला जैन प्रासाद, तस उपदेशे नीपना जी।
दीठां अधिक आल्हाद इंद्र लोके गुरु ऊपनाजी ॥८॥

तरणी तुल्य प्रकास, गणधर गोयम जेहवा जी।
तस पद अधिक उल्लास, तेज विजयगुणी तेहवा जी ॥९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तप गण हवणां अधीश, देवेन्द्र सूरि पेखज्यो जी।
कीजो अवगुण त्याग, केवल गुणने देखज्यो जी ॥१०॥
अमदावाद अचंभ, सेठ हेमा-भाइ महागुणी जी।
सुणिये शासन थंभ, सेठ हिये करुणा घणी जी ॥११॥
साधु समतावंत, गुणवंती गुरुणी घणी जी।
नर नारी धनवंत, खाण रतन नीइहां सुणी जी ॥१२॥
उगणोशे ने बार, शार चोमासो शेहिरमां जी।
मुझ सिद्ध चक्र आधार, पार उतारें लेहरमां जी ॥१३॥
शुक्लाश्विनमझार, नव पद ओलि ऊजली जी।
आठम दिन गुरुवार, वाणी मुज गंगाजली जी ॥१४॥
शीतल जिनगुणमाल, चांन्द्रकला गगनें टली जी।
पभणी च्यारे ढाल, मन नी आशाअम फली जी ॥१५॥
तेज विजय जयकार, शांति विजय समता घणी जी।
उपगारी अवतार, बलिहारी तस पद तणी जी ॥१६॥
तस पद किंकर समान, रत्न विजय मुनि शिवभणी जी।
तीरथ माला नाम, कीधी रचना जिनतणी जी ॥१७॥
अलिकोच्चारण पाप, मिच्छामि दुक्कड मो भणी जी।
कीज्यो अवगुण माफ, लोज्यो सज्जन गुणमणी जी ॥१८॥

॥ इति श्री राजनगरनी तीर्थमाला ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्री ॥

तीर्थाधिराजश्री शत्रुन्जय गिरी तीर्थमाला

जग जीवन जालिम जावांरे तुम्हे श्यां ने रोको रानमां ए देशी॥

ढाल:—

विमला चल वाल्हा वारूँरे भले भवियण भेटो भावमां,
तुम्हे सेवो ए तीरथ तारूंरे जिम नपडो भवना दावमां ॥आंकणी॥
जग सघलां तीरथ नो नायक तुम्हे सेवो ए
शिव सुख दायकरे ॥१॥
भले-भले ए गिरीराज नें नयणे निहाली
तुम्हे सेवो अविधि दोष टाली रे ॥२॥
भले० मुगता सौवन फूलें वधावी हांरे नमीइं
पूजी भावना भावो रे ॥३॥
भले० कांकरे-कांकरे सिद्ध अनंता, संभारो पाजें चढ़तांरे ॥४॥
भले० आदि अजित शांति गौतम केरां,
पहेलां पगलां पूजो भलेरांरे ॥५॥
भले० आगे धोलि परब टुकें चढीये,
तिहां भरत चक्री पद नमीइंरे ॥६॥
भले० नीली परब अंतरा ले आवे,
नेमि वरदत्त पगलां सोहावे रे ॥७॥
भले० आदि थुंभनमी कुंड कुमारा,
हिंगला जहडे चढो प्यारा रे ॥८॥
भले० तिंहा कलि कुंड नमी श्रीपास,
चढो मान मोडें उल्लास रे ॥९॥
भले० गुण वंत गिरिना गुण गाई ई,
शाला कुंडे विसांमो भाई ॥१०॥
भले० तिहांथी मका गली पंथे धसियें,
प्रभु गढ देखी ने उल्लसीये रे ॥११॥
भले० नमीइं नारद अहि मत्तानी मूरती,
वलिंद्र विडवारी रिव सूरतिरे ॥१२॥
भले० तीरथ भूमि देखी सुख जागें,
निरख्यो हेम कुंडनी आगे रे ॥१३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ततएण गूजर संघ सुरोवी, हइडइ अधिकउ भाव धरेवी।
जिन पूजन चालु सहु ए ॥१३॥

भास—

पूरव मरुधर गुजराति मेवाडह नारी, अपछरा रूपि अवतरी ए।
नव नव शृंगारी ॥१४॥

एक गाइं वर गीत रीति रूडी मुख दाखइ निय निय देसह।
तणीय भाव जिन गुण मुसि भाष ॥१५॥

इम करतां संघ आविउ ए, सहु सीहदुआरि च्यारह देसह।
तणीअ नारि-मनि हरिष अपार ॥१६॥

पूरबनी कहइ पहिलु हुँ ए, पूजिसु जिणचंद।
मारवाडिता लाडि भणइ, घेसेका सु गंद ॥१७॥

पहिरणि आछा कापडां ए, वलि लाज न दीसइ।
आछत्र देस तुम्हारडउ ए, इम बोलइ रीसइ॥१८॥

पुरुषक धोटी पहिरणइए, ऊघउ वलि बोलेइ।
ते नर नारि मारवाडो, सरसी कुण तोलइ ॥१९॥

क्योबपुरी बहु विरुद तीए, तेरा देस पिछाणु।
कूआ कंठइ च्यार प्रहरु निसि करहि बिहाणु ॥२०॥

ते पणि स्यारा नीर वास, थल उपरि तेरे भरट भुअंगम।
पहिरणइ ए कांबलडी रे रे ॥२१॥

बाद करंता सांभलीरे गूजरनी नाखा बोलइ वइ तुम्ह।
सांभलो ए ॥ मम वचन विचारो ॥२२॥

गूजर देसह उपरइ नहिं, को संसार सी पूरव सीमा
रुआडि ए मुनिरधार ॥२३॥

सेत पटउली पहिरणइ ए वारु फूल तांबोल वारु भोजन
सालि दालि यनगमता घोल ॥२४॥

विजय विवेक विचार, सार जिनधर्म भलेउ
ज्यावाहीरा कनक ॥२५॥

त्याइ········धर्मवंता विविहारी सोहइ।
अणहिलवाडा नयर सरिस।
सुरपुरि मन मोहइ ॥२६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सतर सहिस्त्र गुजराति ए…………अवर देस सवि
मेलवा सुरवाण कहिज ए ॥२७॥

मेवाड शुणि वातडी ए रातडी………बोलइ
बिहिनि म बोलि विरुद । तुम्ह मोटी साखइं ॥२८॥

रादुं आछण भोजन ए हुवइ आहार ।
मीलन नारी कंथि साथि मंडइ विविहार ॥२९॥

……वउपइ मेवाडि मोटइ मंडाणि ।
करइ आपण देस वखाण……टसिरीसु जिहादुग्रं……
तरि उठइ स्वग्गं ॥३०॥

सुकोसल रिषि सिध उजित्या रामचंद गिरि कहोइ ईह ।
चित्रांगद राजा नुंठाम जोताँ नयणे अति अभिराम ॥३१॥

जिणहर मनोहर अतिउत्तंग वाद करइ आकासिहं गंग ।
वारु मंदिर पोलि दपागार, तलिआं तोरण घर घरि वारि ॥३२॥

वारु गंध सुंगंधि शालि, नीर नदी वहइ सुविशालि ।
विषमीवेला आवइ काजि, जिहां जिन धर्म के रुराजि ॥३३॥

असिउ देस मेवाड प्रसिध, धन कण कंचण रयण समृध ।
घणी कहुँ कसी उपमा, रंगि रमिइ ईश्वर नइ उमा ॥३४।

इसी वात निसुणी जे तलइ, पूरवनी बोली ते तलइ ।
आउ तीनइ सखी मिलि जाउ, मेवाडी उतर देस आउ ॥३५॥

तब मरुधरनी बोलइ नारि, गिरि सिरि ऊपरि तुम्ह आधारि ।
वारु वाहन करह न ठाम, पाली पुलइ…………………॥३६॥

काला कापड उछुवेस, चोर चरड नउ एह ज देस ।
भलां कोइ नवि दीसइ तिहां, तू सरखो दीसइ भिइ जिहां ॥३७॥

कहइ गूजरी सुणि मुज वाणी, मेवाडी तू मकरइ वखाण ।
अम्ह देसि सेत्रुंज गिरिनारि, नितु नितु प्रणमुं त्रिणे कालि ॥३८॥

सब तीर्थंकर कहइ किहां भया, गोयम पमुहुं किहां मुगति गया ।
धना शालिभद्र अणगार, पूरवनी कहइ वचन विचार ॥३९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभयकुमार अनइ श्रीमेह, श्रेणिक राजा धर्म सनेह।
श्रीमेतारय आणंद नाम, कामदेव श्रावक अभिराम ॥४०॥

हवइ दुहा—

जिन मंदिरि जावां भणी, आवी सोरठ नारि।
वाद करंति देखि करि, बोलइ बोल विचार ॥४१॥
काहु सखि तुम्हारु बोल फलउ, बोलउ बोल अपार।
आप आपणा देसडा, सहुनइ गमइ अपार ॥४२॥
वाद तुम्हारओ जो खरउ जो जिन पूजा जाणि।
सत्तरभेद पूजा वली, करइ ते देस वखाणि ॥४३॥
गुजराती नो गोरडी, भणइ भलु ए काम।
जिनिकरि जिणवर पूजीइ ते हुँ जाणु ग्राम ॥४४॥
चंपक केतक केवडा मरूओ दमणो रंग।
वर कल्हार पाडल भलां जाई जुई न विरंग ॥४५॥
सेवंत्रां सोवन कली, वारू कुसुमह माल।
अगर कपूर कस्तूरीस्यु केसर चंदन सार ॥४६॥
कल्पवृक्षनां फूलडां, कल्पवृक्षनी वेलि।
अवर सुगंधे फूलडे, हवइ करीइ रंग रेलि ॥४७॥
सुणउ विहिनि जिनमंदिर, नहिं वादनउ ठाम।
चउरासि आसातना, टालइ ते अभिराम ॥४८॥

ढाल सामेरी—

चउथइ अ समेलि आवइ रे जिनमंदिर भावना भावइ।
श्री ऋषभ तणा गुणगावइ रे वली वली शीस नमावइ ॥४९॥
जिनपूजाइ नवरंगी रे, गुणगान करेइ बहु भंगी।
जय जय नाभि मल्हारो रे, शत्रुंजय गिरिवर शृंगारो ॥५०॥
तव गूजरधरनी नारी रे, शृंगार करे अतिसारी रे।
जिन आगलि नाटिक मंडइ रे प्रभु दरिसन नेत्र न छंडइ रे ॥५१॥
पगि घूघर माला घमकइ रे, कस्तुरी परिमल बहिकइ रे।
वर वेणी भीणी लहुकइ रे गुणगान करइ वर वहइकइ रे ॥५२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धन धन धन नाभि नरसु रे, मरुदेवी उअरि हंसू।
दौं दौं कति मादल वाजइ रे, सनाइ नादइ अंबर गाजइ ।।५३।।
वली वंस विशेष वजावइ रे सुर किन्नर जोवा आवइ।
रूडा ताल थकी नवि चूकइ रे पद ठवरिण निरतइ मुंकइ ।।५४।।

राग जयमाला—

इरिण परिनाटिक कीधलुं, नमोत्थुणं भगवंत।
द्रव्य पूजा श्रावक भरणी, तिहां छइ लाभ अनंत ।।५५।।
तिहां लाभ अनंता जाणि, श्री आगम केरी वाणी।
सुणी सद्दहणा मनि आणी, कां चूकउ मुरख प्राणी ।।५६।।
मूरख प्राणी सांभलो, अम्ह मनि राग न रोस।
ज्ञाता धर्मि द्रुपदी, कीधी पूज न दोस ।।५७।।
कीधी पूजन दोस इम प्रतिमा भगवती मांहि।
चमरातणइ अधिकार छइ ए आगम-परवाह ।।५८।।
ए आगम मारग सुधउ, जिन आणा तुम्ह प्रतिबुज्झउ।
भाव पूजा मुणिजइ बोलि, कलिप इ मतिम करउ भोली ।।५९।।
भोली मति सवि परिहरी, मिच्छा दुक्कड देय।
संघ प्रति सदुइ हरषिउ, इन्द्रमाल पहिरेय ।।६०।।
इन्द्रमाल पहिरि करी, भावना भावइ भूरि।
च्यार संघ सोहामणा वस्सइ कंचण पूरि ।।६१।।
वरिसइ कंचण कोडि प्रभु प्रणमी दो कर जोडी।
चारु छंद वदन गुण गावइ अतिउलट अंगि न मावइ ।।६२।।
अति उलट अंगि न माय तेणइ हइउइ हेज अपार।
सवि तीरथ भेटि करि सवे करूं जुहार ।।६३।।
सवि तीरथ भेटी करी, पउहता गढ गिरिनारि।
नेमिनाथ जिन वंदवा यादव कुलि श्रृंगार ।।६४।।
ए यादव कुलि श्रृंगारा राजीमति प्राण आधारा।
चारु चंदवदनीं सकुलीणी नव भवनी नारि अमीणी ।।६५।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नव भव नारि विचारि करी संत न दाखइ छेय ।
पेहलुं शिव पुरी पाठवी ए गिरुआ तरण सनेह ॥६६॥

कलश:—

इम सकल तीरथ राय भेटि पुण्य पेटो बहु भरी ।
श्री संघ हरख्या देव निरख्या विजय यात्रा इम करी ।
श्री भक्तिलाभ सीस जंपइ चारुचंद दयापरो ।
सो दसु निम्मल नारण संपइ पढम जिरण आदीसरो ॥६७॥

इति श्री शत्रुंजय चैत्य परिपाटी श्री आदीश्वर स्तवनं समाप्त । संवत् १६४८ वर्षे फागुरण शुदी १४ दिने लिखितं पंडित श्री मुनि विजय गरिण शिष्य कृपा विजय गरिणना । श्री गिरिनार्योपरि स्ववाचनार्थं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री

श्री शत्रुंजय तीर्थ-चैत्यपरिपाटी

श्री भक्ति लाभ शिष्य चारू चन्द्र रचिता

पहइलुं प्रणमुं श्री अरिहंत, दोष अठार रहित भगवंत ।
सेत्रुंजय गिरि छेइ गुणवंत, ज्यों राजे श्री रिसहजिणंद ॥१॥

छइ गुणवंत, जिहां राजे जात्र करेवा आवइ संघ,
श्रावक नर नारि मनि रंग । अंग उमाहउ अतिघणउ ए ॥२॥

अन्न दिवस श्री पालीताणइ, आव्या संघपति सुपरि वषाणइ ।
च्यारि देसना, जूजुआ ए ॥३॥

पूरव देस थिकी संघपति, आव्या संघ नियनारी संजुती ।
रूप रेख लिखिमी जिसी ए ॥४॥

मरुधर देसथिकी मंडाणइ, आव्या संघपति करइ पल्हाणि ।
घर नारी गाडलइ चढी ए ॥५॥

गुजर संघपति गरुई युगति, बइठा सेजवाली संपत्ति ।
वामांगी निज गोरडी ए ॥६॥

तिणइ अवसरि मेवाडह संघ, संघपति सहित करइ नितु रंग ।
कामणि धामणि धसमस ए ॥७॥

पूरव देश तणी वरनारी, सोल शृंगार करी अतिसारी ।
रूपि रंभ हरावती ए ॥८॥

चंदन केसर भरिय कचोली, पहिरि नवरंग जादर चोली ।
भोली भगति अतिघणुं ए ॥९॥

पहठती प्रिय पासइ इम बोलइ,
तुम सम अवर संघ कुण तोलइ ।
पहलुं पूजिसु पढम जिन ॥१०॥

ताम संघपति करिय सजाई, आपुरि पहुतउ तव धाई ।
मरुधर संघपति सांभलुं ए ॥११॥

विहिला विहिला वार मलाउ, जिको महारो सो विहिलु आउ ।
ओसग पहिलुभुं जिन पूजस्युं ए ॥१२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भले० रांम भरत श्रुक शेलग स्वामी,
थावच्चा नमुं सिर नांमी रे ॥१४॥
भले० भूषरण कुंडवाडी जोइ वंदो,
सुकोसल मुनिपद सुख कंदो रे ॥१५॥
भले० आगल हनुमंत वीर कहाइ,
तिहांथी बे वाटि जवाइ रे ॥१६॥
भले० डावी दिसा राम पोले होरंजी,
सांमी दीसे नदीय सेत्रुंजी रे ॥१७॥
भले० जातां जिमरणी दीसि वंदो भाली,
मुनि जालीमशाली उवसाली रे ॥१८॥
भले० तिहांथी डावी दिसी सोहमा सोहावें,
नमो देवकी षट् सुत भावे रे ॥१९॥
भले० इम शुभ भावथी उत करषें,
रांम पोलिमां पइसीइं हरषे रे ॥२०॥
भले० कुंतासर पालि नवयरण भालो,
जेकीधी साह सुगालो रे ॥२१॥
भले० धाइ सोपांन चढो अति हरषो,
जई वाघिरण पोलिं निरषो रे ॥२२॥
भले० थिरताई सुभ जोग जगावो,
कहे अमृत भावना भावो रे ॥२३॥

ढाल:—

सीता हरषी जी ए देशी—नलिना वत्ती विजये जयकारी ए देशी ॥
अती हरषें संचरतां जोतां, जिनघर ओला ओलीली जी
जीव जगाडी सीस नमांडी, आवो हाथी पोलेजी
हुंतो प्रणमुं रे हरषी जी ॥१॥
आगल पूंडरीक पोले चढतां, प्रणमुं बेकर जोडी जी।
तीरथ पति नुं भुवन निहाली, करम जंजीर में तोडी ॥२॥
मूल गंभारे जातां मांनु, सुकृत सघले तेडी जी।
ततषिण दुकृत दूर पूलायां, नांषी कुगत उषेडी जी ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीठो लाडण मरु देवीनो बेठो तीरथ थापीजी ।
पूरब नवांणु वार आव्याथी, जगमां कीरत व्यापी ॥४॥हुँ०नी०
श्री आदीश्वर विधिस्युं वंदो, बीजा सर्व जुहारूंजो ।
नमी विनमी काउसगिया पासें, जोइ जोइ आतिम तारू ॥५॥हुँ०नी०
साह्मा गजवर खांधे बेठां, भरत चक्री नें माडोजी ।
तिम सुनंदा सुमंगला पासें, प्रणमुं धनते लाडो ॥६॥हुँ०नी०
मूल गंभारा मां जिन मुंद्रा, एक जंणी पंचासजी ।
रंग मंडपमां पडिमा इंसी, वंदी भाव उल्लासजी ॥७॥हुँ०नी०
चैत्य उपर चौमुख थाप्योछे, फरती प्रतिमा बांणुजी ।
वली गौतम गण धरनी ठवणा, शी तारोफ वखांणु ॥८॥हुँ०नी०
देहरा बाहिर फरती देहरी, चोपन खडी दीसेंजी ।
तेह्मां प्रतिमा एकसो त्रांणु, देखी हीयडुं हींसें ॥९॥हुँ०नी०
नीलडीरायण तरू अर हेठल, पीलडा प्रभुना पायजी ।
पूजी प्रणमी भावना भावी, उलट अंग नमाइंजी ॥१०॥हुँ०नी०
तस पद हेठल नाग मोरनी, मूरत बेहूँ सुहावेजी ।
तस सुर पदवी सिद्धा चलना, महातम मांहे कहावें ॥११॥हुँ०नी०
सोहमां पुंडरीक स्वांमी विराजे, प्रतिमा छवीस संगेजी ।
तेह्मां बौधनी एक जिन प्रतिमा, टाली नमीये रंगेजी ॥१२॥हुँ०नी०
तिहांथी बाहिर उतर पासें, प्रतिमा तेर दिदारूजी ।
एक रूपानी अवर धातुनी, पंच तीर्थी छे वारुं ॥१३॥हुँ०नी०
उत्तर सनमुख गण धर पगलां, चउदसयां बावन नांजी ।
तेह्मां सात जिणंद जुहारि, पूरघां कोउते मननां ॥१४॥हुं०नी०
दक्षिण पासे सहस्त्र कूटनें, देखी पाप पलायजी ।
एक सहस चउवी से जिणेसर, संख्याइं कहेवायें ॥१५॥हुं०नी०
दश क्षेत्रें मलो त्रीस चोवोसी, एक सो साठि विदेहेजी ।
उत्कृष्टा वेर मांन विभूजी, संप्रति वीस सनेहे ॥१६॥हुं०नी०
चोवीस जिननां पांच कल्यांणक, एकसोवीस संभारीजी ।
शाश्वत च्यार प्रभु सरवालें, सहस कूटनिर धारीजो ॥१७॥हुं०नी०
गौमुख जक्ष चक्के स्वरी देवि, तीरथनी रखवालीजी ।
ते प्रभुना पद पंकज सेवें, कहें अमृत निहालीजी ॥१८॥हुं०नी०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल—

मुनि सुव्रत जिन अरज अम्हारी ए देशी।
आस्या उरी नंदकुं त्रिशला हुलावे, ए आंकणी॥
एक दिशाथी जिन घर संख्या जिन वरने संभलावुं रे।
आतिम थी ओल खाण करीने, तो ओलखाण वतावुं रे॥१॥
त्रिभुवन तारण तीरथ वंदो ए अंचली।
रायण थी दक्षिण नें पासें देहरी एक भलेरी रें।
तेहमां चौमुख दोय जुहारी, टालू भवनि फेरी रे॥२॥हुंतो०ओ०
चौमुख सर्व मलीनें छूटा वीस संख्याइं जांणांरे।
छूटी प्रतिमा आठ जुहारी, करीइं जन्म प्रमांणोरे॥३॥हुंतो०ओ०
संघवी मोती चंद पटणीनुं सुन्दर जिन घर मोहेरें।
तिहां प्रतिमा ओगणीस जुहारी हियडुं हरषित होइरें॥४॥हुं०त्रि०
श्रीसमेत शिखर नी रचना कीधीछे भली भांतरे।
वीस जिणेसर पगलां वंदू बावीस जिन संघातरें॥५॥हुँ०त्रि०
कुसला बाईना चौमुख मांहें सत्तर जिन सोहावेरे।
अंचल गच्छना देहरा मांहि बत्रीस जिनजी देखावेरे॥६॥हुं०त्रि०
सामूलाना मंडपमांहे छेतालीस जिणंदारें।
चौवीस पट्टे एक तिहांछें प्रणम्यें परमा नंदारे॥७॥हुं०त्रि०
अष्टापद मंदिर मां जईनें अवधि दोष तजीसरे।
च्यार आठ दश दोय नमीनें बीजाजिन च्यालीसरे॥८॥हुं०त्रि०
सेठजी सुरचंद नी देहरीमां, नवजिन पडिमा छाजेरें।
घोया कुंअरजीनी देहरीमां प्रतिमा त्रीण्य विराजेरे॥९॥हुं०त्रि०
वस्तु पालना देहरा मांहे थाप्या ऋषभ जिणंदरे।
काउ सगीया बे एकत्रीस जिनवर संघवी ताराचंदरे॥१०॥हुं०त्रि०
मेरु शिखरनी ठवणा मध्यें प्रतिमा बार भलेरी रे।
भाणा लींबड़ी यानी देहरीमां दश प्रतिमा जुहो हेरी रे॥११॥हुं.त्रि.
संघवी ताराचंद देवल पासें, देहरी त्रीण सें अनेरी रे।
तेहमां दश जिन प्रतिमा निरषी,थिर परणिती थइ मेरीरे॥१२॥हुं.त्रि.
पाँच भाइयाना देहरा माँ हे, प्रतिमा पांच छे मोटीरे।
बीजी तेत्रीस जिन पड़िमा, वात नहीं ए खोटी रे॥१३॥हुं.त्रि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमदा वादीनुं देहरूँ कहीयें, तेह्मां प्रतिमा तेर रे।
ते पछवाडे देहरी मांहे, प्रणमुं, आठ सवेर रे ॥१४॥हुं.त्रि.
सेठ जगन्नाथजी इंक राव्युं, जिन मंदिर भले भावें रें।
तेह्माँ नवजिन पडिमा वंदी, कवि अमृत गुण गावे रे ॥१५॥हुं.त्रि.

ढाल:—

तुम्हे पीलां पीतांबर पेरयांजी, मुखने मरकलडे, ए देशी ॥
रायण थी उत्तर पासेजी, तीरथना रसिया,
जिनवर जिनघर उल्लासें जी मुझ हीयडे वसिया ॥
सहूं भाषुं जोइ सिव नामीजी, तीरथना रसिया।
मुझ मनडा अंतर यामी जी मुझ हीयडे वसिया ॥
जिन मुंद्राइं ऋषभ जिणंदोजी, तीरथना रसिया।
तिम भरत बाहुबल वंदोजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
नमी विनमी काउ सग सीमाजी, तीरथ नारसिया।
ब्राह्मी सुंदरी एक देरी मांजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
पक्ष किसन शुक्त व्रत धारी जी, तीरथ ना रसिया।
सेठ विजय ने विजया नारी जी, मुझ हीयडे वसिया ॥
एह्वां कोई नहूँ आँ अवतारीजी, तीरथना रसिया।
जाउं तेहनी हूं बलिहारीजी, तीरथना रसिया ॥
गच्छ अंचल चैत्य कहावेजी, मुझ हीयडे वसिया।
वीस पडिमा वंदु भावेजी, तीरथना रसिया ॥
तस मंडप थंमा मांहेजी, तीरथना रसिया।
चउद पडिमा वंदु त्यांहिजी, मुझ मनडे वसिया ॥
भूषण दासना देहरा मांहेजी, तीरथना रसिया।
तेर प्रतिमा थापी उच्छा हेंजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
बाछरडा मंगल स्वभातीजी तीरथना रसिया।
तस चैत्यमां श्रण्य सोहा तीजी, मुझ मनडे वसिया ॥
साकर बाईना देहरा मांहेजी, तीरथना रसिया।
सात प्रतिमा निरषी आणंदोजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
तिहांथी वली आगल चालीजी, तीरथना रसिया।
माता दीसोतनुं देहरू भारीजी, मुझ हीयडे वसिया ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिण ते वस्तु पाले कराव्युंजी, तीरथना रसिया।
आठ पडिमाइं सोहाव्युंजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
ते उपर चौमुख राजेजी, तीरथना रसिया।
च्यार शाश्वता जिनजी विराजेजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
ऊगमणी बेछेदेरीजी, तीरथना रसिया।
जिन पडिमा इग्यार भलेरीजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
साहेम चन्दनी दखणातीजी, तीरथना रसिया।
देहरीमां जोडी सुहातीजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
सा रांमजी गंधारीइं कीधोजी, तीरथना रसिया।
प्रासाद उत्तंग प्रसिद्धोजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
तिहां चौमुख देखी आणंदुंजी तीरथना रसिया।
सात प्रतिमा साथे वंदूंजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
षट् देरोछे तस संगेजी, तीरथना रसिया।
जिन नमीइं त्रेतालीस रंगेजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
तेह चोवीस जिननी माडीजी, तीरथना रसिया।
जिन संगे लेइ नें वाडीजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
मूल कोटनी भमती मांहेजी, तीरथना रसिया।
फरती छे च्यार दिस्याइजी, मुझ हीयडे वसीया।
पांच से सडसठी सुख कंदोजी, तीरथना रसिया ॥
फरतां जिन सवले वंदोजी, मुझ हीयडे वसिया।
मूल कोटनी चैत्य नीहावेजी, तीरथना रसिया ॥
तिहाँ प्रभु सग वीससे वंदोजी, मुझ हीयडे वसिया ॥
कहे अमृत ने चिर नंदोजी, तीरथना रसिया ॥१२॥

ढाल ५ मी.—

हुं वारीरे एदेशी । वातकरो वेगला रही म्हारा वाल्हारे एदेशी ।
हवें हाथी पोलेनी बाहिरें वीसरामी रे ।
बे गोंखे छे जिनराज नमुंशिर नामी रे ।
तेहथी दक्षण श्रेणी इं, वीसरामी रे ।
कहुं जिनघर जिननो साज नमु शिरनामी रे ।
कुमर नरे ह करावीयो वीसरामी रे ।
धन खरची सार विहार नमुंशिर नामी रे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बावन शिखरें वंदीये, वीसरामी रे ।
तिहुंत्तर जिन परिवार नमु०॥
वली धन राजने देहरे, वीसरामी रे ।
प्रतिमा वंदु सात नमुं शिरनामी रे ।
देहरे वर्द्धमान सेठ ने वीसरामी रे ।
प्रतिमा सात विख्यात नमुं शिरनामी रे ।
सा रवजी राधनपुरी विसरामी रे ।
तेहनुं जिनघर जोय नमुं शिरनामी रे ।
तिहां पन्नर जिन दीपता विसरामी रे ।
प्रणम्यां पातक धोय नमुं शिरनामी रे ।
तेहनी पासे राजता विसरामी रे ।
मंदिरमां, जिनवर च्यार नमुं शिरनामी रे ।
तिहांथी आगल जोइइं विसरामी रे ।
अद्‌भुत रचना च्यार नमुं शिरनामी रे ।
जगत सेठजीइं करावी यो विसरामी रे ।
त्रण शिखरो प्रासाद नमुं शिरनामी रे ।
तिहां पन्नर जिन पेखतां विसरामो रे ।
मुझ परिणती हुंई आह्लाद नमुं शिरनामो रे ।
पासे भुवन जिन राजनुं विसरामो रे,
तिहां षट प्रतिमा धार नमुं शिर नामी रे ॥
मुरछा उतारी कीयुं विसरामी रे,
ते हीर बाई इँ सार नमुं शिरनामी रे ॥
कुंअरजी लाधातणुं विसरामी रे,
दीपे देवल खास नमुं शिरनामी रे ॥
तेत्रीस जिनसुं थापीया विसरामी रे,
सहस फणा श्रीपास नमुं शिरनामी रे ॥
विमल वसही यें चैत्य छै विसरामी ये,
जुओ भूलवणीमां चार नमुं शिरनामी रे ॥
वली भमती चौमुख बेमली विसरामी रे,
तिहां इक्यासी जिनधार नमुं शिरनामी रे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमीसर चउरो जिहा विसरामी रे,
तिहां एकसो सित्तर देव नमुं शिरनामी रे ।।
मूल नायक स्युं वंदीइं विसरामी रे,
लोक नाल ततखेव नमुं शिरनामी रे ।।
विमल वसही पासे अछे विसरामी रे,
देहरा दोय निहाल नमुं शिरनामी रे ।।
प्रतिमा आठ जुहारीइं विसरामी रे,
आतम करी उजमाल नमुं शिरनामी रे ।।
पुण्य पापनुं पारखुं विसरामी रे,
करवाने गुण वंत नमुं शिरनामी रे ।।
मोक्ष बारी नामे अबें विसरामी रे,
तिहां पेसी निकसो संत नमुं शिरनामी रे ।।
तीरथनी चोकी करे विसरामी रे,
वली संघ तणी रखवाल नमुं शिरनामी रे ।।
करमा साहें थापीयां विसरामी रे,
सहुं विघन हरे विसराल नमुं शिरनामी रे ।।
सघले अंगे सोभतां विसरामी रे,
भूषण झाक झमाल नमुं शिरनामी रे ।।
चरणा चोली पेहरणें विसरामी रे,
सोहे घाटडीलाल गुलाल नमुं शिरनामी रे ।।
चतुर भुजा चक्केसरी विसरामी रे,
तेहना प्रणमीपाय नमुं शिरनामी रे ।।
सघल संघ ओलग करे विसरामी रे,
बुध अमृत भर गुण गाय नमुं शिरनामी रे ।।

ढाल ६—

हरीयें आपीरे वृंदावन मां माला एदेशी ।

भवि तुम्हे सेवोरें एह जिनवर उपगारी,
कोनहि एहवोरें तीरथ मां अधिकारी ।।अ आंकणी।।
हाथी पोलथी उत्तर श्रेणें जिन घर जिनजी छाजे ।
समोसरण सुरछेतेहमां प्रतिमा च्यार विराजे ।।१।।भवि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समोसरण पछवाडे देहरी आठ अनोपम सोहें।
वीर जिणेसर तेहमां बेठा भवियण ना मन मोहै ॥२॥भवि.
रतनसिंह भंडारी जेणें कीधूं देवल खास।
तिहां जिन च्यार संघातें थाप्या विजय चिंतामणि खास ॥३॥भ.
तेहनी पासे च्यार देरी तुमे, तिहां जिन पडिमावीस।
प्रेमजी वेलजी सांहमे देहरे प्रणमुं पाय जगीस ॥४॥भवि.
नवलमल आणंदजी इं कीधुं जिन मंदिर सुविशाल।
तिहां जई पांच जिणेसर भेटें, मेटे भव जंजाल ॥५॥भवि.
वधू सापटणी ने देहरें अष्टादश जिनराया।
पांचेदेरी चीनां बीबीनी देश बंगाल कहाया ॥६॥भवि.
अति अद्भुत जिन मंदिर रूडुं लाधा वोरा केरूं,
तेहमां जे षट् प्रतिमा वंदे तेहनुं भाग्य भलेरूं ॥७॥भवि.
मांणोत जयमल्लजी ने देहरे, चोमुख जईनें जुहारुं।
प्रतिमा दोय दिगंबर भुवने निरषु भाषु सारुं ॥८॥भवि.
ऋषभ मोदीयै प्रसाद कराव्यौ, तिहांदश पडिमा वंदो।
राज शीशाना देहरा मांहे भेट्या सात जिणंदो ॥९॥भवितु.
सा मीठाचन्द लाधा जाणुं पाटण सहेर निवासी। ।
जिन मंदिर सुंदर करी पडिमा पाँच देहरी छे खासी ॥१०॥ भवि.
तीरथ संघ तणो रख वालो यक्ष कपर्द्दी कहीये।
बीजामात चक्केसरी वंदो सुखसंपति सहु लहिये ॥११॥भवि.
नांहना मोटा भुवन मलीने बेहे तालोस अवधारो।
संख्याइ जीन जीन प्रतिमा पांच से सोल जुहारो ॥१२॥भवि.
इण परे सघलाँ चैत्य नमीने नाही सूरज कुंड।
जयणाइं सुचि अंग करीने पेहरो वस्त्र अखंड ॥१३॥भवि.
विधि पूर्वक सामग्री मेली बहु उपचार संघातें।
नाभि नंदन पूजी सहूँ पूजो जिन गुण अमृत गातें ॥१४॥भवि.

ढाल—७मी.

भरत नृप भावस्यु एदेशी—

बीजुं टुंक जुहारीये ए पावडीये चढी जोय, नमो गिरी राजनेरे ए।
अदबद स्वामी देखतांए मुझ मन अचरिज होय ॥१॥नमो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिहांथी आगल चालतां रे देहरी एक निहाल। नमो.
तेठांमे जई वंदी येरे पासजी शांति कृपाल ॥२॥नमो.
संघवी प्रेम चंदे करयोए, जिन मंदिर सुख कार। नमो.
सर्व तो भद्र प्रासादमांए बिंब नवांगुसार ॥३॥नमो.
हेमचंद लवजीइं करयोए देहरो तिहां शुभभाव।
बिंब पचवीस तिहां वंदीइं ए भवोदधितारण नाव ॥४॥नमो.
पांडव पांचे प्रणमीयेरे जिन मुंद्राइं जेह।
जोडें कुंता ध्रूप दीरे नमुनमु निरषी तेह ॥५॥नमो.
खरतर वसही मां पेसतांरें पहिलुं शांति भवन।
बहोत्तरे जिनस्युं वंदोयेरें तेघडो धन धन ॥६॥नमो.
पासें पास जिणेसरुरे बेठा भुवन मंझार।
चौवीस जिन परिकर नमुं रे मूरति होय अणगार ॥७॥नमो.
तेहमां नंदीसर थापनारें बावन जिन परिवार।
फिरि फिरी नीरखूं खांत स्यूं रे हरखूं हियडे अपार ॥८॥नमो.
एक जिन घर मांथापीयारें सीमंधर जिनराय।
प्रतिमा च्यार सुंवांदियेरें थिर करी मन वचकाय ॥९॥नमो.
अजित प्रभुना चैत्यमांरै नमुं त्रिण जिन संघात।
आठभुजाइं शोभतांरे पासे चक्के सरी मात ॥१०॥नमो.
चौमुख त्रणछे तेहनीरे प्रतिमावां दो बार।
प्रतिमा एक रायण तलेरें प्रणमुं पगलां चार। ११॥नमो.
चौद सूयां बावन तणांरें गणधर पगलां जोय।
तेहनी पासें सोहामणी रें दीपे देरी दोय ॥१२॥नमो.
सा हेमचन्द सषरे कीयूंरे जिन मंदिर सुविशाल।
तिहां त्रण पडिमाइं नमुंएं मन मोहन श्री पास ॥१३॥नमो.
सोहम सोहमांछे देहरांरे श्री शांतिनाथ नांदोय।
त्रण प्रतिमाछे एकमांरे बीजे पांचा सतु जोय ॥१४॥नमो.
मूल कोटमां दक्षिण दिसेंरे देहरी त्रिण से जोड।
तिहां पडिमा षट वंदियेरें कहे अमृत कर जोड ॥१५॥नमो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल ८ मी.—

एतो गहेलोछे गिरधारी रे एने स्यु कहोइं ॥एदेशी॥

उत्तर पूरव विचले भागे देरी त्रण सोहावेरें।
हरसी ने तेंथानिक फरसी वरसी समता भावेरे ॥१॥

एहने सेवोने एतो मेवो इण संसार, तुम्हे सेवो सहू नर नार ॥आ.॥
तेहमां धावच्चा सुत सेलग सूरी प्रमुख सुख दाईरे।
इणगिरी सिद्धो तेहनां पगलां वंदु सहस अढाई ॥२॥एहनो,

पासें विहार उत्तंग विराजें रंग मंडप दिसि चारेरें।
सेठ सिवा सोमजी इंकराव्यो खरची चित्त उदाररें ॥३॥एहनो.

चार अनंता गुण प्रकटयाथी सरिखा चारें रूपरे।
परमेश्वर शुभ समये थाप्या चार दिसाइं अनूप ॥४॥एहनो.

तेश्री ऋषभ जिणेसर चौमुख बीजा जिन अहेतालरें।
एहनिमित्त मुझ सफलां होज्यो हूँ प्रणमुं त्रिण कालरे ॥५॥एहनो.

उपर चउमुख छव्वीस जिनस्युं देखी दुरित निकंदुरे।
चौवीस बट्ठो एक मलीने चौपन प्रतिमा वंदु ॥६॥एहनो.

सोहमां पूंडरीक स्वामी बेठा पूँडरीक वरणा राजरे।
तस पदवँ दी जोडे देहरी तेहमां थुंभ विराजे ॥७॥एहनो.

ऋषभ प्रभुने पुत्र नवाँणु आठ भरत सुत संगेरे।
एकसो आठ समय एक सिद्धा, प्रणमुं तस पद रंगे ॥८॥एहनो.

फरती भमती मांहे प्रतिमा एकसो बत्रीसरे।
तेहमाँ चोंवीस परिकर साथे एक सो साठि जगीस ॥९॥

पोलि बाहिर मरुदेवी टुंके वेल बाइनोकी धोरे।
चौमुख देहरा मांहे थापी नर भव लाहो ली धोरे ॥१०॥एहनो.

पश्चिम ने पूरव सांहमां सोहें वंदू सहू नर नारी रे।
गज वरखंधे बेठा आई तीरथनां अधिकारी रे ॥११॥एहनो.

संप्रति रायें भुवन कराव्युं उत्तर सन्मुख सोहेरें।
तेहमां अचिरा नंदन निरखी कहे अमृत मन मोहेरे ॥१२॥एहनो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल ९ मी—संभव जिनस्युं प्रीत ए देशी—
आठ कुवा नव वावडी हुंतो स्यै मदस देखण
जाउ महादधि नो दांणो कांहन्डो ए देशी

हवे छिपा वसन मुख सोहेरे तुहमो चालो चेतन लाला राजि ।
आज सफल दिन एरूडो जिन मंदिर जिन मूरति भेटो ।।
भव भवनां पातिक मेटो राजि, आंज सफल दिन ए रूडो ।।१।।
तिहां पांच गंभारे जई अटकलियां,
जाणु पंच परमेष्ठी मलीयारे । आ.
रायण तलें पगलां सुख दाई ।
श्रीऋषभ तणा गुण गाई रे आ०।।२।।
नेमी जिणेसर सीस प्रवीणा
मुनि नंदीषेण नगीन राज. आ. ।
श्री शेत्रुंजय भेटण आया,
जिहां अजित शांति गुण गाइया रे । आ.।।३।।
तेह तवन महिमाथी जोडे
बे जिनवर वांद्या कोडे राजि, आ. ।
ते मंदिर छे, जोडे कीधुं साखी
तिहां में प्रभु त्रिण छे जिन हरषी ।।४।।आ.।।
नयरणुं भोई तणो जे वासी,
मन्नु पारिख धर्म अभ्यासी राज । आ.
तिणे जिन मंदिर कीधुं सारुं
तिहां त्रण प्रतिमाने जुहारुं राज ।।५।।आ.।।
एक भुवनमां त्रण जिन चंदा,
बीजामां नेमि जिणंद राज । आ.।
देवल एक देखी आणंदु तिहां पास प्रभुंने वंदुं राज. ।।६।।आ.।।
बावन देहरी पाछल फरती,
जिन मंदिर नी सोभा करती राज. आ ।
तेहमां अजित जिणेसर राया,
प्रेमे प्रणमीने गुण गाया राज ।।७।।आ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नान्हां मोटां भुवन निहाली,
सडत्रीस गण्यां संभाली राज आ.।
सवि संख्या जिन पडिमा धारी,
पांच से नव्यासी जुहारी राज, आ.॥८॥
एह तीरथ माला सुविचारी,
सुणी जात्रा करज्यो सारी आ. ॥
दर्शन पूजा सफली थास्ये.
शुभ अमृत भावे गुण गास्ये राज आ.॥९॥

ढाल १० मी–संभव जिनस्यु प्रीत अविहड लागी रे ।एदेशी॥

तुम्हे सिद्ध गिरिना बे टूक जोई जुहारो रे,
उं भूमि अनादनी मुंकि एम विचारो रे ।
तुम्हे धरमी जीव संघात परणीत रंगे रे,
तुम्हे करजो तीरथ जात्रा सुविहित संगे रे ॥१॥
वावरज्यो एक वार सचित्त सहू टालो रे ।
करी पडिकमणां दोय वार पाय पखालो रे ॥२॥
तुम्हे धरज्यो सियल श्रृंगार भूमि संथारो रे ।
अलु आंणे पाये संचार छहरी पालो रे ॥३॥
इमनी सुणी आगम रीत हीयडे धरज्यो रे ।
करी सद्दहणा परतीत तीरथ करज्यो रे ॥४॥
आ दुःसम काले जोय विधन घणेरां रे ।
कीधुं ते सी धुं साये स्युंछे सवेरा रे ॥५॥
ए हित शिक्षा जांणि सुगुण हरखो रे ।
वली तीरथ ना अहिठाण आगल निरखो रे ॥६॥
देवकीना षट नंद नमी अनुसरिये रे ।
आतम शक्ति अमंद प्रदक्षिणा करीये रे
पहला उलखा डोल भरी ते जलस्युं रे ॥७॥
जांणे केशरनो झक भील नमणना सरस्युं रे ।
पूजे इन्द्र अमोल रयण पडि माने रे ॥
तेजल आखि कपोल सेवो सिर ठामे रे ॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगल देहरी दोय समीपे जाऊं रे।
तिहां प्रतिमा पगलां दोय नमु सीर नामी रे ॥९॥
वली चेलण तलावडी देखी मनमां धारुं रे।
तिहां सिद्ध सिला संपेख गुणी संभारूं रे ॥१०॥
भाडवें भवि अण वृंद आपण गाऊँ रे।
जे थानिक अजित जिणंद रह्या चउ मासु रे ॥११॥
जिहां संब मुनि परजुन्न थया अविनाशी रे।
धन्य कृतारथ पुण्य श्रुणें गुण रासी रे ॥१२॥
हुंतो सिद्धवड पगलां साथि नमु हित काजे रे।
इहां सिव सुख कीधुं हाथी बहु मुनिराजे रे ॥१३॥
इहां सिव सुख कीधुं हाथी बहुं मुनिराजे रे।
इम चढतां च्यारे पाजि चड गतिवारे रे ॥१४॥
एह तीरथ जंगी जिहाल भवजल तारें रे।
जेजग तीरथ संत ते सहुँ करीये रे ॥१५॥
ते सहुपण ए गिरि भेटे अनंत गुण फल बरीये रे।
पुंडरीक नांम एह वीस लीजे रे ॥१६॥
जिम मन वंछित कांम सघली सीजे रे।
करीये पंच सनात्र रायण आदें रे।
निम रूडी रथ यात्रा प्रभु प्रसादें रे।
वली नवांणु वार प्रदक्षिणा फरिये रे।
स्वस्तिक दीपक सार जय-जय करीये रे ॥१७॥
पूजा विविध प्रकार नृत्य बनावों रे।
इम सफल करी अवतार गुणी गुण गावो रे।
तुम्हे साधु साव्हमीनी भक्ति करज्यो रंगे रे।
निज शक्ति अनुसारे तीरथ संगे रे ॥१८॥
पाली तांणु नगर धन्य-धन-धन ते प्राणी रे।
जिहां तीरथ वासी जन पुण्य कमाणी रे।
प्रह ऊगम ते सुर ऋषभजी भेटे रे।
करिदशत्रिक अणगार पाप समेटे रे ॥१९॥
जिहां ललिता सर पालि नमो प्रभु पगलां रे।
डुंगर भणि उजमाल भरीये उगला रे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विचमा भूषण वावि जोईने चालो रें।
तुम्हे गुण गाता शुभभाव साथे मालो रें ॥२०॥
धूपघटि कर मांहि भूंला देता रें।
वडनी छाया मांहि ताली लेतां रे।
आवी तलेटी ठाण तनु शुचि करीये रे।
पूरव रीत प्रमांण पछे परवरिये रे ॥२१॥
इणी परें तीरथ माल भावे भणस्ये रे।
जिणें दीठु नयण निहाल विसेखे सुणस्यें रे।
हलस्यैं मंगल जेह कंठे धरस्ये रे।
वली सुख संपद सुविलास महोदय वरस्ये रे ॥२२॥
तपगच्छ गयण दिणंद रूप छाजे रे।
श्री विजय देव सुरिन्द अधिक दिवाजे रे।
रत्न विजय तस सीस पंडित राया रे।
गुरु राय विवेक जगीस तास पसाया रे ॥२३॥
कीधो एक अभ्याश अढार च्यालीसे रें।
उजल फागुण मास तेरस दिवसे रें।
श्री विमलाचल चित धरी गुण गाया रे।
कहे अमृत भवियण नित नमो गिरिराया रे ॥२४॥

कलशः—

इम तीरथ माला गुण विशाला विमल गिरिवर राजनी
कहि स्वपर हेतें पुण्य संकेते एह जिनवर साजनी।
तप गच्छ गयण दिणंद गणधर विजय जिनेन्द्र सूरी सरु
रची तास राज्ये पुण्य साजे अमृत राग सुहे करु ॥१॥

इति तीर्थमाला सम्पूर्णम् श्री विमलाचल गिरी राजनी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्री ॥

श्री तपा गच्छ एवं खरतर गच्छ के शत्रुंजय पर अधिकार संबंधी

छंद

दोहा—

सरस्वती माता मानिहे, करूं कौतुक इक बात।
भट्टारक बेहुँ भिड्या, ते आंखु अवदान ॥१॥
वैरागी सन्यासीयाँ, जुडतां पहेला जंग।
जैन तणा जालम यति, अडिया आय अभंग ॥२॥
तप गच्छ नायक तीरसु, यति बहुल निज जांण।
मन मांहे मोटी मद्धरे, पंचम काल प्रमांण ॥३॥
खरतर गच्छ नायक निपुण, पंडित प्रौढ प्रवीण।
मति सागर महिमा अधिक, सकल कलासु कुलीण ॥४॥
शत्रुंजय गिरनार गिर, तीरथ जैन जगीस।
भाव सहित भेटण भणि, आव्या मुनिना ईश ॥५॥
पालीतांणे पुण्य थो, पाव धरया पटधार।
तेहवे तप गच्छ नायके, कह्यो संदेसो सार ॥६॥
एहज तीरथ ऊपरें, हुकम हमारा होय।
तब चढज्यो निस्संक तुम, जब लग बेठो जाय ॥७॥
यों कहि आयो आपसुं, जमात यतीरी जोय।
ज्बैपण मुनिवर उठीया, आप तणे बलदोय ॥८॥

छंद भुजंगी—

मुनिऊठीया मोकले मन्न माझी,
झगड़ाकरे वाच ढीरी सजाझी।
उभे सैन्य सांजा तणी सज्झि आई,
जथो बत्थ आया करवा लडाई ॥१॥
लिया हाथ डांडा खटाखट्ट खेले,
......ह पांमे झटा झट्ट झेले।
बिन्हे सैंन्य सांजा बीये मार दोटां,
लताडे पछाडे किया लोट पोटों ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुडै गोफणां गुंजति युंगि लोलैं,
हुंकारा करी हाक मारी हिलोले ।
मकाराँ चकारां मुखे वेण जंपे,
कितां कायराँ रै मनें कोपकंपे ॥३॥
उखैला उखेले अगा बात आडी,
झपावे झुकावे यति फोज जाडी ।
फटाफट्ट फूटे मथारा मरद्दां,
घूमे उपरा आयने गेंण गिद्धाँ ॥४॥
कुत कंकरी कैडि भागो कितांरी,
इटाले करी आँख नाँखी उतारी ।
पडे मार पाषांणनी पूर प्राभी,
लजावंत साधु रह्या तेथ लाजी ॥५॥
सज्या संघना संगी हुंता हटीला,
रिशां राड देखी भिडचा ते भटीला ।
तपा नायरे साथ हुंतास सीपाई,
बलात्कारथी बंदूकां तेण वाही ॥६॥
यति साथ दो च्यार हुआं भ खंडी,
तदा भीड भागो अखाडे अखंडी ।
वेधी वेध राखो भलो वैर वाल्यो,
जांणी तीर्थ भूमि फिरी पुन्य फाल्यो ॥७॥
रखो खेत हाथे खरवारे खुल्याली,
ततै तेज खोयो करंतै कपाली ।
पटक्कैपरी पालखी नींठ नाठो,
तक ताक देखी जायै तेम त्राठो ॥८॥
मिल्या लोक अनेक जोवा तमाशो,
दीये हाथ ताली करै केईहासो ।
जुटा जैन योगिन्द्र बेहुँ बलिष्ठा,
परं ज्ञान ग्रन्थे नही ते गरिष्ठा ॥९॥
भरया कोप क्रोधें मनें मांन आंणे,
यति धर्म एको नही कोई जांणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धोबी साधवाली धका धक्क मांडी,
मुनि मार्ग मर्याद बेहुँ छेक छोडी ॥१०॥
क्षमा धर्म खोयो समो नांहि जोयो,
धरा ऊपरे जई नरो धर्म धोयो।
अक हक हांणी इणे आज कीधी,
यति धर्मने अंजली अेन दीधी ॥११॥
मते आपरे मंद बुद्धि ए मंड्या,
इसा आहूडचा जेम पाडा प्रचंडा।
यथा अल्प पाँणीय भेसाज्युं डोल्हयो,
तथा जाडयथी जैन शासन विगोयो ॥१२॥
विढं तांइ सीवे ढि पाई वडाई,
यति नांहि जिंदा कहांणी कहाई।
यतीडे करी जोर जाझी जडाई,
गणा धीशरी अट्ट चौकै चढाई ॥१३॥

दोहा—

मांनी मद मच्छर भरचो, तप गच्छ तणो तिलक।
पिण खरतरस्युं खेडतां, सटकी गयो सलक ॥१४॥

कलश छप्पय—

सटकी गयो सलक्क पटकी पालखी पुरांणी,
आतप गिरि उठाय तुरत लेगया तांणी ॥
अपजस लह्यो अपार, जगत ए वातज जांणी,
मुरझांणा महाजन्न, परेम न रह्यो पांणी ॥
भ्रूंभंत एम झोखो वदन, थयो अघटतो आदरी।
सकल लोक समझकहे, वरजो वात जवादरी ॥१५॥

दोहा

अढारसे अेकावनै, वैसाखे वांणी।
जालम यतिवर भ्रूंभिया, सेत्रूंजा संधांणी ॥१६॥
पाली तांणे पेखोयो, यति तणौ अे जंग।
भणेयूं भोजग भीमडो, रुडो राख्यो रंग ॥१७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री

श्री गिरनार तीर्थमाला

गोकुल नी गोवालणी मही वेचवा चाली ॥ए देशी॥

सरसति मात मया करी, दीजे वयण रसाला।
श्री गिरिनार गिरी तणी, कहूँ तीरथमाला ॥१॥

ए पण सिद्ध गिरी टूंक छे, पांचमुं सुविशाला।
कांकरे कांकरे सिद्ध जी, अनंत सम्भाला ॥२॥

रेवताचल ने मूल छें, जोरणगढ भालो।
मांहे त्रिशलानंद ने, देहरे सम्भालो ॥३॥

धातु नी पडिमा साठ छे, बीजा चोत्रीस।
जिन चोवीस वटा भला, इग्यार केहीस ॥४॥

तेहनें सन्मुख चोमुखे, जिन च्यार लहीस।
ते प्रणमी ने चालीइं, रेवताचल जईस ॥५॥

मारग गोधा वाव्य थो, निकसी दरवाजे।
जमणुं वाघेसरी जोईइं, पूंठे सरोवर छाजे ॥६॥

आगल वाव्य सोहामणी, जालिम खाँ ने बणाई।
चालतां झाडी मांहि छे, दोय पर्वत भाई ॥७॥

ते बिच मां थइ चालतां, आवी देहरी नजीक।
सिवनी मूरति तेहमां, जुओ निजरें ठीक ॥८॥

सरीता पाज उलंघतां, तीहां झाडो प्रचंढ।
पंथ वहंतां रे आवीओ, दामोदर कुन्ड ॥९॥

तेहने ऊपर सोहीइं, दामोदर देवा।
वैष्णव जन नाही करी, करे नव-नव सेवा १०॥

राधिका रूप सोहामणूं, नरसिंह मेहता ने।
हार आल्यो ते जांणीइं, सवि दुःख खोवा ने ॥११॥

देहरां च्यारि ने देहरी, सवि मलि ने रे वीस।
ए पण वैष्णव धर्मनां, सवी थांन जगीस ॥१२॥

आगल हनुमंत वीर छे, वैरागी अखाडे।
नानक पंथी तिहां वसे, सहु विजया ने काढे ॥१३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंगी-जंगी लोक छे, तिहां ना, रहे नारा।
दानादिक करिया नही, नहिं धर्म विचारा ॥१४।
ते जोई मारग चालतां, मृगि कुन्ड सोहावे।
सिव नां थांनक दीपतां, देहरां त्रण दीपावें ॥१५॥
संकर नागर ते ह नी, बावडी जल पीओ।
तिहां विसामो लेइ ने, मुनि ने अन्न दीओ ॥१६॥
पाय धरंता वावडी, संघनी तव आवी।
विनय विजय नी पादुका, श्री संघे बनावी ॥१७॥
तलहटी पूरी थई, नेमिना गुण गाई।
त्रण खमासण देई ने, हवें चढीई रे भाई ॥१८॥
चढवा मांडयु जे तले, तव अलीय खपावे।
मारग पांडव पांचनी, पंच देहरी आवें ॥१९॥
द्रौपदी नी छट्टी कही, देहरी दीपावें।
आगल आंबली हेठलें, वीसामो रे थावे ॥२०॥
तदनंतर नीली पर्व छे, विसामा सु ठाम।
काली पर्व बीजी कही, बेसोगुणी जन तांम ॥२१॥
धोली पर्व त्रीजी जई, नेमना गुण गावो।
लाडू अमृत बाई नी, पंचमी मन भावो ॥२२॥
छठी माली पर्व ने, पाछल छे रे कुंड।
देह शुची करि तेह मां पेहरी वस्त्र अखंड ॥२३॥
नेमने वंदने चालिइं जइ चढीइ सोपांने।
मानसिंघ मेघजीइं कीयां, श्रावक चढवा नें ॥२४॥
चढतां नेमनी पोलमां पेंसो गुणवाला।
जई पच्छिम द्वारे भलु, देहरु सुविशाला ॥२५॥
मांहे आवी प्रभु नेम ने, स्तवीइं शुभ बोल।
त्रिभुवन मांहे जोयतां, नहीं ताहरी तोल ॥२६॥
त्रण कल्याणक ताह रां, हुवां माहाराजां।
दीक्षा, ज्ञान ने मोक्ष नां, सुख लीधां ताजां ॥२७॥
ए रीतें स्तवना करी, जुओ मूल गभारे।
पडिमा त्रण सोहामणी एक धातु नी धारे ॥२८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रंग मंडप ने आलीइं, तिहां तेर जिनेशा।
पाछल भमती मांहे छें, नमीइं शुभ वेशा ॥२९॥
जिन पंचास कह्या भला, नंदीश्वर द्वीप।
बावन पडिमा तेह मां, नमी कर्म ने जीप ॥३०॥
समेत शिखर नो थापना, तिहां वीस जिणंदा।
चोवीसवटा दोय छें, प्रणमें आनंदा ॥३१॥
श्री पदमावती वंदीइं, दोय गणपति सारा।
ए सहू पाछल जोई नें, नमि निकसो द्वारा ॥३२॥
नेम ने सन्मुख मंडपे, चौदसयां बावन।
गणधर पगलां सोहतां, प्रणमो भवि जन्न ॥३३॥
पासें एक छे ओरडी, तेह मां काउसगीया।
मोटां अद्‌भुत सुंदरु, मुज मन माहे वसीया ॥३४॥
मूल गभाराने दक्षिण, द्वारे निकली नें।
अंबनी हेठल पादुका, नेमजी प्रणमी नें ॥३५॥
जोडे मात चक्केसरी, देहरी मांहे सोहें।
पाछल देहरी एक छे, दोय पगलांरे मोहें ॥३६॥
ऋषभ नां नमी ने चालीइं, पूंठे देहरी एक।
राजीमतीनी पादुका, संगे देहरुं नजीक ॥३७॥
गोवर्धन जगमाल नुं, जिनऋषभ स्युं पांच।
आगल देहरी दोय मां, दोय पगलां रे वाच ॥३८॥
पाछल देहरी तेहमां, प्रणमुं ऋषभ नां पगलां।
प्रेमचन्द साहें थापीयां, श्रावक नमे सघलां ॥३९॥
नेमनी पाछल भोंयरे, अमीझर जिन पास।
संगे पडिमा तीन छे, नमतां शिव तास ॥४०॥
ऊपर जीवित स्वामी नी, मूरति सुखकारी।
बीजी रहनेमी तणी, सूरत छे प्यारी ॥४१॥
मूल कोटनी देहरी, चोरासी धारी।
नेउं जिनने वंदीइं, ए छे भव जल तारी ॥४२॥
नेम थी पूर्व दिशा अछे, दिग अंबर भुवने।
पडिमा एक जुहारिइं, ते निरखो रे सुमने ॥४३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मांडवी वालो गुलाब सा, तेणे कुंड बनाओ ।
अंबनी छाया हेठले, भवि जन मन भाओ ॥४४॥

वस्तुपाल ने देहरें, तिहां चोमुख थाप्यो ।
तेजपाल नां दोय छें, देहरां जस वाप्यो ।४५॥

एक देहरे जिन एक छे, बीजे चौमुख सारो ।
पाछल मांडवी सहर नो, साह गुलाब विचारो ॥४६॥

तेणे देवल बांधीउं, तिहां एक जुहारो ।
जोडे संप्रतिराय नुं, देहरूं निरधारो ।।४७॥

तेहमां नेमि जिणंदजी, मुज लागे रे प्यारो ।
पाछल ज्ञानज वाव्य छे, जल अति सुखकारो ॥४८॥

पदमद्रह नी ओपमा, पद पंक्ति सफारो ।
भीम कुंड सोहामणो, धन खरच्युं अपारो ॥४९॥

भीमजी पांडवे सो कीओ, मनमांहि विचारो ।
ऊपर कुमारपाल नुं, जूंनूं देहरुं सधारो ॥५०॥

नेम जिनेसर चैत्य थी, उत्तर दिशि वारूं ।
देहरे अदभुत स्वामि छे, प्रणमुं त्रण वारुं ॥५१॥

तिहां आरसमय कोरणी, मांहें चोवीस वट ।
वखत साहे ते कीओ, तुमे जुओ प्रकट ॥५२॥

तेहने सनमुख देहरु, पदमचंदे रे कीधुं ।
पंच मेरु करी थापना, सवि कारज सीधुं ॥५३॥

वीस जिणेसर तेहमां, बैठा महाराजा ।
तेहनें जमणी पास छें, वणथली संघ ताजा ॥५४॥

तेहना देहरा मांहि छे, बहु थंभ सोहावे ।
अनोपम कोरणीईंकरो, जोइ सीस धुणावे ॥५५॥

सहेसफणा प्रभु पास जी, तेहमां कांनदासे ।
थाप्पा दोय जिणंदजी, तुम जुओ उल्लासे ॥५६॥

पाछल भमती देहरी, कही अडतालीस ।
तिहां सुहंकर साहिबा, जिन पिसतालीस ॥५७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभुजी ने जमणें जोईइं, अष्टापट देहरुं ।
च्यार आठ दस दोय नें, हुँ प्रणमुं सवेरुं ॥५८॥
जिननी डावी दिसा लहू, देहरे चोमुख वारुं ।
च्यार जिणेसर तेहमां, नित उठी जुहारुं ॥५९॥

संग्राम सोनी ने देहरें, कोरणीनी जुगत ।
मोटो मंडप मांडियो, केती कहूं विगत ॥६०॥

तेहमां सहस फणा प्रभु, एक छे महाराजा ।
पाछल जोधपुरी भलो, अमरचन्द छे ताजा ॥६१॥

तेहनें देहरें एक छे, जिनजी सुखकारा ।
तेह थी उत्तर देहरे, जिन एक सुधारा ॥६२॥

पाछल गजपद कुन्ड छे, जुओ दृष्टि निहाली ।
तिहां जिन पडिमा एक छे, कून्ड ने थंभ भाली ॥६३॥

आगल केकी कुन्ड छे, में नयणे रे निरख्यो ।
गिरिथानक सहू निरखतां, बहु आतम हरख्यो ॥६४॥

मेलग बसहीइ सोल छे, जिन मंदिर मोटां ।
एक सो बत्रीस में गण्यां, देहरां सवि छोटां ॥६५॥

सर्व मली देहरां देहरी, एक सौ अडतालीस ।
तेहमां प्रभुजी च्यार सें, ऊपर वलि बत्रीस ॥६६॥
नेम ने वंदी चालीइं, सहसावन जई इं ।
वस्तुपाल ना देहरा, पाछल थई वही इं ॥६७॥
ऊपर चढतां दक्षणे, राजीमती गुफाइं ।
ऐसी राजीमती वंदीइ, रहनेमि उछाहें ॥६८॥
वंदी आगल चालीइं, आवी गौमुखि गंगा ।
तिहां चोवीस जिणंद नां, पगलां सुख संगा ॥६९॥
प्रणमी आगल चालतां, आव्यो झंपापात ।
ते थांनक दोय देहरी, सुन्दर विख्यात ॥७०॥
तिहां पगलां रामानंदीनां, जोडे नेमानंदी ।
आगल ईश्वरदासनाँ पगलां सहु फंदी ॥७१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डगला भरतां प्राणिया, आवी हाथणी पोल ।
तिहां पेसी ने ऊतरो, सहेसावन भोल ॥७२॥
मारग विकट भाडी बहू, उतरचा जब हेठें ।
देरीइं नेम नी पादुका, नमतां दुख नेठें ॥७३॥
ते थांनक प्रभु नेम ने, संजम केवल नांण ।
राजीमती पण तेहज, थांनक सिव ठांण ॥७४॥
ते कारण भवि प्राणिया, पूजो प्रभुजी नां पगलां ।
केसर चंदन लेइ ने, जेम दुख जाइं सघलां ॥७५॥
गीत नृत्य बनावी ने, प्रणमी पाछा चालो ।
गोमुखी गंगाइं आवी ने, बीजी टुन्क संभालो ॥७६॥
राजा रामे बंधावीआ, पगथीआं सोहंता ।
जमणूं रहनेमी तणूं, देहरुं सुण संता ॥७७॥
सोपानें चढी चालतां, आव्यां माताजी अंबा ।
अनोपम कोरणीइं करी, देहरे घण थंभा ॥७८॥
वाहन सिंह ने ऊपरें, बैठां छे रे अंबा ।
मिथ्यात्वी कहें माहरां, एह छे जगदंबा ॥७९॥
ते खोटुं करी मानीइं, सही शासन भक्ति ।
नेमनी ए अधिष्ठायिका, कही शास्त्रमां जुक्ति ॥८०॥
ते अंबा प्रणमी करी, निकसो जव द्वारें ।
सिवनी मूरत दीपती, जोइ चाल विचारें ॥८१॥
त्रीजी टूंक जई करी, नेमना पय वंदो ।
कोरणीइं करी सोभती, देरी जोइ आनंदो ॥८२॥
मिथ्यात्वी कहें एह छे, गोरखनाथ नां पगलां ।
चोथी टून्क भणीधरों, भवियण तुम डगलां ॥८३॥
तिहां पण नेमनी पादुका, वली सुन्दर पडिमा ।
गोसाइं ओघडनाथ नी, जायगा कहें क्षणमाँ ॥८४॥
गोसाइं वैरागीया, करें नव नव सेवा ।
तीहां थी चालतां हेंठले, जमणु ततखेवा । ८५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असनिकुमार अतीतनुं, थांनक छे रुडूं ।
कुण्ड कमंडल हेठले, नहिं भाख्युं कूडूं ॥८६॥
तेहने ऊपर चालतां, आवी पांचमी टूंक ।
विषम थले चढतां थकां, नेमि पगला ने टूंक ॥८७॥
केसर चंदन लेइ ने, पगलां ने पूजो ।
पडिमा एक छे आलीइं, एह देव न दूजो ॥८८॥
नेम थया ते थांन के, शिवना अधिकारी ।
धरमी जन भेला मली, वंदे नर नारी ।८९॥
श्रावक कहे प्रभु नेम नी, एहज पडिमा छे ।
ब्राह्मण शंकराचार्य नी ठरावे छे आछे ॥९०॥
ए पगलां जिन नेम नां, कही श्राध ठरावें ।
दत्तातरीनी पादुका, गोसाइं बतावे ॥९१॥
जे जेहना मन मां वस्युं, ते तेह ठरावे ।
आगल पंथे चालतां, रेणुका मात आवें ॥९२॥
पांडव पांच गुफा भली, जोइ आगल निरखो ।
छठी टूंके रे कालिका, देखी मन हरखो ॥९३॥
चालतां आगल आवियां, वाघेसरी माता ।
सातमी टूंक सोहामणी, जुओ दृष्टि उजातां ॥९४॥
तिहां रसकूंपी नो कुन्ड छे, रुप सोना सीधी ।
रयण नी पडिमा एक छे, निसुणी बहु बुधि ॥९५॥
त्रीजे भव जे मोक्षमां, जानारो रे प्राणी ।
ते भवियण नितु वंद सें, कही शास्त्र प्रमाणी ॥९६॥
तीथी पाछा फरि आवी ने, प्रभु नेम जुहारो ।
नाटक पूजा धूप थी, करी जनम सुधारो ॥९७॥
नेमनी पोल थी बाहिरे, लाखावन सारु ।
रेवता चलना ठांण ते, जोइ आतम तारु ॥९८॥
इत्यादिक गिरनार नां, बहु ठांण अनेरां ।
छे पण जेटलुं भालियुं, तेटलुं इहां सारा ॥९९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भारव्युं ते निजरे जोइ ने, ते सही करी मानो।
सघला तीरथ नो नायक, गिरनार वखांणो ॥१००॥
श्रीगिरिनार गिरी तणी, कही तीरथमाला।
नेमनां त्रण कल्याणक जपतां जयमाला ॥१०१॥
संवत अगनी सागरे, करी चंद्र ने भेलो।
तापस मास नी उजली, रस ने मांहे मेलो ॥१०२॥
सुरगुरु वासर जांणीइ, गुरु विवेक पसाया।
न्याय सागर कहे पुन्यथी, नेमना गुण गाया ॥१०३॥

इति श्री गिरनार तीर्थमाला संपूर्णः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री

श्री नाडोल पंचतीर्थीकी तीर्थमाला

श्री परमेष्टिनमः अथ तीर्थमाला लिख्यते

दोहा —

नमीउं जिरा चोवीस ने, प्रणमु हित गुरु आंरण।
सरस वचन विद्या देयरण, नित्य नमु सुविहांरण ॥१॥
पंचे तीरथ प्रणमीइं, पंचमी गति दातार।
पंच परमेष्टी वांदतां, जनम सफल अवतार ॥२॥
दरसन परसन सुलभता, लेवा समकित भोग।
लाभ लहे जात्रा तणो, फल कह्यो ग्रंथे जोग ॥३॥
समकित दृष्टि सुरनरा, पूजे श्री करण जेह।
परब दीवस अठाइयां, करे महोछव तेह ॥४॥
निन्दा विकथा परहरी, वली परहर परमाद।
विषय कषायने छोडिइं राग द्वेष उनमाद ॥५॥
सेवा भगति गुरु वंदना, जीव दया हित धार।
दांन सुपात्रे दीजीइं, ए श्रावक आचार ॥६॥
सीव हेतु साधन एह छें, संसार साधन एह।
देह तरणु साधन भलु, तोरथ करिये तेह ॥७॥

ढाल—

सांभल रे मांरी सजनी बेनी, रातडली किहां रमी आव्या जीरे ए देशी।

श्री तारंगा गढनी यात्रा, करीइं हर्ष सवायाजी रे।
बीजा अजित जिन अंतर जांमी, उच परणे प्रभु राया ॥
सुरणो भवी साजनारे ॥१॥

वली नंदी सरनी जे ठवरणा, चोसठ से अडयाल जीरे।
मेरु अष्टादश गरणधर पगलां, टुंक प्रमुख रसाल ॥
सुरणो भवी साजनारे ॥२॥

फरती भमती माहि रुडुं देहरो एक जुहारो जीरे।
तीरथ राजनां पगलां वंदुं, धर्म स्थानक मनोहार ॥
सुरणो भवी० ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अठ्ठार देशनो राज राजेश्वर, कुमार पाल नर रायाजी रे।
तीरथ राजनि ठवणा थापि, जैन धर्म दिपाया ॥
सुणो भवी साजनारे ॥४॥

जात्रा महोछव नित प्रते करिइं, पुण्य खजांनो भरिये जीरे।
गीत ज्ञान प्रदक्षिणा धरिइं, दयानंद पद वरिइं ॥
सुणो भवी साजनारे ॥५॥

इति तारंगाजी तीर्थ स्तवन संपूर्ण ॥

दोहा —

दांता गांमे देहरो, जुहारूं जगदोस।
जोगमाया अधिष्टायिका, जय अंबा देवीस ।१॥
कुंभल मेर जुहारिइं, देहरां पांच विसाल।
पंच परमेष्टि समरिइं, हू वंदु त्रिण काल ॥२॥
अनुक्रमे पंथे चालतां, गोला ग्रांम मझार।
महावीर जीवत स्वामी जुहारिइं, जात्रा सफल अवतार ॥३॥
श्रीपालण पुर नगर में, पल विहा पारस नाथ।
तिम नेमी शांति जिन वांदतां, निर्मल हू ओ गात्र ॥४॥
शिव सुख भरियें बाथ।
गांमो गांमे वांदतां, देहरां दोय मझार।
श्री नेमि जिनेसर वीरजी, वंदि चित्तर माड ॥५॥
वरमाणे वीर वांदतां, आव्या जीरा वला पास।
बावन जिनालय पेषतां, पोहती मननी आस ॥६॥
हणादरा तलहटीइं, जिन भुवन विस्तार।
मूल नायक तिहां वंदिइं, ऋषभदेव दरबार ॥७॥

ढाल:—

सासना देवी सुहं करुरे लो, ए देशी ॥

सासना देवी सुहं करुरे लो,
चउवीह संघ रयणीय वरुंरे लो।
भूमंडल माहे जीपतोरे लो, आबू अचलगढ दीपतोरे लो ॥१॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

विमल साहे करावि ओरे लो,
जांणे स्वर्ग भुवन तिहां आवी ओरे लो।
ऋषभदेव मुख देखतांरे लो, पाप पडल गया पेखतोरे लो।
विमल साहे करावी ओरे लो ॥२॥
वस्तु पाल जीनो देहरा रे लो,
सकल भुवन सिर सेहरो रे लो।
थाप्या ते नेमी जिणे सरु रे लो,
अलबेलो अल वेसरु रे लो ॥३॥
देरांणी जेठाणी ना गोखडा रे लो,
तृप्ति न होवे जोतां थकांरे लो।
बावन जिनालय शोभतां रे लो,
ललि वंदु मन मोह तारे लो ॥४॥
तिम वंदु हुँ पास जिणे सरुरे लो,
वलि चोमुख चौत्य सुहं करु रे लो।
इण रीते तार्थ जुहारि इरे लो,
देल वाडे जाऊं हुँ वारिइ रे लो ॥५॥
हवे अचल गढ जइने रे लो, चोमुख जुहारुं धाइनेरे लो।
धातु बिंब सुहामणा रे लो, वंदु तीर्थ रलियां मणो रे लो ॥६॥
जे भवि प्राणो धरा वस्ये रे लो,
ते मननी मोजां पावसुं रे लो।
कहे दया कर जोडिने रे लो,
वंदू तिरथ मांन मोडिने रे लो ॥७॥

इति अर्बुद तीर्थ स्तवन सम्पूर्णम् ॥

दोहाः—

पंथे जुहारु जिनतणा, संप्रति रायना चैत्य।
हमीर पुरे प्रभु पासजी, हुँ वंदू नित नित ॥१॥
नगर सिरोहि आवीया, संघवी चतुर सुजांण।
सुन्दर चैत्य जुहारतां, जनम सफल सुविहाण ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओला ओली मांडणी, शिखर बंद प्रासाद ।
हाथी झूले मल पता, मोडे कु मतिना उन्माद ।।३।।
जात्रा भली बहु जुगतसुं, देहरी तेर विस्तार ।
पास जिराउल वांदतां, होवे सफल अवतार ।।४।।
मुझ मन हर्ष अपार ।
अरहट वाडे वांदिया, दुःख भंजन महाराज ।
भेट्या गांम पोसालिये, श्री चन्द्र प्रभ जिनराज ।।५।।
गोमो गांमे वांदतां, शांति ऋषभ जिन देव ।
वाहली नगरे आवीने, दोय जिन मंदिर सेव ।।६।।
सादडी नगरे भेटवा, शिक्खर बंध प्रासाद ।
श्री पार्श्व नाथ जी वांदतां, मन उपनो आल्हाद ।।७।।
नगर बाहर दोय देहरां, भेटयां जिन वरदेव ।
तीन कोस डुंगर विचे, रांण पूरानि सेव ।।८।।

ढाल—

नेक नजर करो नाथ जी । ए देशी ।।

राण पुरो रलियामणो संघ जात्रा करे भलि भांत सुंजी हो ।
ए तीरथ सुहांमणो सुहांमणांने रलियां मणां जी हो ।।ए ती.।।
एहनी ओपमा नहिछे जगत में, रूडी मांडणी छे बहु जात सुजी हो ।
गढमढ तोरण जालिया, जांणे स्वर्ग मंडे वादने जी हो ।।एती.।।
नल नी गुल्म विमान, गुहिरो गाजे छे घणु नादने जी हो ।।एती.।।
तीन चोमुख रुडा शोभता, रंग मंडप चोवीश में जी हो ।।एती.।।
भमती फरती फूटरी, रूडा सिखर सोभे स्वर्गवास में जी हो ।।एती.।।
आजनो दिन रलीयांमणो, मैं तो भेटचा श्री जिनराज ने जी हो ।।.
जुगला धर्म निवारणो, ऋषभ जिणंद महाराज ने जी हो ।।ती.।।
केसर चंदण घसी घणा, आंगियां रचावुं घणे होडसुं जी हो ।।ती.।।
पूजा भगति ने करो लुछणा, अरज करे कर जोडने जी हो ।।ती.।।
धन धन्नो साह सीरोमणि,
जिणे किधा तीर्थ मंडाण ने जी हो ।।तीर्थ.।।
धननो लाहो लेइकरी, जेणे स्वर्ग सुं कर्या संधाण ने जी हो ।।तीर्थ.।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोड़ भंजन नेमो सरु, तिम जिन भुयरा सुषांग ने जी हो ।।तीर्थ ।।
दया धरम नितु सेवतां लहिये परम कल्यांग ने जी हो ।।तीर्थ.।।
इति रायण पुर स्तवन संपूर्णम्—

दोहा—

सफल तीर्थ यात्रा करी, आव्या घांणे राव ग्रांम ।
सुंदर देहरां आठ छें, मन पांमे विसराम ।।१।।

डुगर कडणे भेटिइं, शासन नायक वीर ।
देखी हरख्यो आतमा, भागी मननी भीर ।।२।।

दयादान ने तप भला, करता पर उपगार ।
हवे नडु लाइ जाइइं, सेंतु जे गिरनार ।।३।।

ढालः—

महा विदेह खेत्र सुहांमणो ।ए देशी।।

हवे नडुलाई जाइइं, सेतुजो गिरनार,
यात्राकरण ने काज मेरे लाल ।
सेत्रुजोने जादवो, भेटतां, शिवसुख राज मेरे लाल ।
।।१।।ए तीरथ सुहांमणाँ
उलट अधिक आनंद मेरे लाल, ए तीरथ सुहांमणां ।।ए आंकणी।।
जसो भद्र सुरि लाविया, गयणां गण विख्यात मेरे लाल ।
श्री आदेसर भेटिये, अलवेलो जगन्नाथ मेरे लाल ।।२। एती.
चैत्या वली तिहां सोभती, स्वर्ग भुवन इग्यार मेरे लाल ।
धजा दंड लह के धणा, सुंदर पडिमा सफार मेरे लाल ।।३।।एती.
शांति करण श्री शांतिजी, नेमीश्वर ब्रह्मचारि मेरे लाल ।
आदेय नांम गुणायरु, पास जिनंद सुखकार मेरे लाल ।।४।।एती.
उत्तर दक्षिण दिस डूंगरी, सेत्रुंजो गिरनार मेरे लाल ।
देखतां जनम सफल होवे हूंतो वंदना करु क्रोड मेरे लाल ।।५।।एती
संप्रति रायनां देहरां, गांमो गांम विशाल मेरे लाल ।
कहे दयानंद पद सेवतां, नीत होवे मंगल भाल मेरे लाल ।।६।।एती.

इति नाडोलाइ तीरथ स्तवन समाप्तं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहा—

हर्षे जिन पद सेविए, हर्षे दीजे दांन।
हर्षे तप जप अनु मोदिये, भाव धरी बहू मान ॥१॥
श्रद्धा विवेकने भावना, व्रतसु धरिये राग।
मोह महा मद छांडीइ, चित्त धरिये वयराग ॥२॥
अड नव सतर अठोत्तरी, पूजा विविध प्रकार।
श्रावक कुल पांमी करी, नित समरो नवकार ॥३॥

ढाल—सलुंणानि ए देशी

जिम जिम जिन गुण गाइयेरे, तिम तिम हर्ष अपार। सलुणा
नाडोल नगर जाइनेरे, उलट अंग धराय। सलुणा ॥१॥जिम.
जिन मंदिर तीन छेरे, देखतां हर्ष भराय। सलुणा ॥जिम॥
पद्म प्रभ छट्ठा नमुंरे, सुंदर प्रभुदोदार,। सलुणा ॥जिम.॥
प्रथम संप्रति देहरीरे, देव भुवन विस्तार। सलुणा ॥२॥जिम.
शांति जिनेसर सोलमारे, उपगारि चितलाय। सलुणा।
ब्रह्मचारी नेमी सरूरे, गिरनारी सोहाय। सलुणा ॥३॥जिम.
बावन जिनालय शोभतारे, वंदूं जिनवर बिंब। सलुणा।
बार बावने थापनारे, देखतां हो अे अचंभ। सलुणा ॥४॥जिम.
धन धन संप्रति रायनेरे, उत्तम कांम कराय। सलुणा।
भगते जिन पद सेवतांरे दयानंद पदवी थाय। सलुणा ॥५॥जिम.

दोहा—

आण अखंडित जिनतणी, विचरो सासन मांही।
सुलभ बोंधी प्रांणीया, धरी अंग उछाह ॥१॥
सम्यग् दृष्टि जीवनें, अन्तर दसा लय लीन।
आतम भावे प्रेमसुं, अनुभव रसज्यु भीन ॥२॥
संवर भावे आतमा, समतासु चित लाय।
दया दान ने दीनता, एतरवा नो उपाय ॥३॥

ढालः—

श्री तीरथ पति वंदिइं भवि प्रांणी रे।
वामा नंद न देव सेवो भवि प्रांणी रे ॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीवरकांणा पासजी हूं वंदुरे,
नित्य उठी सवेर देषी आनंदुरे ॥२॥
सीखर बंध प्रसाद छे, फरती भमतीरे,
बावन ओला ओल मुझ मन गमती रे ॥३॥
अे तीरथ सुहांमणो, गोडवाड देसरे,
सहू जीवने आधार नव नव नवेसरे ॥४॥
गांमो गांमना संघपति इहां आवेरे,
जात्रा करे शुभ भाव, प्रभु गुण गावेरे ॥५॥
वलि विजोवा पासजी भले भेटोरे,
सुंदर प्रभु दिदार दुःख सवि मेटोरे ॥६॥
शांति ऋषभ जिन वंदिये गांम गांमेरे,
आव्या पाली सेहर भले शुभ कांमेरे ॥७॥
श्री नवलक्खा पासजी हुं जुहारुं रे,
तिम गोडी चोमाहाराज मनमोह्य माहरुंरे ॥८॥
वलि अचिरा नंद वंदिये घणे हेतेरे,
सोलमा श्री शांतिनाथ मनने गम तेरे ॥९॥
श्रीसुपास सुहांमणा जिन वंदोरे,
जात्रा करि भले भाव भव पाप निकंदोरे ॥१०॥
वलि डूंगर ऊपर एक छे जिन देहरोरे,
श्री गोडी महाराज ज्युं सिर सेहरोरे ॥११॥
इण रीते चैत्य जुहारिया घणु रंगेरे,
पंचे तीरथ धांम मनहू उमंगेरे ॥१२॥
रंगे ऋषभ गुरु सेवतां शुभकारीरे रे,
जयो जयो सासन जेने पर उपगारिरे ॥१३॥
शासन इष्ट प्रतापथी संघ समुदायेरे,
कहे दयानंद मुनि राज सहू सुख पायारे ॥१४॥
पंच तीरथनी भावना जे भावेरे,
पंचमी गति ना सुख लीला पावेरे ॥१५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहा—

गांमो गांमे आवतां जिन वर वांदु जेह ।
शांति जिनेसर समरीइं दिन दिन अधिकेनेह ॥१॥
सनात्र ओछव नवनवा, धुनि मृदंग अपार ।
ढोल नगारा गडगडे, भेरि मुंगल कंसाल ॥२॥
पूजा भगति प्रभावना, साहमी वच्छल सार ।
लाहो लीइ लखमी तणो धन मानव अवतार ॥३॥

ढाल—राग धन्याश्री—

सासन देवी ना साहाय्य थी ए,
संघ जात्रा भली भांत, जयो जिन शासने ए ।
सांडेरा नगर श्री शांतिजी ए,
तिम वीसलपुर वीजापुर शांति ॥१॥जयो.
तिहां एक डुंगर कडणमेअे ए, राता श्री महावीर ॥२॥जयो.
जीवित स्वामीनी जातरा ए, करिइ गुण गंभीर ॥३॥जयो.
बेडा नगर मे आवीया ए, श्री संभव नाथ जुहार ॥४॥जयो.
नाणा ग्रामे अति भलो ए, जीवत स्वामी जीसार ॥५॥जयो.
झाडो ली ग्रांमे देहरो ए, जुहारी जगदीश ॥६॥जयो.
बामण वाडे वीरजी ए, भेटया त्रिभुवन ईश ॥७॥जयो.
करण सुल तिहांनी कल्पा ए, अर प्रढो गिरीखंड ॥८॥जयो.
आहि नांण तिहां कण भलुं ए, सुंदर ठाँम प्रचंड ॥९॥जयो.
तिहां वीरवाडे जातरा ए, देहरां दोय विशाल ॥१०॥जयो.
वीर शांति भले भेटीया ए, चित्त थया उजमाल ॥११॥जयो.
संघ चाल्यो भली भांत सू ए, नंदि वर्धन गाँम ॥१२॥जयो.
प्रथम जिनेसर वांदिये ए, चरम जिणेसर खांम ॥१३॥जयो.
तिहां विचरया महि मंडले ए, चंडकोसिक प्रतिबोध ॥१४॥जयो.
अलंकार गिरी कडण मे ए, करज्यो तेहनो शोध ॥१५॥जयो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिहांथी नजीक छे मावडी ए, अजारि सरस्वती माए ॥१६॥जयो.
महावीर जीनो देहरो ए, भमती मां विचरंत ॥१७॥जयो.
पूरवे नगर कगर थयो ए, महावन खंड मझार ॥१८॥जयो.
तिहां लोटाणा प्रभु पास जिए, सुंदर नमुं दीदार ॥१९॥जयो.
गांम नोतोडे आवोयाए, मूल नायक महावीर ॥२०॥जयो.
अगड बिंब जिन मुरतीए भागे भवनी भीर ॥२१॥जयो.
तिहांथी डुगर खंड मेए, जीवत स्वामी जुहार ॥२२॥जयो.
चीवलो ग्रांमे भेटीयेए, श्री गोडीजी अवधार ॥२३॥जयो.
अमतडा ग्रांमे वंदीयेए, श्री ऋषभ देव नितु रंग ॥२४॥जयो.
ए पांचे तीरथ जुहा रिइं, ग्रांम गांमे उडरंग ॥२५॥जयो.
धन धन संप्रति रायनेए, जेणे कीधा उत्तम कांम ॥२६॥जयो.
बावन जिनालय देहरांरे, जांणे स्वर्ग भुवन विसरांम ॥२७॥जयो.
धन धन तीरथ जे करेए, सुलभ बोधी नर नार ॥२८॥जयो
दया विजय मुनि राय कहे ए, पांमे सुख श्रीकार ॥२९॥जयो.

कलश—

इम विश्व नायक मुक्तिदायक प्रणमुं हुँ तीरथ पति ।
वीस नगर वासी, जेन अभ्यासी, भाइ, जेठासा संघ पति ॥१॥
संवत उगणीस बारा वरसे, भेटीया मधुमास ए ।
गुण गाया रंगे उलट अंगे थूण्या श्री जगदीश ए ॥२॥
पंच तीरथ वंदी मन आनंदी, सासना देवी सुखी करो ।
तप गच्छ नायक विजय प्रभ सूरि, चिर तप्यो ससी दिणयरो ॥३॥
प्रेमे कांती रूप मनोहर, सीस किसन विजय तणो ।
रंगे ऋषभ गुरु सरण सेवा, स ल संघ आणंद घणो ॥४॥

इति श्री तीरथ माला संपूर्णम् ॥१॥

अथ तवन लिख्यते--

आज भलो दिन उगीयो पायो दरसण तेरो ।
सांभलो साहिबा वीनती मुजरो मांनजो मेरो ॥१॥आज भलो.
नेण सलुणा नंदजी, हुआ सुखजी सेना ।
ओर देव देख्या घणा, कछु लेणा न देणा ॥२॥आज भलो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेवकनी प्रभु वीनती, चित्त मांहे अब धारो।
अवर दिलासा दिजीइं ओ भव पार उतारो ।।३।।आज भलो.
वामा जी को नंदलो, पारस जग उद्धरियो।
सेव किरति कु राखी ये, चरणांसु नेहडो ।।४।।आज भलो.
आज भलो दिन उगीयो, पायो दरसण तेहरो ।।इति तवन सम्पूर्णम्।।

अथ तवन लिख्यते—

तुमतो भले विराजो जी सांवलिया माराज,
सीखर पर भले विराजोजी।
उछा नीछा परबत सोहे, तले भीलन का वासा ।।१।।तुमतो.
पेर पेर पर सिंह धडु के, जिहां लिया प्रभुवासा ।।२।।तुमतो.
तेरे घाटे चोकी लागे, पूजा आंगि रचावे।
हुकम करे श्री पास जिनेसर बांह पकर ले जावे ।।३।।तुमतो.
टुंक टुंक पर धजा विराजे, झालर रा झणकारा।
झालररा झणकारा सेती वाजे अविचल वाजा ।।४।।तुमतो.
देस देस ना संघवी आवे, पूजा आंगी रचावे।
अष्ट द्रव्य पूजामे ल्यावे, मन वांछित फल पावे ।।५।।तुमतो.
सुर नर मुनीवर वंदण आवे, महा परम सुख पावे।
छंद खुशाल चरण सेवक, हर्ष हर्ष गुण गावे ।।६।।तुमतो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री

श्री संमेत शिखर चैत्य परिपाटी

सफली सविचंग । प्रहऊठीपाजि ऊतरीजेइ ।
तलहटीइ जइ पारणु कीजइ, आणीजइ मनिरंग तुज ॥३६॥

वस्तुः—

वीर पूजिय पूजिय नयरि विहारि, संमेत सिहर हिव चालतां ।
आदिनाथ मही अरहिं पूजिअ, आगलि भद्दिल पुरजई ॥
जनम भूमि सीतलह नमोज्जइ अनुक्रमि पुहता समेयगिरि ।
वंदीय वीसइ शुभ तलहटीइ हिव ऊतरी कीजइ पारणारंभ ॥३७॥

भाषाः—

तिहां थी पाछा आवीआए, मालंतडे,राजगृह पुर माहिं । सुंणि ।
मुनि सुव्रत वली भेटिया ए ॥मा.। पंचय परबत धाहि । सुणि ।३८॥
राजगृही थो चालतां ए मा. दोइ सइ कोस वखाणि ।। सुणि.।
अवझा नयरी अती भली ए मा. इन्द्रइ वासी जांणि ॥सुणि.।३९॥
आदि अजित अभिनंदनु ए मा. सुमति अनन्तह नाथ ।
जनम भूमि तसु पूजतां ए मा. सफल हुआ मुझ हाथ ॥४०॥
मरु देवा मुगतिइं गई ए मा. सर गदुआ री ठामि ।
तसु पासइ नई पेखोइ ए मा. अछइ सरऊ नामि ॥४१॥
नयर माहि वली पूजसीउ ए. मा. त्रेवोसमउ जिणंद ।
स्नात्र करो हिव चालिसिउ ए. मा. हीअडलइ अति आणंद ॥४२॥
सात कोस रण वाही अछइ ए. मा. पहिलुं रयण पुर नाम ।
धर्मनाथ तिहि जनमीआ ए. मा. चउमुख केरइ ठामि ॥४३॥
पूजी पणमी पादुका ए. मा. कीधी जिणवर सेव ।
नयर कालप्पी आविया ए. मा. पूजीया जिणवर देव ॥४४॥
चांग पंथि चांदेरीइ ए. मा. आव्या कुलसइ खेमि ।
संति पास दोइ पूजसिउं ए. मा. हीयडइ हरख धरेमि ॥४५॥
संवत पनर पांसठइ ए. मा. जात्र हूइ अपार ।
संघ सहू घरि आवीयु ए. मा. दिन दिन उच्छव सार ॥
चिंतामणि करि पामीउ ए. मा. सुरतरु फलोउबारि ।
मुगति हुई तसु ढूकढो ए. मा. सयल सुक्ख संसारि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कमल धर्म पंडित वरू ए. मा. जात्र कीधी संघ साथि।
सफल जनम हिव अम्हतणुं ए. मा. सुगति हुई हिवहाथि ।।
तव गछ नायक सिव सुहदायक श्री जय-जय कल्याण गुरो।
तसु आंण धुरंधर विबुध पुरंदर कमल धर्म पंडित सुगुरो ।।
तसु सीस लेसिहि विबुध हंसहि तीरथमाल रची सुदिनं।
जे भविय भणेसि भावि सुणेसिइं जात्रा फल तसु अगु दिनं ।।
चांद्र गछि गुरु जाणीइ ए. मा. श्री सोमसुन्दर सूरि।
सोम देवसूरि तास सीस ए. मा. दुरिअ पणासइ दूरि ।।४६।।
सुमति सुन्दर सूरि अनुक्रमि ए. मा. राज प्रिय सूरि सार।
तसु पटि महिअलि गहगहिआ ए. मा. कमल कलश गणधार ।४७।।
तस पटि संप्रति जयवंता ए. मा. श्री जय कल्याण सूरि।
सोभागी सोहम समा ए. मा. वयण अमीरस पूरि ।।४८।।
सइंहथि श्री गुरु थापीआ ए. मा. चरण सुन्दर सूरिंद।
चउद विद्यारस सागरू ए. मा. वंदइ भवियण वृंद ।।४९।।
भुवनधर्म पंडित वरू ए. मा. गुणमणि तणा भंडार।
कमल धर्म तस सीसवर ए. मा. करइं विदेसि विहार ।।५०।।
संवत पनरह पासठइ ए. मा. हंससोम सुविचार।
नियमित मानइं वर्णवइ ए. मा. तीरथ सघलां सार ।।५१।।
तीरथ माला ए भणई ए. मा. आणी उलट अंगि।
ते नर नारी कवि कहइ ए. मा. पामइ नव नव रंग ।।५२।।

इति श्री संमेत शिखर गिरि चैत्य परिपाटी सम्पूर्ण ।।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

श्री

सम्मेत शिखर तीर्थमाला

तपागच्छीय गणि श्री सहज सागर शिष्य कृता

ढाल वडा नेसालिआनी

प्रणमिइं प्रथम परमेसरूजो,
आगरा नगर सिणगार कइ पास चिंतामणी जो ।
परतखि परताए पूरविजी भुगति,
मुगति दातार कि पास चिंतामणी जी ॥१॥
इक वार जउं शिरंनांमीइजी पांमीइ कोडि कल्याण कइ पा ।
स्वामि सेवा फलिसहू कहइजी, महमहइ परिमल प्राण कि पा. ॥२॥
आणंदकारी अ आगरइ जी देव देरासर सोल कइ पा. ।
सइं हथि हीरगुरु थापिआजी संवत सोल इगयाल कि पा. ॥३॥
राज्य राणिम रिधि रंगरली जी, रागरमणि रंगरेल कइ पा. ।
गिरु अडि गइ वर गोरडीजी गरजता गज गुरु गेलिकइ पा. ॥४॥
तेह प्रभु पास सुपसाउलिजी, तपगछ गुरुकुल वासि कइ पा. ।
नगर रतनागर आगरिजी रहीअ चउमास उल्लास कइ पा. ॥५॥
पंच कल्यांणिक भूमिकाजी परसतां फल बहु जोइ कि पा. ।
पूरव उत्तर पूजिइजी, जिहां जिन चैत्य जिन होय कइं पा. ॥६॥
सुगुरु गीतारथ मुखि सुणीजो पुस्तक वात परतीत कइ पा. ।
जनम कल्याणक भेटवाजी अलजयु हुँ निर्जाचत्तिकइ पा. ॥७॥
वंदिअ दस दोय देहरे जी, बिंब बहु धातु मम्माणि कइ पा. ।
दरिसण करिअ देरासरे जी, आगरइ प्रथम पसायाण कइ पा. ॥८॥
पुन्यवंता जगे ते नराजी, जे करि तीरथ बुद्धि कइ पा. ।
जिमजिम तीरथ सेवीइ जो, तिम तिम समकित शुद्धिकइ पा. ॥९॥

ढाल बीजी मधुमारसनी—

शुभ शकुने श्री संघ समेला, मिलिआ सज्जन सहुअ समेला ।
बोलइ मंगल वेला ॥१०॥
तुजयुंजयुं बोलि मंगल वेला,
व्यवहीरी करि दक्षिण वलिओ, हयस पल्हांणउ साहामु मिलिओ ।
गल गर्जित गजराज तु ॥११॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वामा वायस पूरि आस, खरहा चउ दक्षिण दिसि वास ।
तास शकुन पंचास तु जयु जयु० ॥१२॥

इम अनेक शुभ शकुन विचारि,
मिलिअ सवच्छ दोय गाई तिवारि ।
पहुता यमुना पारि तु जयु० ॥१३॥

कुंथुनाथ प्रभु पास जिणेसर, दोइ जिणहर पूजउ अलवेसर ।
केसर चांदण कुसुमे तु जयु० ॥१४॥

बारि कोस पीरोजाबादि, मुनि सुव्रत पूजउ प्रासादि ।
देहरासर ऋषभादि तु ॥१५॥

दउढसउ कोसे साहियाहापुरि, मिलि जिहां दश दिशि दिशाउर ।
देहरासरि बहु देवेतु ॥१६॥

तिहांथी त्रिणि गाऊ मऊ गाम, जिणहर इक तिहां जुनुं ठांम ।
प्रतिमा पनर प्रणाम तु जयु ॥१७॥

मृगावती तिहां केवल पाम्युं, चंदनबाल चरणि सिर नाम्युं ।
इण परिशुधुं खाम्युं तु जयु ॥१८॥

सामीं पगि लागी सुकुमाला, वयण वदि तब चंदनबाला ।
केवलि लहिअ रसाला तु जयु ॥१९॥

तिहां थकी नव कोस कोसंबी, जांणे अमरपुरी प्रतिबिंबी ।
यमुना सीरि विलंबी तुं जयु ॥२०॥

उतपति सुणिइ पुरुष बहुनी, पद्मप्रभ जनमि धूंनी ।
ते कोसंबी जूंनी तुं जयु ॥२१॥

जिनहर दोय तिहां वांदिजि, खमणा वसहो षिजमति कीजि ।
गढ उतपति सुणिजि तु जयु ॥२२॥

चंदनबालि छमासो तपसी, प्रति लाभ्यउ जिनवीरउ हरसी ।
वृष्टि कोडिधन वरसी तु जयु ॥२३॥

रिषि अनाथी इहानउ वासो, नयणह वेअण जिण अहिआसो ।
अवधि कही छमासी तु जयु ॥२४॥

पहिलुं समकित एमा लीधुं, श्रेणिकराइं जिन पद बाधुं ।
धना सरोवर साधुं तु जयु ॥२५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीस कोस पिराग तिहांथी, सीधउ अणिगअ पुत्र जिहां थी ।
प्रगटच्युं तीर्थ तिहां थी तु जयु ॥२६॥

ढाल त्रीजी गउडोनी—

जिहां बहुलउ मिथ्यात लोक मकरि नाहइं,
कुगुरु प्रवाहइं पांतरचा ए ।
गंगा यमुना संगि अंग पखालइ ए, अंतरंग मल नवि टलि ए ॥२७॥
अरकय वडनि हेठि जिन पांरणठांमि, यू हिरइ भगवंत पादुका ए ।
संवत सोल अडयाल, लाड मिथ्यातीअ,
रायकल्याण कुबुद्धिउ ए ॥२८॥
तिणि कीधउ अन्याय, शिवलिंग थापीअ,
उथापी जिन पादुका ए ।
कोस ब्यालीस सुपास, पास जनम भूमि,
काशी देश वणारसी ए ॥२९॥
गंगातटि त्रिणि चैत्य, वलि जिण पादुका,
पूजी अगर उषेवीइ ए ।
दीसे नगर मझारि, पगि पगि जिन प्रतिमा,
ज्ञान नहीं शिवलिंगनुं ए ॥३०॥
एक वदि वेदांत, अवर सहू मिथ्याति हरिहर,
भजन भलुं कहरे ए ।
एक वडा अवधूत, लंब जटाजूट ओकमसुं ताली दिइ ए ॥३१॥
कासी वासी कागमुओ मुगति लहइ मगधि मूओ नर खर हुइ ए ।
तीरथ वासी एम, असमंजस भाषइ,
जैन तणा निंदक घणा ए ॥३२॥
जोउ कलियुग जोर समकित पर्याय,
इणि पुरि वसतां सही घटि ए ।
हरिपुरि हरिचंदराय वाचा पालवा,
पांणह घरि पांणी वहि ए ॥३३॥
गंगातटि दूहेठि, सीहपुरि त्रिणि कोस,
जनम श्री श्रेयांसनउ ए ।
नवुं जीर्ण दोय चैत्य प्रतिमा पादुका,
सेवइं सीहसमी पंथि ए ॥३४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंद्रपुरी च्यार कोस, चन्द्रप्रभ जिनमि,
जन या चन्दनि चरचउ चउतरु ए।
पूंजउं पगलां फूलि, चन्द्रमाधव हवडां कहि;
प्रथम गुण ठांणीआ ए ॥३५॥
आवी गंगा पारि कोस नवाणूं ए, पुहुता पुखर पाडली ए।
पटणुं लोक प्रसिद्ध, श्रेणिक कोणिक पुत्र उदायी थापीउं ए ॥३६॥
तत्पदे नव नंद कलियुगी कुलहीण, राजा कुलवंत किंकरा ए।
तत्पदे चंद्रगुप्त बिंदु सार वली, असोक कुणालह मालवइ ए ॥३७॥
तस सुत संप्रति भूप सवालाख चैत्य सवाकोडि बिंब कारवी ए।
इणि पुरि श्रावक सीह चाणाइक मुंहतउ,
जिणि जिण धर्म जगावीउ ए ॥३८॥

ढाल धन्यासी—

पुहता पुखर पाडली, भेटया श्री गुरु हीरो जी।
थूभि नमूं थिर थापना, नंद पहाडीनइ तीरो जी ॥३९॥
श्रीजिनवर इम उपदिसइ इंद्र सुणउ अम्ह वांण्यो जी।
इकउ ए गिरि गिरु अरुइ, शत्रुंजा थी जाण्यो जी ॥४०॥
श्री जिनवर इम उपदि से ॥आंकणी॥
दीठउ हो डूंगर दुष हरि, महिमा मेरु समानो जी।
संमेता चल समरीइ, जिहां जिन वीस निर्वाणो जी ॥४१॥श्री.
सिरिउ सुदर्शण पादुका, थूलभद्र बहिनर सातो जी।
अवर अनेक थयां हूआ इहां पुहवइं पुरुष विख्यातो जी ।४२॥श्री.
नयर मझारिं दोइ देहरा, खमणा वसही एको जी।
बिंब बहु देहरासरि, घरि घरि नमिअ विवेको जी ॥४३॥श्री.
संघ मिल्यु श्री अ आगरा, पाडलि पुरनउ समेलो जी।
वलि मिलिउ संघ मालवी, दूधइं साकर भेल्यो ॥४४॥श्री.
आलोची अ आडंबरइं, बदरे घाल्या दामो जी।
तरल तुरंगम पाखरचा, वृषभ वहइ भरठामो जी ॥४५॥श्री.
सखर सुखासण पालखी, चतुर चड इंच कडोलो जी।
पगि पगि जिनपद पूजतां घनसारादिक घोलो जी ॥४६॥ श्री. ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वानर वन जन मन खुसी, तिहां खेलइं खिणमात्रो जी।
परगट दिक पट देहरइं, बैकुंठ पुरीकरि जात्रो जी ॥४७॥ श्री. ॥
कोस इग्यार विहार पुरि, तिहां नमुं त्रिण चैत्यो जी।
एक दिगंबर देहरु, दूरि करूं दुख देत्यो ॥४८॥ श्री. ॥
कोस त्रिहुँअ तिहां थकी, पावा पुरीय प्रसिद्धो जी।
जल थल थूभ तिहां भला,
जिहां जल तिहां जिन सिद्धो जी ॥४९॥ श्री, ॥
बार जोयण जंभीगाम थी, देव कीधउ उद्योतो जी।
त्रिगढइ बीजि प्रगडा समयइ,इणि पुरि वीर पहोतो जी ॥५०॥ श्री. ॥
इणि परि बहु प्रतिबूजव्या बांभण सइं चउमालो जी।
गोयम गण हर दीखिया, दिखी चन्दन बालो जी ॥५१॥ श्री. ॥
काती मास अमावसइं, सोल पुहुर उपदेसो जी।
कासी कोसल पोसही, सीधा वीर जिणेसो जी ॥५२॥ श्री. ॥
नख चूंटीअ माटी ग्रही, लोकें लीधी राखो जी।
जिन निर्वाण मही तिहां, पालि पखइं सर साखो जी ॥५३॥ श्री. ॥
पुस्तक वात मीठी हूई, जब ते दीठो भूमो जी।
बलिहारी गुरु बोलडै, समरि समरि रमनि घूम्यो जी ॥५४॥ श्री. ॥
गांम गुणात्तअ जन कहि, त्रिहुं कोसे तस तीरो जी।
चैत्य भलोउ जिहां गुणशीलउं,समोसरद्या जिहां वीरो जी॥५५॥ श्री. ॥
नयर नवादइ जिन वांदिआ, नव कोसे नव सालो जी।
गोमां घाटी अ सांसरद्या संतोषी घट वालो जी ॥५६॥ श्री. ॥
तीरथ भूमि न निदीयइं तउ हइ कहउ दोइ बोलो जी।
लोक सहूअ लंगोटीआ, सिरि जूडउ तनु खोलो जी ॥५७॥ श्री. ॥
नारिन पहोरइ कोइ कांचली, कांचली नाम इंगाल्यो जी।
जोओ अचरिज इम कहइं संघनी नारि निहाल्यो जी ॥५८॥ श्री. ॥
बालुं तेह कुदेसडउं, जिहां एहवी नारद्यो जी।
सिर ढांकइ किसूं कोढिणी, ए अवतारि नवारद्यो जी ॥५९॥ श्री. ॥
चूल्हा फूंकि ए संखिणी, का सू बालि ए नाको जी।
रूंखि रसोई अ नीपजि, अम्ह घरि सूरिज पाको जी ॥६०॥ श्री. ।
मीठा मेवा महुआ हुआ, भला भला भील भोगी जी।
बहुल कतूहल जंगली, सहुअ सराहइ तेणो जी ॥६१॥ श्री. ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कठहल वडहल फलवडां, चारोलीअ बेदामो जी।
हरडइ पींपरि पीपला मूल, फणस फल नामो जी ।।६२।। श्री. ।।
गज टोलां दोलां वने, चरइ गेंडांसा वजराजो जी।
जरखां अजगर गरजतां, बारह सीग अगाजो जी ।।६३।। श्री. ।।
कोइ न उलखि उषधी, जल थल रूंष विशेषो जी।
जंगलि जोइआं ते जेहनउ, लिख्यो न जाइ लेखो जी ।।६४।। श्री. ।।

दोहा:—

दीठउ डूंगर दूरि थी, अटवी अटक उलंघि।
पालगंज गिरि तलहटी, पांमो कुसलइं संघि ।।६५।।
संघपति भूपति भेटिओ, भरि भेटण पाय नमी।
करो वंदन जिनराजनी नमीये सिरनामी ।।६६।।

ढाल सोरठी वेंलिनओ:—

तब भूपति बोलइ भल्ल, नामिं जे पृथिवीमल्ल।
अब जीवित सफल अम्हारु, जउ दरिसण दीठ तुम्हारुं ।।६७।।
हमचउ तुम्हें महुत वधारु। गिरि ऊपरि तुम्हें पधारुं।
सीधा जसत्य सिरि जिन वीस। करि यात्र नइं नांमउं सीस ।।६८।।
आदेश लही नरपतिनउ। सवि संघ चडइं स यतनउ।
तब हुउ अचरिज एह । विण वादल वूठउ मेह ।।६९।।
फागुण सुदि सुरगुरु वारिं । पंचमि दिन देवजुहारि।
करि तीरथ तप उपवास, गावइ गुण गोरी जन भास ।।७०।।
नर नारी पहिरी ओढी, पूजइ प्रतिमा प्रभु पोढी।
फरिसइ वली वींसि टुक, टाली मल मूत्र नि थूंक ।।७१।।
श्री अजित संभव अभिनंदन, श्री सुमति पद्मप्रभ वंदन।
सुपास चन्द्रप्रभ सुविधि शीतल श्रेयांस विमल ।।
श्री अन्नत नइ धर्मह शांति, कुंथु अर मल्लि नमिए कांति।
मुनि सुव्रत श्री नेमि पास। इहां कीधउ कर्म विणास ।।७२।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कीधां अणसण जिहां रही ऊभ, तिहां देवे थाप्यां सहू थूभ ।
मांहि मांड्या जिनवर पाय, ए मोटउ मुगतिउ पाय ॥७३॥

सीधउ इहां शील सन्नाह, करि अणसणनउ निरवाह ।
लख भव लगि रूपीराय, रुलिओ आलोअण अण अणठाय ॥७४॥

प्रतिबोधी जइतउ जाट, जस भद्रि ग्रही गिरिवाट ।
बप्प भट्टि गुरु पालित्त, इहां यात्रा करता नित ॥७५॥

अवदात घणा छइ गिरिना, कहवाइ किम बहु परिना ।
भाग्य हुइ ते ए गिरि फरसइ, तिहां निसिदिन जलह वरसइ ॥७६॥

गिरि आगइं कोसे बारे । उपरि थी देव जुहारे ।
रिजु वालीय जंभी गाम, वीरह जिन केवल ठांम ॥७७।

इम यात्र करी निरदंभ, तलहृढीइ पारणारंभ ।
संघ भगति करि भारज तोडइ, साहा रूपि गजी विग जोडइ ।७८॥

तिहां थी हवि कीध पयाणु, वाटइं वहइं चाप वर वाणु ।
श्रेणिक सुत कोणीवासो । जिहां वीर रह्या चउमासी ॥७९॥

सद्दहला जे गुरु वयणे, ते नयरी दीठी नयणे ।
वीर श्रमणोपासक रहता, ते तुंगीआ नगरी पुहता ॥८०॥

राजगृह कोसे साते, तिहां थी पहुता परभाते ।
जिहां जनम्या सुव्रत सामी, जिहां पर्वत पांचइ नामी ॥८१॥

वैभार विपुल गिरि उदय, गिरि स्वर्ण रतन गिरि उदय ।
वैभार ऊपरि निसिदीस, घर वसतां सहस छत्रीस ॥८२॥

गिरि पांचे दउढ सउ चैत्य, त्रिणि सिं त्रिण बिंब समेत ।
सीधा गणधर इह इग्यार, वांदुहुं तस पद आकार ॥८३॥

साह शालिभद्र इहां धन्नउ, हुआ धर्म कीउ इक मन्नउ ।
अणसण सिलि काउसग लो वीर, रहिआ सालउ बहिनेवी ॥८४॥

मुनिमेघ अभय कयवन्नउ, बीजउ कांकदी धन्नउ ।
एणे कीधूं संथारुं, राख्य उतवि दुखउ धारउ ॥८५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हांसापुर ग्रेहणां कुग्रो, ते ऊपरि गोमट हुग्रो।
एक पत्थरि वीर पोसाल, लांबी छइ हाथ छयाल ॥८६॥

ऊन्हां जल चउदै कुंड, सोभि जिहां धान्य ग्रखण्ड।
पांचि गिरि ए सिद्धिखेत्र, निरखंतो हुई निरमल नेत्र ॥८७॥

बाहिरि नालंदउ पाडउं, सुणयो तस पुण्य पवाडउ।
वीर चउद रहिया चतुमास, हिवडां वडगांम निवास ॥८८॥

घर वसतां श्रेणिक वारइ, साढी कुल कोडी बारइ।
बहु देहरइ इक सउ प्रतिमा, नबि लहिइ बौद्धनी गणिमा ॥८९॥

गोतम गुरु पगलां ठांणि, प्रगटी मुनि पात्रां खांणि।
तस पासि वाणिज्य गांम, ग्राणंदो पासक ठांम ॥९०॥

दीठां ते तीरथ कहिग्रां, न गिणूं जे खूंणि रहिग्रां।
हरख्या बहु तीरथ ग्रटणइ, ग्राव्या चउमासइ पटणइ ॥९१॥

तप गच्छपति शत शाखा पसरउ, परंपरा परिवार।
धरिघल परिमल पुहुविं, प्रगटचा पारिजात जिम सार ॥९२॥

विजयसेन सूरि प्रगट पटोधर, विजय देव सूरीस।
सहज सागर गुरु सीस सुहंकर पूगी सयल जगीस ॥९३॥

ढाल मल्हार देशी—

खांति खरी खत्रीकुंड नी, जांणी जनम कल्याण हो वीरजी।
चैत्र सुकल तिथि तेरसइं, जात्र चडी सुप्रमांण हो वीरजी खां. ॥९४॥

मास वसंति वनि विस्तरचा, मलया चलना वाय हो वीरजी।
वन राजी फूली भली, परिमल पुहुवइ न माय हो वीरजी खां. ॥९५॥

मउरिग्रा मचकुंद मोगरा, मरुग्रा मंजरिवंत हो वीरजी।
बउलसिरि वलि पाडला, भृंगयुगल विलसंत हो वीरजी खा. ॥९६॥

कुसुम कली मनि मोकली, बिमणा मरुग्रा दमणा नी जोडि हो वीरजी।
तलहटीइ दोइ देहरे, पूज्या जिन मन कोडि हो वीरजी खां. ॥९७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धारथ घरि गिरि सिरिइं, तिहां वांदुं एक बिंब हो वीरजी ।
त्रिहुं कोसे ब्रह्मकुंड छि, वीरह मूल कुंटुंब हो वीरजी खां. ॥९८॥

पूजी अ गिरि थकी ऊतर्या, गांमि कुंडरीअ जाअ हो वीरजी ।
प्रथम परीसही उतरि, वांद्या वीरना पाय हो वीरजी खा. ॥९९॥

सुविधि जनम भूमी वांदीइ, कांकंदी कोस सात हो वीरजी ।
कोस छवीस विहार थी, पूरव दिसि दोय सात हो वी. खां. ॥१००॥

पटणा थी दिशि पूरवइ, सठि कोसे पुरिचंपा हो वी. ।
कल्याणक वासु पूज्य नां, पांच नमो जी आप हो वी. खां. ॥१०१॥

दिवानउ इक देवसी, कीधी तेणि उपाधि हो वी. ।
श्वेतांबर थिति ऊथपी, थापी विक्यट व्याधि हो वी. खां. ॥१०२॥

पणपरपुत्रे सपुत्र को, न हुओ एह संभाल हो वी. ।
जे नर तीरथ ऊथपीइ, तेह्नइ मोटी गालि हो वी. खां. ॥१०३॥

चांप वराडीअ जिण कही, गंग वहइ तस हेठि हो वी. ।
सतीअ सुभद्रा इहां हुई, हुओ सुदर्शन सेठि हो वी. खां. ॥१०४॥

हाजीपुर उत्तर दिशि, कोस वडी च्यालीस हो वीरजी ।
मिहिला मल्लि नमीसरु, जनम्या दोयज गदीस हो वी. खां. ॥१०५॥

प्रभु पग आगि लोटी गणां, लीधां सीधां छि कांम हो वी. ।
लोकि कहिए सुलक्खणी, सीता पीहर ठांम हो वी. खां ॥१०६॥

पट्टणा थी दक्षिण गया, मारगि कोस पंचास हो वी. ।
शीतल जनम महो लही, भद्दिलपुरि भरि आस हो वी. खां. ॥१०७॥

सुलसा सुणिनि संदेसडउ, कहि अंबड जिनवांणि हो वी. ।
कहांन सहोदर इणिपुरी, चांदेला सिहि नाणि हो वी. खां. ॥१०८॥

ढाल मधुकर धन्यासी—

मधुकर मोह्यामाल, परिमल बहुल उजास ॥मधुकर॥
मुज मन मोह्यउं इणि गिरि, जांणूं कीजि वास ॥मधुकर॥१०९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूख यात्रा मइं करी, संभारि परिवार ।।मधुकर।।
दिज्यो दरिसरा आंपरगुं, वलि मुज वीजी वार ।मधुकर।पूर।।११०।।

आंकणी—

मांनि निहोरउ माहरउ, करि मुज पांख नुं दांन ।।मधुकर।।
पांखवली ऊडी मिलू, इहां थी करस्यूं ध्यांन ।।मधु.।।१११।।

भलि ए मानव भव लह्यउ, धर्माधर्म विचार ।।मधु.।।
तीरथ यात्रा म्हि करी, (पाठांतरं) भेटी तीरथ भूमिका,
जनम लगी अविसार ।।मधुकर।।११२।।

घरनइं सिद्धि सवरणा हुआ, कासी थी कोस साव्ठिव ।।म.।।
अडक अयोध्या, आवीया, जे वासी बड काठि ।।म. पू.।।११३।।

पांच तीर्थंकर जनमीया, मूल अयोध्या दूरि ।।म.।।
जांरगी थित वापी इहां, इम बोलि बहू सूरि ।।म. पू.।।११४।।

बहुल कतूहल लोकनां, रांम घररिग धीज कुंड ।।म.।।
हरिचंदइ दीधूं इहां, हरिरगी हत्यादंड ।।म. पू.।।११५।।

सत कोसे सरजू तटइं, धरम जिरगेसर जनम ।।म.।।
रंगिरुणाही प्रणमीइं, भाजि भव भय भरम ।।म. पू.।।११६।।

देखूं दरिआवाद थी, दुर्ग दिशि कोस त्रीस ।।म.।।
सावत्या संभारिइं, संभव जनम जगीस ।।म. पू.।।११७।।

खंदक मुनी पीलह्या इहाँ, तिहां ऊगि विस जाति ।।म.।।
ऊगि किरिआतुं कडू, दंडक वन अवदाति ।।म. पू.।।११८।।

पिटि आरीपुर कंपिला, विमल जनम वंदेसि ।।म.।।
चुलरगी चरित संभाल हो, ब्रह्मदत्त परवेसि ।।म. पू.११९।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केसर वनराइ संजती, गई भालि गुरु पासि ॥म.॥
गंगा तट व्रत ऊचरि, द्रूपदी पीहर वासि ॥म. पू.॥१२०॥

सुर पूजइं सूरी पुरि, सामल वरणउ नेमि ॥म.॥
चंद्र प्रभ चंदन वाडी मां, रपडी राखूं प्रेम ॥म. पू.॥१२१॥

हथिणाउरि हरषी हिऊं, शांति कुंथु अर जनम ॥म.॥
आगरा थी दिशि ऊर्तारि, दउ ढसउ के मरम ।म. पू.॥१२२॥

पांडव पांच इहां हुआ, पांच हुआ चक्रवर्ति ॥म.॥
पांच नमुं थुण (अ) थापनां, पांच नमूं जिन मूर्ति ॥म. पू.॥१२३॥

अहिछतइ उत्तम नमइं, मथुरागढ ग्वालेर ॥म.॥
उजल गिरि विमला चलू, दिल्ली जैसलमेरु ॥म. पू.॥१२४॥

चंद्र प्रभ चिंता हरी, मालपुरी मन लाडि ॥म.॥
सुख साखी संखेसर, थंभण बंभण वाडि ॥म. पू.॥१२५॥

राणिगपुर रुलिआमणं, वर दीई वरकांण ॥म.॥
आबू आरासणि नमूं, फल विधि सफल मंडाण ॥म. पू.॥१२६॥

ते म्हइं तीरथ सांकल्या, नयणि जिहाल्यां जेह ॥म.॥
महि अलि अवरि अनेक छे, नमो नमो मुज तेह ॥म. पू.॥१२७॥

तीरथ सेवा जु फलि, तउ याचुं जगदीस ॥म.॥
सुलह बोही तउ हुं हुओ, रमज्यो तुम्ह पाय ईस ॥म. पू.॥१२८॥

विनय करी करुं वंदना, हुज्यो हिआए देव ।म.॥
सुहाए खमाए जिनतणी, निस्सेयसाए सेव ॥म. पू.॥१२९॥

अणुगामी फल ए हुज्यो, जनमि जनमि उपगार ॥म.॥
तीरथ माल सफली फलउ, शतशाखा परिवार ।म. पू.॥१३०॥

इति तीर्थमाला अति रसाला पूर्व उत्तर वर्णवी ।
समकित वेली सुणि सहेली सफल फली नव पल्लवी ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ापगच्छ राजा बहु दिवाजा, विजयसेन सूरीसरो।
ासपट्टि पूर श्रीसूरि सूरश्रो विजयदेव यतीसरो ॥१३१॥

ास गच्छि राजि भवि निवाजि वाचक विद्या सागरो।
ास सीस पंडित सुगुण मंडित सहजसागर गणिवरो॥

ीसासउ चउवीस जिनवर कल्याणक यात्रा करी।
ास सोस लेसइं पुर्व देसइं थुई भणी बहु सुखकरी ॥१३२॥

इति संमेत शिखर तीर्थमाला स्तोत्र संपूर्णम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जॉब प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्मपुरी, अजमेर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org